समय के पंख

कहानियाँ



कोन्सतान्तिन पाउस्तोव्स्की

कोन्सतान्तीन पाउस्तोवस्की की कहानियाँ

समय के पंख

यह संकलन परिकल्पना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाया जा रहा है। हालांकि अभी ये स्टॉक में नहीं है पर आप जनचेतना द्वारा वितरित किया जा रहा अन्य प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य दिये गये अमेजन लिंक से खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://goo.gl/bxmZR5

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है।

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविताएं, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ में
- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- हर रविवार किसी महत्वपूर्ण पुस्तक की पीडीएफ

मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए इस लिंक का इस्तेमाल करें

www.mazdoorbigul.net/whatsapp

जुड़ने में समस्या आने पर अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें – 9892808704

वैकल्पिक नम्बर : 9619039793

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul



समय के पंख

कहानियाँ

समय के पंख

कहानियाँ

कोन्सतान्तीन पाउस्तोवस्की

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

मूल्य / रु. 30.00 (पेपर बैक)

प्रथम संस्करण / **जनवरी, 2006**

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ-226 020 द्वारा प्रकाशित
क्रिएटिव प्रिन्टर्स 628/S-28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण-परिकल्पना एवं संयोजन / **रामबाबू**

SAMAY KE PANKH *by : **Kostantin Paustovosky***

विषय-सूची

मेरे लिए मेरे देश के लोगों और उनके भविष्य से अधिक प्यारी कोई चीज़ नहीं। मैं अद्भुत रूसी भाषा और उस प्रकृति को बेहद प्यार करता हूँ जो कभी हृदय को अपनी शक्ति या उदासी से, कभी शान्ति या खुशी से स्पन्दित करती है। साल दर साल गुज़र जाने पर ही आप इस प्यार की शक्ति को अनुभव करने और यह पश्चाताप करने लगते हैं कि भविष्य में आपके पास बहुत थोड़ा समय बाकी रह गया है।

- 'वनों की कहानी'

अक्टूबर की एक रात

लिखने का काम मैं नगर की अपेक्षा गाँव में सदा अधिक आसानी से कर पाता हूँ। वहाँ छोटे-से लैम्प की फड़फड़ाती बत्ती, बाहर बाग में साँय-साँय करती हुई तेज हवा और कभी-कभी पाई जानेवाली वह पूर्ण निस्तब्धता, जब धरती मानो विश्राम करती हुई और गतिहीन होकर शून्य में लटकती सी लगती है, हर चीज़ ही हमें अपने विचारों को एकाग्र करने में सहायता देती है।

और बस इसीलिए 1945 की पतझड़ के अन्त में मैं रियाज़ान से कुछ दूर, एक गाँव की ओर चल दिया। यहाँ एक पुराना ग्राम-गृह था जिसके साथ झाड़-झंखाड़ से भरा बाग़ था। यहाँ रियाज़ान की एक भूतपूर्व पुस्तकालाध्यक्ष वसिलीसा इओनोव्ना रहती थी और साहित्य-रचना करने के लिए मैं कई बार उसके पास ठहर चुका था। हर बार वहाँ जाने पर, मैंने उद्यान को अधिकाधिक बढ़ते, घर को अधिक पुराना होते और गृहस्वामिनी को पहले की अपेक्षा बुढ़ाते पाया था।

मैं अन्तिम जलपोत में मास्को से चला। जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी, दूर-दूर तक कत्थई तट फैले हुए थे और पोत द्वारा गतिमान की हुई सुरमई लहरें बीच-बीच में उन्हें स्पर्श कर रही थीं। रात भर सैलून में लाल बत्ती जलती रही थी।

मुझे ऐसा लगा कि मानो मैं अकेला ही सफर कर रहा हूँ, क्योंकि अन्य मुसाफिर अपने गर्म कक्षों से बाहर निकलने का बहुत कम साहस करते थे। फौजी इंजीनियरों के दल का एक कप्तान इसका अपवाद था। उसकी आँखें सजीव थीं और चेहरे पर अंकित थीं विभिन्न ऋतुओं के प्रभावों की छाप! वह तटों को बड़े चाव से देखता हुआ डेक पर इधर से उधर लँगड़ाता हुआ घूम रहा था। तट शिशिर ऋतु की प्रतीक्षा में थे। वृक्ष निपत्ते थे। घास ज़मीन के साथ लग चुकी थी और मोटे-मोटे डण्ठल काले पड़ चुके थे। तट के साथ-साथ बसे गाँवों की चिमनियों से थोड़ा श्वेत धुआँ निकल रहा था। नदी भी जाड़े की प्रतीक्षा में थी। लगभग सभी जगह उतरने के स्थानों को दूर खाड़ियों में पहुँचा दिया गया था तथा नदी-दीप हटा दिये गये थे। चाँद की हल्की-हल्की चाँदनी के सहारे ही हमारा जलपोत अपना सफर जारी रख पा रहा था।

मैंने उस कप्तान से बातचीत शुरू की। हम दोनों को ही यह जानकर सन्तोष हुआ कि हमारी मंजिल जबोर्ये थी। जबोर्ये पहुँचने के लिए हमें नोवोस्योल्की उतरकर तट से बँधी नाव लेकर ओका नदी को पार करना और फिर चरागाहों से गुजरना था। हमारा जलपोत उसी रात नोवोस्योल्की पहुँचने वाला था।

''वास्तव में, मैं जबोर्ये नहीं, बल्कि कुछ आगे, वनरक्षक के घर जा रहा हूँ,'' उसने समझाया। ''किन्तु जबोर्ये तक हम साथ-साथ चलेंगे। यद्यपि मैं लाम पर हो आया हूँ और अपने वक़्त में बहुत कुछ देख चुका हूँ तथापि मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि उन दूर के जंगलों में से अकेले ही नहीं गुजरना पड़ेगा। युद्ध के पहले मैं एक वनरक्षक था। अब सेना से विघटित होकर मैं अपने पुराने स्थान पर वापस जा रहा हूँ। मैं वन-विशेषज्ञ हूँ और मेरे लिए वनों में काम करने से अधिक खुशी की बात क्या हो सकती है! आप मुझसे वहाँ आकर मिलिएगा। मैं आपको ऐसी जगहें दिखाऊँगा कि आप दंग रह जायेंगे। लाम पर मैं लगभग हर रात उन्हें सपनों में देखा करता था।''

वह हँस दिया। हँसते हुए उम्र की छाप फीकी पड़ गयी और वह जवान प्रतीत हुआ।

जलपोत, काफ़ी रात गये नोवोस्योल्की पहुँचा। हाथ में लैम्प लेकर खड़े हुए एक चौकीदार के अतिरिक्त घाट बिल्कुल सूना था। केवल मुझे और जूयेव को ही उतरना था। ज्यों ही हम किरमिच के थैलों सहित गीले घाट पर उतरे, जलपोत हमें भाप के बादल में लपेटता हुआ आगे चल दिया। चौकीदार अपना लैम्प लिये हुए उसी क्षण चला गया और हम अकेले रह गये।

''आओ, जरा-सी देर सुस्ता लें,'' जूयेव ने कहा, ''उन लट्ठों पर बैठकर दो-चार कश लगायें और तय करें कि आगे हमें क्या करना है।''

यह बात स्पष्ट थी कि वह जल्दी करना नहीं चाहता था। उसका बातचीत का अन्दाज़ इसका एक प्रमाण था। वह नदी की ओर से आनेवाली प्यारी गन्ध को अपनी साँसों में समेटता जा रहा था। मोड़ के दूसरी ओर से जब जलपोत का भोंपू रात के सन्नाटे को चीरता हुआ गूँजा तो वह हँस दिया। ये बातें भी इस बात का सबूत थीं कि वह इत्मीनान से अपनी मंजिल की ओर बढ़ना चाहता है। अपनी जानी-पहचानी, प्रिय और मनपसन्द जगह पर पुनः लौटकर वह बहुत ही खुश था।

हमने अपनी सिगरेटें समाप्त कीं और खड़े किनारे से नदी-दीप रक्षक सोफरोन के घर की ओर ऊपर को चढ़े। मैंने खिड़की पर दस्तक दी। सोफरोन ने इतनी जल्दी उत्तर दिया जैसे कि वह जागकर हमारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। उसने मुझे पहचाना, मेरा अभिवादन किया और कहा :

''पानी चढ़ता जा रहा है। कल से दो मीटर चढ़ चुका है। वहाँ ऊपर भारी वर्षा हुई होगी। क्या आपने इस सम्बन्ध में कुछ सुना है?''

''नही, मैंने तो कुछ नहीं सुना।''

सोफरोन ने जम्हाई ली। ''क्या किया जाये पतझड़ के दिन हैं! खैर, आइये चलें।''

ओका नदी दिन की तुलना में रात के समय अधिक चौड़ी दिखायी दे रही थी। नदी का पानी बहुत तेजी से बह रहा था। बीच-बीच में कोई मछली छपाक की आवाज़

पैदा करती हुई छोटी-छोटी लहरियाँ बना जाती थीं। ये लहरियाँ धीमी रोशनी में पानी की तेज धारा में विलीन हो जातीं और इस प्रकार उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता।

दूसरे तट पर हम नीचे उतरे और मुश्किल से दिखायी देने वाली उस पगडण्डी पर चल दिये जो चारे की घास के खेतों की ओर जानेवाली सड़क से जा मिलती थी। हवा सूखने वाली घास और चिनार के पत्तों की गन्ध से बोझिल थी। सभी ओर चुप्पी थी। चाँद छिप रहा था और उसकी चाँदनी फीकी पड़ गयी थी।

हमें चार किलोमीटर चौड़े एक हरे भरे द्वीप को लाँघना था। फिर एक पुराने पुल से गुजरकर ओका की बालूपूरित शाखा को पार करना था। वहाँ रेत के टीलों के पीछे जबोर्ये था।

''जानते हैं वे सभी भूली-बिसरी स्मृतियाँ लौट रही हैं,'' कप्तान ने भावावेश में कहा। ''मैं कुछ भी तो नहीं भूला हूँ। वे उधर दिखायी देने वाले वृक्षों के झुण्ड प्रोंरवा नदी के समीपवर्ती विल्लो के वृक्ष हैं, क्यों वही हैं न? देखिये तो, सेल्यान झील पर कितनी घनी धुन्ध छाई हुई है, और एक भी पक्षी की आवाज़ सुनाई नहीं देती। मुझे आने में देर हो गयी, बेशक-वे जा चुके हैं। किन्तु हवा कैसी मनमोहक हैं! मानो हरियाली से छन-छनकर आ रही है। मैंने अन्य किसी जगह ऐसी हवा अनुभव नहीं की। ज़रा मुर्ग़ों की बाँग तो सुनो! यह आवाज़ त्रेबूतिनों से आ रही है। क्या आवाज़ है! हम कुछ किलोमीटर दूर निकल आये हैं, फिर भी उनकी आवाज़ सुनाई दे रही है।''

जैसे-जैसे हम आगे चलते गये, बातचीत का सिलसिला कम होता गया और अन्त में हम दोनों चुप हो गये। रात्रि का विषाद ऊँघते पानी, सूखी तथा काली पड़ी हुई घास के ढेरों और झाड़ियों से लिपटा हुआ था। रात्रि के इस मौन ने हम पर भी अपना जादू कर दिया।

हमारे दाई ओर एक झील थी। उसकी सतह हरियाली से आच्छादित थी। झील के पानी में कुछ-कुछ चमक थी। जूयेव लँगड़ा होने के कारण अधिक न चल सकता था। हम हवा से गिराये गये विल्लो के एक वृक्ष पर आराम करने के लिए बैठ गये। मैं इस वृक्ष से सुपरिचित था-वह कई वर्षों से यहीं पड़ा हुआ था और अब जंगली गुलाब की झाड़ियों में घिरकर लगभग छिप-सा गया था।

''ज़िन्दगी भी एक अज़ीब चीज़ है,'' जूयेव ने आह भरकर कहा। ''किन्तु कुल मिलाकर बुरी नहीं, सचमुच बुरी नहीं। युद्ध के बाद तो विशेष रूप से मुझे इसकी चेतना हुई है। यह एक अज़ीब एहसास है। आप अगर चाहें तो मुझपर हँस सकते हैं, किन्तु मैं अपना शेष जीवन देवदारू का एक वृक्ष उगाने में ही व्यतीत कर सकता हूँ। मैं ठीक कह रहा हूँ। क्या पागलपन है, ठीक है न?''

''पागलपन कैसे, बिल्कुल नहीं,'' मैंने कहा। ''क्या आपका परिवार है?''

''नहीं, मैं अविवाहित हूँ।''

हम चलते रहे। चाँद, ओका नदी के ऊँचे किनारे के पीछे छिप चुका था। किन्तु अभी सुबह होने में काफ़ी देर थी और पूरब दिशा भी बाकी सभी दिशाओं की भाँति ही अंधकारमय थी। चलते जाना कठिन हो रहा था।

''एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही-यहाँ के लोगों ने रात के समय घोड़े चराना क्यों बन्द कर दिया? पहले तो वे प्रथम हिमपात होने तक ऐसा किया करते थे। और अब, देखो न, चरागाह में एक भी घोड़ा नहीं है।''

मैंने भी यह देखा था, मगर उस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया था। वास्तव में द्वीप इतना सूना था कि सम्भवतः वहाँ पर हम ही दो जीवित प्राणी थे।

तब मैंने पानी से भरे एक चौड़े भू-भाग की धुँधली रेखा देखी। यह बिल्कुल नई चीज़ थी। मैंने इसे गौर से देखा तो मेरे हृदय की गति बन्द हो गयी-क्या ओका के पुराने मार्ग में ऐसी भारी बाढ़ आ चुकी है?

''हम बहुत शीघ्र पुल पर पहुँच जायेंगे,'' जूयेव ने खुश होकर कहा, ''और वह जबोर्ये से बहुत ही थोड़ी दूर है। समझिये कि हम पहुँच ही चुके हैं।''

हम नदी के पुराने पाट पर पहुँचे। सड़क पूरी तरह स्याह रँगे पानी में डूबी हुई थी। पानी तेजी से हमारे पैरों के ऊपर से गुजरता हुआ नीचे-नीचे किनारों को काट रहा था। किनारे कमजोर पड़ चुके थे। इसलिए कहीं-कहीं से मिट्टी के टुकड़े टूटकर पानी में गिर जाते थे। वे 'छपक' की आवाज़ पैदा करते थे।

''वह पुल कहाँ गया?'' जूयेव ने चिन्तित होते हुए पूछा।

पुल वहाँ नहीं था। या तो वह बह चुका था अथवा डेढ़-दो मीटर गहरे पानी में डूबा हुआ था। जूयेव ने अपनी टार्च जलाई। गंदली लहरों की सतह पर केवल कुछ झुकी हुई झाड़ियाँ ही दिखायी दीं। बस, वहाँ केवल यही कुछ था।

''मैं कहता हूँ,'' जूयेव ने घबराकर कहा, ''हम फँस गये हैं। यही कारण है कि चरागाह इतने सूने हैं। निश्चय ही हम यहाँ अकेले हैं। आइये तय करें कि अब हमें क्या करना है।''

वह चुप हो गया। ''अगर मदद के लिए किसी को पुकारा जाये तो कैसा रहे?'' उसने कुछ रुककर सुझाव दिया।

किन्तु इससे कुछ भी लाभ होने की सम्भावना नहीं थी। जबोर्ये हमारी आवाज़ की सीमा के बहुत परे था। इसके अतिरिक्त, मैं यह भी जानता था कि वहाँ उनके पास नाव भी नहीं है। तट पर बँधी रहने वाली नाव वहाँ से लगभग दो किलोमीटर दूर नदी की ढाल की ओर, पूस्तिन नामक जंगल के पास थी।

''हमें तटीय नाव तक पैदल चलना होगा,'' मैंने कहा। ''यदि केवल...''

''यदि केवल क्या?''

''ओह कुछ नहीं। मैं रास्ता जानता हूँ।''

मैं कहना चाहता था, ''यदि केवल अब भी वह चालू हो,'' किन्तु मैंने कहा नहीं।

बहुत सम्भव था कि तटीय नाव वहाँ से हटा ली गयी हो, क्योंकि बाढ़ की लपेट में आये हुए चरागाहों में अब एक भी प्राणी नहीं था। तटीय नाव का रक्षक वसीली समझदार तथा स्वाभिमानी व्यक्ति था, वह भला नदी पर अपना समय क्यों नष्ट करने लगा था?

''तो अब हमें चलना चाहिये,'' जूयेव ने सहमति प्रकट की। ''कैसा घना अन्धकार है!''

उसने फिर से अपनी टार्च जलाई। हाय राम! पानी झाड़ियों को तो निगल भी चुका था।

''यह मजाक नहीं है,'' वह बड़बड़ाया। ''हमें जल्दी करनी चाहिये।''

हम चलते रहे। सहसा तेज हवा चलने लगी। वह तो मानो बौखलायी हुई थी और अंधकार को चीरती हुई बाजरे के समान बर्फ़-कण बिखरा रही थी। टूटकर गिरते हुए किनारों द्वारा पैदा की जाने वाली 'छपक' की आवाज़ का अन्तर अब पहले से कम हो गया था। हम छोटे-छोटे टीलों तथा सूखी घास पर ठोकरें खाते आगे बढ़ते गये। घुटने-घुटने पानी में चलते हुए हमने दो खड्ड लाँघे। ये बहुधा बिल्कुल सूखे रहते थे।

''खड्ड तो भर भी चुके हैं,'' जूयेव ने कहा ''मामला गड़बड़ है। किन्तु एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि पानी इतनी तेजी से क्यों चढ़ता जा रहा है?''

वास्तव में ही यह समझना मुश्किल था। कारण कि शरद ऋतु की भारी बरसातों में पानी कभी इतनी तेजी से नहीं चढ़ता था और न ही द्वीप में बाढ़ आती थी।

''आपने गौर किया, यहाँ एक भी वृक्ष नहीं है,'' जूयेव ने कहा। ''झाड़ियों के सिवा कुछ भी नहीं।''

अत्यधिक रौंदा हुआ मार्ग नाव की ओर जाता था। हमने पाँव के नीचे के कीचड़ तथा गोबर की गन्ध से इसे पहचान लिया था। नदी के पुराने पाट के दूसरी ओर देवदारू वृक्षों का जंगल जोरों से साँय-साँय कर रहा था।

सर्दी तथा अंधकार बढ़ता जा रहा था। पानी शाँ-शाँ कर रहा था। जूयेव ने फिर अपनी टार्च जलाई। पानी किनारे के बराबर आ चुका था और बड़ी-बड़ी लहरे चरागाहों को अपनी लपेट में ले रही थीं।

''घाट पर कोई है?'' जूयेव चिल्लाया और उत्तर सुनने की आशा में चुप हो गया। ''कोई है?''

कोई जवाब न मिला। केवल प्रतिध्वनि सुनाई दी।

हम गला फाड़-फाड़कर चिल्लाये, किन्तु सब व्यर्थ। बर्फ़ ने बरसात का रूप धारण कर लिया। हमारे ऊपर सभी ओर से बड़ी-बड़ी बूँदें पड़ने लगीं।

हम फिर चिल्लाये, किन्तु केवल वृक्षों की उदासी भरी साँय-साँय ही सुनाई दी।

''नाविक भी नहीं है,'' जूयेव ने नाराज होते हुए कहा। ''ठीक ही तो है, वह

अपनी एड़ियों को ठिठुराता हुआ यहाँ किसलिए बैठा रहे जबकि द्वीप में बाढ़ आ रही है और यहाँ एक भी प्राणी नहीं है, और न हो ही सकता है? क्या हिमाकत है-चन्द ही कदमों की दूरी पर घर है...''

मैंने समझ लिया कि अब तो संयोगवश ही हमारा बचाव हो सकता है-या तो पानी का चढ़ना बन्द हो जाये अथवा कोई नाव अकस्मात इधर आ निकले। सबसे ज्यादा दहशत पैदा करनेवाली बात थी-पानी का तेजी से बढ़ते जाना। हम इसका कारण समझने में असमर्थ थे। एक घण्टा पहले, आधी रात को आनेवाली इस भारी विपत्ति का सान-गुमान भी नहीं था। हम तो खुद ही ठीक मौत के मुँह में आ पहुँचे थे।

''हमें किनारे के साथ-साथ चलना चाहिये,'' मैंने सुझाव दिया। ''हो सकता है, कहीं नाव मिल जाये।''

हम पानी से भरे गड्ढों से बचते हुए किनारे-किनारे चलने लगे। जूयेव ने अपनी टार्च जला रखी थी, किन्तु जब उसकी रोशनी धीमी पड़ने लगी तो उसने उसे बुझा दिया ताकि किसी आकस्मिक आवश्यकता के समय के लिए टार्च में कुछ दम बाकी रहे।

किसी काली तथा मुलायम वस्तु से मैंने ठोकर खाई। वह भूसे का एक छोटा-सा ढेर था। जूयेव ने दियासलाई निकालकर उसे आग लगा दी और वह ढेर पीली तथा भयानक ज्वालाओं में भभक उठा। उन शोलों के प्रकाश में बाढ़ का गंदला पानी, जहाँ तक दृष्टि काम कर सकती थी पानी में डूबे चरागाह और दूसरी ओर खड़ा देवदार का जंगल, सभी वस्तुएँ अंधकार से मुक्त होकर साफ़-साफ़ दिखायी देने लगी थीं। वृक्षों की चोटियाँ नीचे-ऊपर लहरा और उदासी से साँय-साँय कर रही थीं।

हम टुकुर-टुकुर शोलों को देख रहे थे। हमारे मन में तरह-तरह के विचारों की भीड़ लगी थी।

सबसे पहले तो मुझे इस बात का अफसोस हुआ कि मैं जो कुछ लिखना चाहता था उसका दसवाँ भाग भी नहीं लिख पाया था। फिर यह ख़्याल आया कि अपनी मूर्खतावश इस तरह मरना कितनी बड़ी हिमाकत है। वह भी तब जबकि जीवन में ऐसे अनेक दिनों की आशा की जा सकती है जो उदासी भरे और शरद्‌कालीन होते हुए भी ताजगी से भरपूर और सुखद होंगे, जबकि पहली बर्फ़ न होते हुए भी हवा, जल, वृक्षों और गोभी के पत्तों तक में उसकी अनुभूति होगी।

जूयेव भी कुछ इसी तरह सोचता होगा। उसने अपने ग्रेटकोट की जेब से सिगरेट का मुड़ा-मुड़ाया पैकेट निकाला और मेरी ओर बढ़ाया। हमने सुलगते हुए एक तिनके से सिगरेट जलायें।

''यह आग तो बहुत शीघ्र ही बुझनेवाली है,'' जूयेव ने धीमे स्वर में कहा। ''पानी हमारे पैरों तक पहुँच गया है।''

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि कान पानी की आवाज़ की ओर लगे हुए थे। लहरों की छलछलाहट तथा जंगली की साँय-साँय को चीरती हुई पानी की मन्द तथा छप-छप की संक्षिप्त आवाज़ धीरे-धीरे नजदीक आती जाती थी। मैंने नदी की ओर मुँह किया और गला फाड़कर चिल्लाया :

''अरे ओ नाविक! इस ओर!''

''नाव आ रही है!'' छोकरे की-सी आवाज़ में किसी ने नदी की ओर से जवाब दिया।

जूयेव ने भूसे के ढेर को हिलाकर जल्दी से साफ़ किया। एक शोला भड़का और हजारों चिंगारियाँ उस अंधकार में चमक उठीं। जूयेव धीरे से हँसा।

''चप्पू,'' वह कहता गया। ''चप्पू छपछपा रहे हैं। कभी कोई इस तरह घर के पास भी खोया है!''

''नाव आ रही है,'' इस आवाज़ ने मुझे भी अत्यधिक रोमांचित कर दिया था। अंधकार को बींधकर सुनाई देनेवाली इस आवाज़ ने मेरे मन में भ्रातृत्व और सहायता के उस पुराने रिवाज की याद ताजा कर दी जो हमारी जनता की अमर विशेषता है।

''हल्लो, रेत पर नीचे की ओर आ जाओ!'' नदी की ओर से आती हुई आवाज़ गूँज गयी और केवल तभी मैंने यह अनुभव किया कि वह नारी का स्वर था।

हम जल्दी से नीचे, किनारे की ओर चल दिये। नौका अंधकार की गोद से निकलकर अग्नि की मद्धिम रोशनी में तैरती दिखायी दी और फिर तट से आ लगी।

''ज़रा रुको,'' नारी ने कहा। ''मैं नाव का पानी निकाल दूँ।''

वह तट पर उतर आयी और उसने नौका को आगे की ओर खींच लिया। मैं उसका मुख नहीं देख सका। वह रूई की जाकेट और घुटनों तक के बूट पहने थी और सिर पर एक गर्म चादर ओढ़े थी।

''तुम लोग यहाँ कैसे आ फँसे?'' उसने हमारी ओर देखे बिना तुनककर पूछा और नाव से पानी निकालने लगी।

उसने चुपचाप और मानो बिना कोई दिलचस्पी जाहिर किये, हमारी कहानी सुनी। इसके बाद पहले की तरह कड़ाई से बोली :

''मैं समझ नहीं पाती कि नदी-दीप रक्षक ने तुम्हें इसकी सूचना क्यों नहीं दी। आज रात को बाँध के फाटक खोल दिये गये हैं। जाड़े से पहले ऐसा ही किया जाता है। सुबह होने तक सारा द्वीप जलमग्न हो जायेगा।''

''और आप रात के समय कैसे इस जंगल में आ फँसी है, वनदेवी?'' जूयेव ने मजाक करते हुए पूछा।

''मैं पूस्तिन से जबोर्ये की ओर अपने काम पर जा रही थी,' उसने अनिच्छा से उत्तर दिया। ''जब मैंने द्वीप में आग और कुछ लोग देखें तो यह अनुमान लगाया कि कहीं कुछ गड़बड़ अवश्य हैं। नाविक पिछले दो दिन से यहाँ नहीं हैं-ऐसा करना

उचित भी है क्योंकि आजकल यहाँ नहीं हैं-ऐसा करना उचित भी है क्योंकि आजकल यहाँ उसके लिए कोई काम नहीं है। उसने अपने चप्पुओं को कहीं अलग से रख दिया था और उन्हें ढूँढने में मुझे काफ़ी समय लग गया। वे एक तम्बू में सूखी घास के नीचे पड़े थे।''

मैंने चप्पू सम्भाले, किन्तु मेरे बहुत जोर लगाकर चप्पू चलाने पर भी ऐसा लगता था कि नाव किनारे की ओर बढ़ने की बजाय, गंदले पानी, अंधकार और रात के साथ साथ किसी काले चौड़े गर्त की ओर खिंची चली जा रही है।

आखिरकार हम किनारे पर उतरे और रेत की ओर कदम बढ़ाने लगे। हम ऊपर की ओर जंगल में पहुँचे और सिगरेट के कश लगाने के लिए, वहाँ थोड़ी देर को रुके। वहाँ सड़ते हुए पत्तों की गन्ध के साथ-साथ उष्णता तथा निस्तब्धता थी। वृक्षों की चोटियों को जोर से सरसराती हुई हवा भयावह ध्वनि पैदा कर रही थी। भयानक रात और कुछ देर पहले के ख़तरे की स्मृति सजीव हो उठती थी। किन्तु अब वही रात अत्यधिक भली और सुन्दर लग रही थी। सिगरेट जलाने के लिए जलाई गयी दियासलाई की रोशनी में उस स्त्री का मुख मैत्रीपूर्ण और सुपरिचित लगा। उसकी भूरी आँखें हमें देखती हुई सकुचा रही थीं। और उसके भीगे हुए केश-कुण्डल गर्म चादर से बाहर झाँक रहे थे।

''अरे, यह क्या तुम हो, दाशा?'' जूयेव ने अचानक बहुत धीमे स्वर में पूछा।

''हाँ, इवान मत्वेयेविच,'' वह धीरे से हँसी। उसका हँसने का अन्दाज़ ऐसा था मानो अपने राज को केवल वही जानती हो। ''मैंने आपको फौरन पहचान लिया था, पर यह जाहिर नहीं होने दिया था। जबसे युद्ध समाप्त हुआ है हम आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमें विश्वास था कि आप आयेंगे।''

''कभी-कभी ऐसा भी होता है!'' जूयेव ने विस्मय के साथ कहा। ''मैं चार वर्ष तक मोर्चे पर रहा और कई बार तो घड़ी-पल का भी भरोसा नहीं होता था, और अब मेरी ज़िन्दगी दाशा ने बचाई है। वह मेरी सहायिका थी। दाशा ने मेरे साथ वनों में काम किया है। मैंने ही इसे वनों के सब राज बताये-समझाये थे। तब यह सींक-सलाई सी दुबली-पतली लड़की थी, पर अब तो लम्बी और सुन्दर हो गयी है। इसीलिए यह गुमसुम तथा संजीदा भी हो गयी है।''

''नहीं नहीं, ऐसा कुछ नहीं,'' दाशा ने कहा। ''यह केवल इसलिए कि बहुत अर्से बाद आपसे भेंट हुई है-और आप वसिलीसा इओनोव्ना के यहाँ आये हैं, न?'' जाहिर है कि उसने विषय बदलने के लिए मुझसे बात शुरू की थी।

मैंने हामी भरी और उन दोनों को भी कपड़े सुखाने, गर्माने और सुस्ताने के लिए उस आतिथ्यपूर्ण पुराने मकान में आमंत्रित किया।

रात के वक़्त हमारे इस तरह यकायक नमूदार होने पर वसिलीसा इओनोव्ना तनिक भी हैरान नहीं हुई। बुढ़ापे की जिस अवस्था को वह प्राप्त हो चुकी थी उसमें उसे

कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लगता था और प्रत्येक विषय का वह अपने ढंग से अर्थ लगाती थीं।

''शुक्र है भगवान का कि आप लोगों की जान बच गयी। सोफरोन बिल्कुल खरदिमाग आदमी है, मैं तो सदा यही कहती हूँ,'' उसने हमारी परेशानियों का विवरण सुनकर कहा। ''अज़ीब बात तो यह है कि आप लेखक होते हुए भी उसे पहली ही नज़र में न पहचान सके। ऐसा लगता है कि कभी-कभी लेखक भी भूल कर जाते हैं... खैर, मेरी प्यारी,' उसने दाशा की ओर मुड़ते हुए कहा, ''बधाई हो। मुझे खुशी है कि आखिर तुम्हारा इवान मत्वेयेविच लौट आया।''

शर्म से दाशा के गाल गुलाब हो उठे। उसने जल्दी से एक बाल्टी उठायी और दरवाज़ा खुला छोड़कर तेजी से बाहर भाग गयी।

''अरे, तुम कहाँ चल दीं?'' वसिलीसा इओनोव्ना चिल्लाई।

''समोवार के लिए कुछ पानी लाने जा रही हूँ,'' दरवाज़े के पीछे से जवाब सुनाई दिया।

''आजकल की लड़कियाँ जाने कैसे हो गयी हैं,'' वसिलीसा इओनोव्ना ने जूयेव की ओर जो कि व्यर्थ दियासलाई जलाने का यत्न कर रहा था, देखे बिना ही कहा।

''अकारण ही आवेश में आकर दौड़ने लगती हैं... किन्तु यह बहुत प्यारी लड़की है। दाशा मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी है।''

''मेरा भी ऐसा ख़्याल है,'' जूयेव ने आख़िर दियासलाई जला ही ली थी। ''बहुत ही कमाल की लड़की है।''

हाँ, दाशा ने बाल्टी कुएँ में गिरा दीं। मैं उस कुएँ से बाल्टियाँ निकालने का हुनर जानता था। मैंने एक लम्बा बाँस लिया और दाशा की सहायता से अपने काम में जुट गया। दाशा के हाथ उत्तेजना के कारण बर्फ़ जैसे ठण्डे पड़े हुए थे और वह बार-बार दुहरा रही थी :

''कैसी अज़ीब हैं न वसिलीसा इओनोव्ना! कैसी अज़ीब हैं!''

हवा ने बादलों को इधर-उधर बिखरा दिया था। सितारे अन्धकार की चादर में लिपटे उद्यान के ऊपर चमक रहे थे।

मैंने बाल्टी खोज निकाली और दाशा पानी पीने कि लिए झुकी। पानी से भीगे उसके दाँत अंधकार में चमके। ''अब मैं भीतर जाऊँ तो कैसे!''

''कोई बात नहीं, आइये चलें।''

हम भीतर गये। लैम्प जल रहे थे। मेजपोश बदला हुआ था। दीवार की ओर से तुर्गनेव हमें शान्त भाव से देख रहे थे। काले चौखटे में जड़ी हुई यह उनकी अनूठी तस्वीर थी, इस्पाती भूमि पर बारीक नक्काशी वाली। हमारी मेजबार को इस चित्र पर बहुत नाज था।

1946

तिलिस्मी फूल

पिछली गर्मी में बोरोवोये झील से अपने गाँव की ओर लौटते हुए मैं चीड़ के जंगल में एक साफ़ किये हुए भाग में से गुजरा। शुष्क ग्रीष्म की विभिन्न खुश्बुओं से भरपूर घास सभी ओर बहुतायत से उगी हुई थी। वृक्षों के बहुत पुराने ठूँठों के आस-पास तो यह अत्यधिक घनी थी। वृक्षों के यह पुराने ठूँठ इतने भुरभुरे हो चुके थे कि इन्हें चूर-चूर करने के लिए हल्की सी ठोकर ही पर्याप्त थी। ऐसा करने पर उनमें से अच्छी तरह से पिसी हुई काफ़ी के समान गहरे भूरे रंग के चूरे की बौछार सी होने लगती थी।

पंखदार चींटियाँ तथा मोटे-मोटे गोबरैले, इधर-उधर भागते फिर रहे थे। गोबरैलों पर फौजी बैण्ड बजानेवालों की वर्दी के समान धारियाँ नज़र आ रही थीं। इन्हें सही तौर पर ''नन्हे सिपाहियों'' की संज्ञा दी जाती है।

उसी समय एक आलसी, सुनहरी धारियों वाला काला भौरा एक ठूँठ के नीचे बने हुए सूराख में से रेंगता हुआ सा बाहर निकला और चक्कर काटते हुए वायुयान की भाँति इधर-उधर भनभनाने लगा। वह ठूँठ को ठोकर लगानेवाले राहगीर के माथे पर अपने डंक का वार करने का प्रयत्न कर रहा था।

आकाश में बादल लहरों की तरह लहरा रहे थे। वे इतने ठोस लग रहे थे मानो कपास मिश्रित ऊन के चमचमाते ढेर हों और यह कि उन पर लेटकर नीचे मैत्रीपूर्ण धरती के वनों, पगडण्डियों, गेहूँ की पकी फसलों, शान्त और चमचमाते पानी और चित्तेदार पशु-समूहों को निहारा जा सकता हो।

जंगल के छोर पर खुले मैदान में मुझे नीले रंग के कुछ फूल दिखायी दिये। ये फूल ऐसे पास-पास और उलझे हुए गुच्छों के रूप में उगे हुए थे कि गहरे नीले पानी के तालाबों का सा भ्रम होता था।

ये फूल मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। मैंने उनका एक बड़ा-सा गुच्छा तोड़ लिया। ये फूल ब्लूबेल के समान थे। अन्तर केवल इतना था कि ब्लूबेल का सिर सदा झुका रहता है जबकि इनका सिर ऊपर की ओर तना हुआ था। जब मैंने इन्हें हिलाया तो इनमें पके हुए बीज बज उठे।

यह मार्ग वन से खेतों की ओर जाता था। खेतों के ऊपर हवा में अदृश्य भरद्वाज पक्षियों का स्वर गूँज रहा था। ऐसा लगता था मानो वे गम्भीर तथा मधुर तारों पर, जिन्हें वे कभी पीछे की ओर खींचकर फिर आगे की ओर छोड़ते तथा गिरने से पहले

फिर पकड़ते थे, बेसिर पैर की धुनें बजा-बजाकर हवा में थरथरी और गूँज पैदा कर रहे हों।

उसी मार्ग पर दो ग्रामीण युवतियाँ मेरी ओर चली आ रही थीं। वे अवश्य ही काफ़ी लम्बा फासला तय करके आई होंगी क्योंकि उनके धूल भरे जूते, फीतों के सहारे उनके कन्धों से लटके हुए थे। वे चपर-चपर बतियाती और हँसी मजाक करती आ रही थीं। किन्तु ज्योंही उन्होंने मुझे देखा कि चुप हो गयी। उन्होंने अपने रुमाल के नीचे इधर-उधर बिखरे बालों को ढंग से सँवारा और शिष्टाचार के नाते चुप्पी साध ली।

जरा कल्पना कीजिये कि भूरी-भूरी आँखों वाली, साँवली और खुशमिजाज दो लड़कियों से ऐसे अचानक भेंट हो और आपको देखते ही वे एकदम गम्भीर हो जायें! क्या गुजरेगी तब आपके दिल पर! मगर इससे भी ज्यादा दिल जलानेवाली बात यह होती है कि आपके पास से गुजर जाने के बाद वे खिलखिलाकर हँस दें।

मैं बुरा मानने ही वाला था कि लड़कियाँ रुक गयीं। वे दोनों ऐसे मैत्रीपूर्ण ढंग से मुस्कराई कि मैं सकपका गया। कहीं दूर खेतों के सूने मार्ग में मिलनेवाली किसी लड़की की मुस्कराहट की चमक के बराबर तो दुनिया में कोई दूसरी चीज़ ही नहीं। कारण कि कम से कम एक घड़ी के लिए उसकी आँखों की नीली गहराई में एक ऐसी मनमोहक तथा कुछ हद तक प्रेमपूर्ण वह चिंगारी देखी जा सकती है जोकि आपको जड़वत कर सकती है। उस समय ऐसा लगता है मानो आपके सम्मुख बबूल या मधुगन्धा की झाड़ियाँ ओस भीगे फूलों के रूप में खिल उठी हों।

''धन्यवाद,'' लड़कियों ने कहा।

''किसलिए?''

''हमें इन फूलों सहित मिलने के लिए।''

इतना कहकर लड़कियाँ भाग खड़ी हुई। किन्तु दौड़ते हुए उन्होंने कई बार पीछे मुड़कर देखा तथा मुस्कराकर कहा, ''धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद!''

मैंने समझ लिया कि लड़कियाँ खूब मौज में हैं और केवल मुझे तंग कर रही हैं। फिर भी मुझे लगा कि इस छोटी-सी घटना में कोई रहस्य और अज़ीब बात जरूर है, जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था।

गाँव के छोर पर साफ़-सुथरी पोशाक पहने, तेजी से जाती हुई नाटे कद की एक बूढ़ी से मेरी भेंट हुई। वह एक हल्के काले रंग की बकरी को रस्सी से बाँधे हुए घसीट रही थी। किन्तु जब उसने मुझे देखा तो रस्सी फेंक दी और अपने दोनों हाथ जोड़ दिये।

''ओह मेरे बेटे, क्या कमाल की बात है कि तुमसे ऐसे रास्ते में भेंट हुई,'' उसने खुशी से भरपूर थरथराती आवाज़ में मानो गाते हुए कहा। ''मैं नहीं जानती कि मैं तुम्हें कैसे धन्यवाद दूँ?''

''मुझे किसलिए धन्यवाद देती हो, दादी?'' मैंने पूछा।

''बहुत चालाक समझते हो, खुद को! बहुत बनो नहीं, मानो तुम्हें कुछ मालूम ही न हो,'' बुढ़िया ने जवाब दिया और शरारती ढंग से अपना सिर हिलाया। ''जैसे कि तुम बखूबी जानते नहीं हो। खैर, मैं तुम्हें नहीं बता सकती, मुझे नहीं बताना चाहिये, समझे। अपने रास्ते जाओ, पर जल्दी करने की जरूरत नहीं-अधिक से अधिक लोगों से मिलने का यत्न करना।''

अन्त में यह गुत्थी गाँव में जाकर सुलझी। इसे सुलझाया ग्राम सोवियत के प्रधान इवान कारपोविच ने, जो गम्भीर तथा अपने काम से काम रखने वाले स्वभाव के व्यक्ति थे। किन्तु उन्हें, उनके शब्दों में ''स्थानीय पैमाने पर'' यानी अपने प्रदेश के सम्बन्ध में, ऐतिहासिक खोज-कार्य में दिलचस्पी थी।

''तुम एक नायाब फूल खोज लाये हो,'' उन्होंने मुझे बताया। ''यह 'तिलिस्मी फूल' कहलाता है। यह कहा जाता है-मैं नहीं जानता कि तुम्हें यह राज बताना चाहिये या नहीं-कि यह फूल लड़कियों को प्रेम में सफलता, बूढ़ों को बुढ़ापे में सुख और संक्षेप में सभी को प्रसन्नता देनेवाला होता है।''

इवान कारपोविच मुस्कराये।

''तुम मुझे इन ''तिलिस्मी फूलों'' के साथ मिले हो। इसका मतलब यह है कि मुझे भी अपने काम में सफलता मिलनी चाहिये। यह मानना चाहिये कि प्रादेशिक नगर से हमारे गाँव की ओर आनेवाली यह बड़ी सड़क सम्भवतः इस वर्ष पूरी हो जायेगी। इस बार बाजरे की पहली फसल काटने में हमें सफलता हाथ लगेगी, हमने इसे पहले यहाँ कभी नहीं बोया था।

''इन लड़कियों के लिए मुझे खुशी है,'' उसने कुछ रुककर कहा। ''वे भली लड़कियाँ हैं, सबसे बढ़िया सब्जियों उगाने वाली हैं। निश्चय ही उन्हें सफलता और खुशी मिलेगी।''

1953

जंगली गुलाब

रात को नदी पर कुहरे की परत बैठ गयी और नदी दीप और दिशा-निर्देशक भी इसमें लोप हो गये।

जलपोत खड़े किनारे से सटा और बिल्कुल रुक गया। केवल नौका-घाट की सँकरी गली से क्रमबद्ध चरमर की आवाज़ आ रही थी। वहाँ खड़े हुए मल्लाह, जोर लगाकर, किनारे पर उगी पुरानी ब्रूम झाड़ी से नाव की रस्सी बाँध चुके थे।

माशा क्लीमोवा आधी रात को जाग गयी। चारों ओर इतनी चुप्पी थी कि वह मार्ग के अन्तिम केबिन में सो रहे एक मुसाफिर के खर्राटों की आवाज़ तक सुन सकती थी।

वह अपनी बर्थ पर उठकर बैठ गयी। खुली खिड़की से भीतर आनेवाली ताज़ा हवा अपने साथ विल्लो के पत्तों की मधुर सुगन्धि ला रही थी।

झाड़ियाँ कुहरे के कारण धुँधली दिखायी दे रही थी। वे अपनी शाखाओं को डेक पर फैलाये हुए थीं। माशा को लगा कि जलपोत किसी प्रकार खुश्क ज़मीन पर पहुँच गया है कि झाड़ियाँ के एक झुरमुट में खड़ा है। तभी उसे पानी की कल-छन सुनायी दी और उसने यह अनुमान लगा लिया कि जलपोत नदी के किनारे पर ठहरा हुआ है।

झाड़ियों की ओर से किसी ने गिटकिरी भरी। कुछ देर बाद फिर वही तान लहरायी। ऐसा लगा जैसे किसी ने नीरवता की गहराई और प्रत्युत्तरता की परीक्षा लेने के लिए एक तान छेड़ी हो। गिटकिरी भरनेवालों को अवश्य ही सन्तोष हुआ होगा, क्योंकि उसकी आवाज़ के फौरन बाद एक लम्बी सी सीटी सुनाई दी और डूब गयी।

इसी समय दर्जनों आवाज़ें एक साथ लहरायी और झुरमुट सहसा ही बुलबुलों के मधुर नगमों से गूँज उठा।

''येगोरोव, सुनते हो?'' ऊपर की ओर से, सम्भवतः कप्तान के मंच की ओर से आवाज़ आई।

''हाँ, यह तो शेक्सना तट की बुलबुलों के नगमों को भी मात कर रहा है,'' नीचे से किसी ने खरखरी आवाज़ में जवाब दिया।

माशा मुस्करायी, उसने सामने की ओर अपने हाथ फैलाये। मन्द रोशनी में वे साँवले-से लगे। हाँ, उँगलियों के नाखून अवश्य सफ़ेद दिख रहे थे।

''क्यों मेरा दिल उदास है, कुछ समझ में नहीं आता?'' माशा अपने आप फुसफुसायी।

‘‘मुझे लगता है कि जरूर कुछ होने वाला है, लेकिन क्या? मैं स्वयं नहीं जानती।’’

उसे अपनी दादी के शब्द कि ‘‘लड़कियों की अनबूझ उदासी नाम की कोई चीज़ दुनिया में है,’’ याद आ गये। ‘‘बेकार की चीज़ है! लड़कियों की अनबूझ उदासी! बात केवल इतनी है कि मैं स्वयं अपनी ज़िन्दगी शुरू करने जा रही हूँ और इसलिए कुछ-कुछ डरी हुई हूँ।’’

माशा कुछ समय पूर्व ही वन-संस्थान की स्नातक हुई थी। वह लेनिनग्राद से अपने काम के स्थान लोअर वोल्गा की ओर जा रही थी जहाँ उसे सामूहिक फार्मों के लिए जंगल उगाने थे।

निस्सन्देह यह कहकर कि वह ‘‘कुछ कुछ’’ डरी हुई है, माशा ने खुद अपने को धोखा देने की कोशिश की थी। वह वास्तव में काफ़ी और ठीक ही डरी हुई थी। उसने कल्पना की कि वह अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गयी है। वह देखती है कि उसका मुखिया धूल से लथपथ धीर-गम्भीर व्यक्ति है। वह काले रंग की जैकेट पहने हैं जिसकी जेबें फूली हुई हैं और उसके लम्बे बूट कीचड़ में सने हुए होने के कारण भारी हैं। वह उसको ऊपर से नीचे तक देखता है और उसकी भूरी आँखों की ओर (जोकि स्वयं माशा को सदा ही टीन की तश्तरी जैसी लगी है) और चोटियों की ओर उसका विशेष रूप से ध्यान जाता है। वह सोचता है, ‘‘बस, इसी चोटियों वाली छोकरी की ही कसर बाकी थी, जो अपनी पाठ्य-पुस्तकों के उद्धरण देने के अतिरिक्त न किसी काम की है, न काज की। पर, मेरी जान, चल लेने दो जरा मध्य पूर्वी खुश्क हवाओं को तब तुम्हारी पाठ्य-पुस्तकें ज्यों की त्यों पड़ी रह जायेंगी...’’

माशा के लम्बे सफर ने उसे गम्भीर तथा काली जैकेट वाले अपने मुखिया की कल्पना से अभ्यस्त होने का और उसके भय से मुक्त होने का अवसर दिया। पर उसके मन की उदासी तो बनी ही रही।

वह यह न समझ पाई कि वास्तव में वह उदासी न थी। वह कुछ इस ढंग से एहसास था जिसका विश्लेषण कठिन था। वह धरती के साधारण सौन्दर्य, उसकी नदियों, कोहरे, काली रातों और तटवर्ती विल्लो वृक्षों की सरसराहट से भरपूर, आकर्षक, मगर रहस्यपूर्ण भविष्य से पहले, हृदय का डूबना था।

माशा को नींद नहीं आयी। उसने कपड़े पहने और डेक पर चली गयी। हर चीज़ ओस में भीगी हुई थी-जंगले की लकड़ी, उसके नीचे लोहे की जाली तथा खपची की बनी बाजूदार कुर्सियाँ।

‘‘‘एक-दो कश मेरे लिए भी छोड़ देना,’ मैंने बूढ़े से कहा।’’ ये शब्द डेक के अगले भाग में खड़े हुए एक तरुण मल्लाह ने कहे जो किसी को धीमी आवाज़ में कुछ बता रहा था। ‘‘बूढ़े ने मुझे सिगरेट का टुकड़ा पकड़ा दिया। मैंने एक बार कश लगाया और उसके बाद उससे पूछा : ‘दादा, आधी रात के समय तुम यहाँ चरागाहों में क्या कर रहे हो?’ ‘उषा की रखवाली,’ यह कहकर वह हँस दिया। ‘हो सकता है

कि यह मेरे जीवन की अन्तिम उषा हो। पर यह सब कुछ तुम नहीं समझ सकोगे, तुम अभी बिल्कुल जवान हो!''

मल्लाह चुप हो गये। झाड़ियों में बुलबुलों ने फिर से अपना तराना छेड़ दिया।

माशा छज्जे का सहारा लिये खड़ी थी। बहुत दूरी पर बहुत-से मुर्ग़ों की इकट्ठी बाँगें धुन्ध को चीर रही थीं। धुन्ध के पार अवश्य ही कोई गाँव है। यह मुर्ग़ों की पहली बाँग है या दूसरी?

यद्यपि माशा ने इसके बारे में कई बार पढ़ा था तथापि उसे इसकी तनिक भी जानकारी नहीं थी कि मुर्गे कब पहली बाँग देते हैं और कब दूसरी।

माशा की दादी एक जलपोत-चालक की विधवा थी। उसी ने माशा को जलपोत से यात्रा करने की सलाह दी थी और माशा वैसा करके खुश भी थी। जलपोत पहले नीले-काले जल वाली नेवा नदी में से गुजरा और उसके बाद उसने लादोगा झील को पार किया। उसके मटमैले पानी और ढलुवा अन्तरीपों में पत्थर के बने आकाश-दीपों को देखने का उसका वह पहला अवसर था। उसने तेजी से बहने वाली स्विर नदी तथा मरिईनस्की नहर के फाटक देखे। किनारों पर घनी झाड़ियाँ उगी हुई थीं। प्रत्येक तट पर लड़कों की हर समय दिखायी देनेवाली टोलियाँ मछलियाँ पकड़ने में संलग्न थीं।

मुसाफिर बदलते रहे और माशा को वे सभी दिलचस्प लगे। बेलोज्योर्स्क के स्थान पर एक तरुण हवाबाज जलपोत में आया जिसकी कनपटियों पर के बाल पके हुए थे। सम्भवतः वह बेलोज्योर्स्क में अपनी माँ के साथ छुट्टियाँ बिताने आया था, क्योंकि एक दुबली-पतली बूढ़ी औरत जो भूरी सूती पोशाक पहने थी, घाट पर खड़ी धीरे-धीरे रो रही थी।

''माँ, भूल नहीं जाना,'' हवाबाज डेक पर से उसे कह रहा था, ''मैंने जो मछलियाँ पकड़ी थीं वे सीढ़ियों के पीछेवाले तहखाने में लटक रही हैं। उनमें से एक पर्च मछली वास्का को दे देना।''

''पाशा, मैं नहीं भूलूँगी, तुम चिन्ता न करो,'' बुढ़िया ने कहा और गेंद के समान गोल किये हुए नम रुमाल से उसने अपनी आँखें पोंछी।

हवाबाज मुस्कराता और मजाक करता रहा। किन्तु उसकी आँखें माँ के चेहरे पर ही टिकी रहीं। उसका गाल काँप रहा था। तब जहाज पर कुछ अभिनेता आये। उनकी एक अच्छी-खासी गुलगपाड़ मण्डली थी। वे मजाक करते, और सभी मुसाफिरों से मित्रता गाँठते रहे। सालून में नदी की नमी के कारण बेसुरा हो जानेवाला पियानो निरन्तर बज रहा था।

अभिनेताओं में से एक चुस्त, तीखे नाक-नक्शे और बड़ी उम्रवाले अभिनेता की आवाज़ औरों की अपेक्षा कहीं अधिक सुनाई पड़ रही थी। माशा ठगी-ठगी सी उसके गानों को सुन रही थी। उसने उनमें से एक भी गीत पहले नहीं सुना था। उसे एक

प्रेमी चोर के सम्बन्ध में एक पोलिश गीत अत्यधिक पसन्द आया। गीत का भाव यह था कि एक प्रेमी चोर अपनी प्रेमिका के लिए आकाश से एक सितारा चुराकर लाने में असफल रहा और इसलिए प्रेमिका ने उसका तिरस्कार कर दिया।

इस गीत की समाप्ति पर अभिनेता जोर से पियानो को ढप करता और कहता : ''इस गीत का सदुपदेश तो स्पष्ट ही है-प्रेमियों पर तरस खाओ। अब इसका प्रतिवाद नहीं करना-बस ठीक है न!''

तब वह अपनी काली ''बो टाई'' को ठीक करता, मेज पर बैठता और सुखाई हुई कुछ मछली और बीयर लाने का आदेश देता।

चेरेपोवेत्स के स्थान पर भवन-निर्माण संस्था के कुछ विद्यार्थी जहाज पर आये। वे किरीलो-बेलोज्योर्स्क मठ से, जहाँ वे ग्रीष्म ऋतु में व्यवहारिक अध्ययन के लिए गये थे, वापस मास्को लौट रहे थे। उन्होंने पुरानी इमारतों की पैमाइश लेकर रूपांकन बनाये थे।

विद्यार्थी रास्ते भर संगतराशी, मेहराबों, अन्द्रेई रुबल्योव और मास्को की गगनचुम्बी इमारतों के बारे में वाद-विवाद करते रहे। माशा उनकी बातें सुन-सुनकर अपनी अनभिज्ञता पर शर्माती रही।

जब विद्यार्थी जहाज पर आये तो अधेड़ अभिनेता ने चोर के सम्बन्ध में अपना गाना बन्द कर दिया और मौन साध लिया। उसने अपना शेष समय स्तानिस्लावस्की की क़िताब 'कला में मेरा जीवन' पढ़ने में बिताया। पढ़ते समय उसने चश्मा चढ़ा लिया था और उसका चेहरा कृपालु और बुजुर्गाना लगने लगा था। माशा ने सोचा कि वे सभी रंगमंचीय चेष्टायेँ केवल दिखावटी थीं और वास्तव में जैसा वह दिखायी देता था उससे कहीं अधिक भला आदमी था।

सब मुसाफिर सो चुके थे-हवाबाज, अभिनेता और विद्यार्थी। माशा डेक पर अकेली खड़ी हुई रात की विभिन्न आवाज़ों को सुन रही थी और उन्हें पहचानने का यत्न कर रही थी।

दूर आकाश में कुछ गड़गड़ाहट-सी हुई और मन्द पड़ गयी। धुन्ध के ऊपर कोई हवाई जहाज उड़ रहा होगा। किनारे के समीप ही कहीं मछली ने छपाक की आवाज़ की। तभी एक चरवाहे की बाँसुरी की ध्वनि सुनाई दी। वह ध्वनि इतनी दूर से आ रही थी कि आरम्भ में तो माशा उसके रेंगते और लुभावने सुरों को ठीक तरह से पहचान ही न पाई।

किसी ने माशा के पीछे दियासलाई जलायी। उसने मुड़कर देखा। उसके पीछे खड़ा हुआ तरुण हवाबाज सिगरेट जला रहा था। हवाबाज ने जलती हुई दियासलाई जहाज से नीचे की ओर फेंकी। दियासलाई की चिंगारी धुन्ध में इन्द्रधनुषी रंगों के धुएँ का चक्र बनाती हुई धीरे-धीरे नीचे जा गिरी।

''ये बुलबुले सोने नहीं देती,'' उसने कहा, और माशा ने उसे देखे बिना ही अनुभव

किया कि वह अँधेरे में मुस्करा रहा है-''जैसे कि उस गीत में कहा गया है : 'बुलबुलो, ओ बुलबुलो, सैनिकों को तंग मत करो, सैनिकों को कुछ देर आराम करने दो!''

''बुलबुलों का ऐसा नगमा मैंने पहले कभी नहीं सुना,'' माशा ने कहा।

''एक बार सोवियत संघ में घूम आइये, आश्चर्यचकित करनेवाली ऐसी बहुत सी अन्य वस्तुएँ भी आपको मिल जायेंगी,'' हवाबाज ने जवाब दिया। ''आप वह कुछ देखेंगी, जिसकी आपने कभी स्वप्न में भी कल्पना न की होगी।''

''ऐसा इसलिए है कि आप हवाबाज हैं,'' माशा ने विचार प्रकट किया, ''और आपके परों के नीचे पृथ्वी निरन्तर ही बदलती रहती है।''

''ऐसी बात नहीं है,'' हवाबाज ने उत्तर दिया और चुप हो गया। ''सुबह हो रही है,'' कुछ क्षण बाद उसने कहा। ''उधर देखिये क्षितिज पीला हुआ जा रहा है।'' उसने पूरब की ओर संकेत किया। ''आप कहाँ जा रही हैं?''

''कमीशिन।''

''हाँ, हाँ, वोल्गा-तट पर इस नाम का एक छोटा-सा नगर है। गर्मी, तरबूज, टमाटर...''

''और आप कहाँ जा रहे हैं?''

''और भी आगे।''

हवाबाज जंगले के सहारे खड़ा हुआ था। वह आकाश को रंगीन होते हुए देख रहा था। चरवाहे की बाँसुरी की आवाज़ अधिकाधिक निकट आती गयी। हवा चलने लगी। वह धुन्ध को नदी के ऊपर से बहाकर ले गयी अब किनारे पर की भीगी झाड़ियाँ और बेंत की शाखाओं की बनी एक झोपड़ी साफ़ तौर पर नज़र आने लगी। झोपड़ी के समीप ही आग सुलग रही थी

माशा ने भी सूर्योदय का दृश्य देखा। सुनहरे क्षितिज पर, पारे की एक बूँद के समान, अन्तिम सितारा अभी भी चमक रहा था।

''आज से,'' माशा ने सोचा, ''मैं बिल्कुल दूसरे ढंग का जीवन बिताऊँगी। अब तक मैंने चीज़ों को वास्तव में कभी देखा ही नहीं था-मैं अन्धी थी। अब मैं हर वस्तु की ओर ध्यान दूँगी, हर चीज़ के बारे में सजग रहूँगी तथा प्रत्येक बात को याद रखूँगी, हृदय में सँजोकर रखूँगी।''

हवाबाज ने माशा की ओर देखा। ''लड़की अपने विचारों की दुनिया में कहीं बहुत दूर पहुँची हुई है,'' वह धीरे से बुदबुदाया। वह दूसरी ओर देखने लगा। लेकिन घड़ी भर बाद फिर माशा की ओर मुड़ा।

हवाबाज ने बहुत वर्ष पहले एक उपन्यास पढ़ा था, उसे अचानक उसका एक अंश याद हो आया। लेखक ने अपने उपन्यास में यह घोषणा की थी कि प्रातःकाल के समय बच्चों और लड़कियों की आँखों से अधिक सुन्दर कोई वस्तु नहीं होती। उनमें उस समय भी रात का तिमिर बाकी होता है, पर साथ ही उषा की किरण भी

झलकने लगती है।

"कुछ बुरा नहीं कहा है," युवक ने सोचा। जलपोत के कप्तान का सहायक, बरसाती पहने पुल से नीचे उतरा। उसके चेहरे पर विभिन्न ऋतुओं की छाप अंकित थी।

"अरे, आप जाग रही हैं?" उसने हँसते हुए माशा को सम्बोधित किया। "घण्टे भर बाद यहाँ से चलेंगे, आप किनारे पर जाकर टहल सकती हैं।"

"यह नेक ख़्याल है," माशा ने हवाबाज से कहा। "घूमना भी हो जायेगा और कुछ फूल भी चुन लाऊँगी।"

"ठीक है, आओ चलें," हवाबाज ने सहमति प्रकट की।

वे जहाज के टेढ़े और सँकरे मार्ग से तट की ओर गये। एक बूढ़ा झोपड़ी से बाहर निकला। सम्भवतः यह वही था जो उषा की रखवाली कर रहा था। सूरज धुन्ध को चीरता हुआ ऊपर उठ रहा था।

गहरे हरे रंग की घास ठहरे हुए काले पानी की भाँति शान्त थी। उससे तन को चीरने वाली रात की ठण्डक अभी तक आ रही थी।

"तुम यहाँ क्या करते हो, दादा?" हवाबाज ने बूढ़े से पूछा।

"मैं टोकरियाँ बुनता हूँ," बूढ़े ने जवाब दिया और उसके चेहरे पर एक अपराधी की सी मुस्कान फैल गयी। "मैं बहुत कुछ नहीं करता हूँ। बस सामूहिक फार्मों के आलुओं के लिए कुछ टोकरियाँ ही बनाता हूँ। तुम्हें चरागाहों में दिलचस्पी है?"

"हाँ, हाँ, हम चक्कर लगाना चाहते हैं।"

"इतने थोड़े से समय में ही?" बूढ़ा हँसा। "मैं यहाँ, इसी चरागाह में पिछले 70 वर्ष से रह रहा हूँ, पर अभी तक यहाँ का सभी कुछ नहीं देख पाया। वहाँ उस मार्ग पर सूखकर काले पड़े हुए चिनार के वृक्ष तक हो आओ। उससे आगे मत जाना। वहाँ मनुष्य के क़द से भी अधिक लम्बी घास है। तुम ओस से इस तरह तर-ब-तर हो जाओगे कि दिन भर सूख नहीं पाओगे। वहाँ की ओस-उसकी क्या बात है, तुम घड़े भर-भरकर पी सकते हो।"

"तुमने कभी पी है?" युवक ने पूछा।

"क्यों नहीं! वह औषधि से कहीं अधिक गुणकारी है।"

माशा और हवाबाज धीरे-धीरे उस मार्ग पर चल दिये। माशा सूखे हुए चिनार वृक्ष तक जाकर रुक गयी।

मार्ग के दोनों ओर जंगली गुलाब की झाड़ियाँ ऊँची सीधी दीवार की भाँति खड़ी थी, इनमें लगे सुगन्धित पत्तियों वाले फूल ऐसे ताजे और सिन्दूरी रंग के थे कि उनके आस-पास पत्तों पर चमकनेवाली उषाकालीन किरणें भी पीली और निर्जीव-सी लग रही थीं। ऐसा लगता था मानों वे फूल छोटे-छोटे चमकते हुए शोले हों और झाड़ियों से अलग, हवा में खड़े हों। सुनहरी धारियों वाले काले भौंरे अपने काम में

मस्त झाड़ियों में भनभना रहे थे।

"सेंट जार्ज पदक से सुशोभित सूरमा," हवाबाज ने विचार प्रकट किया।

भौंरों का जमघट सेंट जार्ज पदक के छोटे रिब्बन की याद दिलाता था। और वे भी लोगों की परवाह न कर, यहाँ तक कि उनसे कुछ नाराज-से, रणक्षेत्र के आजमाए हुए सिपाहियों की भाँति इधर-उधर घूम रहे थे।

सूरज की किरणें जंगली गुलाब की झाड़ियों के बीच पाई जाने वाली दरारों से गुजरती हुई घनी घास तथा फूलों पर विभिन्न प्रकार के क्षणिक आकार बना रही थीं। वहाँ नीले, लाल और मोमबत्ती जैसे सीधे लम्बे पौधे थे, लाल तथा सफ़ेद तीनपतिया घास थी, कौए के पंजे की शक्ल के नीले पत्तों वाले पौधे, बर्फ़ जैसे श्वेत गुलदाउदी और जंगली माल्वा के स्वच्छ गुलाबी पत्तियों वाले फूल और सैकड़ों अन्य फूल थे जिनके नाम न तो माशा को आते थे और न ही हवाबाज को।

उनके पैरों के पास ही बटेर शोर मचाते हुए उड़ रहे थे। एक गीले खोखले वृक्ष के ठूँठ में छिपा हुआ लैन्ड्रेल नामक एक पक्षी मानों उनका उपहास करता हुआ चिल्लाया। भरद्वाज पक्षी फड़फड़ाते हुए हवा में ऊँचे उड़ रहे थे। किन्तु किसी कारणवश उनका स्वर आकाश के बजाय नदी की ओर से आता प्रतीत हो रहा था।

नदी की ओर से जलपोत के भोंपू की तेज आवाज़ सुनाई दी। माशा और हवाबाज को लौटने का संकेत किया गया था।

"यह क्या मुसीबत है?" माशा ने फूलों की ओर देखते हुए बिगड़कर कहा, "यह क्या मुसीबत है?"

उसने जल्दी से दोनों हाथों में फूलों को समेटना शुरू कर दिया। जलपोत के भोंपू की दूसरी आवाज़ सुनाई दी जिसे अन्तिम तथा कुछ हद तक क्रोधपूर्ण कहा जा सकता था।

"यह भी अज़ीब मुसीबत है!" माशा ने खेद के साथ कहा। जहाज के चोंगे से निकलता हुआ धुआँ जहाँ झाड़ियों के ऊपर चक्कर काट रहा था उस ओर मुड़ते हुए, उसने चिल्लाकर कहा, "आ रहे हैं!"

वे जल्दी से जलपोत की ओर बढ़े। पानी से तर-ब-तर माशा की पोशाक उसकी टाँगों को थपथपा रही थी। माशा ने अपनी चोटियों को गोलाकार रूप में बाँधा हुआ था। वे अब खुलकर नीचे की ओर लटक रही थीं। उसके पीछे आते हुए तरुण हवाबाज ने जैसे-तैसे फूलों से लदी जंगली गुलाब की कुछ शाखाएँ काट ही लीं।

जहाज के तंग मार्ग में खड़े जहाजियों ने बाँहों में समेटे हुए फूलों की ओर देखकर कहा :

"चरागाह को बिल्कुल साफ़ ही कर आये लगते हो! अच्छा, सेम्योन, यह चला जहाज!"

"इन फूलों को जहाज के सालून में सभी मुसाफिरों के लिए ले जाओ," पुल पर

खड़े जहाज के कप्तान के सहायक ने कहा और तब लाउडस्पीकर द्वारा ऊँचे स्वर में घोषणा की : ''धीरे-धीरे आगे बढ़ो।''

चक्के जोर से घूमे। उनके पंखों के नीचे पानी मथा जाने लगा। मन्द-मन्द सरसराती हुई झाड़ियों वाला किनारा पीछे रह गया।

माशा को किनारा, चरागाह और वह झोंपड़ी जहाँ टोकरियाँ बुननेवाला बूढ़ा रहता था, छोड़ना भला नहीं लगा। वह सभी कुछ सहसा उसको इतना प्रिय हो गया था, मानो वह वहीं उस बूढ़े की देख-देख में जन्मी-पली हों।

''कैसी अज़ीब बात है,'' सालून की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए माशा ने सोचा, ''मैं इतना भी नहीं जानती कि हम कहाँ हैं या यह कौन सा जिला अथवा प्रदेश है। किसी समीपवर्ती नगर का नाम तक भी मुझे मालूम नहीं।''

सालून ठण्ड और साफ़-सुथरा था। उसकी पालिश की हुई लकड़ी की दीवारों, मेजों और अखरोट की लकड़ी के बने पियानो पर अभी तक धूप का असर नहीं हुआ था।

माशा ने फूलों को अलग-अलग करके फूलदानों मे सजाना शुरू किया। हवाबाज नीचे के डेक से कुछ ताजा पानी ले आया और फूलों को व्यवस्थित करने में माशा का हाथ बँटाते हुए कहने लगा :

''बेलोज्योर्स्क में हमारा बाग बहुत छोटा-सा है, पर उसमें ढेरों फूल हैं, विशेषकर गेंदे के।''

''बेलोज्योर्स्क में आपने अपनी छुट्टियाँ खूब मजे में गुजारीं?'' माशा ने पूछा।

''कुछ बुरी नहीं गुजरीं, काफ़ी पढ़ता रहा और अपने जीवन की जाँच-पड़ताल की। इसके अतिरिक्त बेलोज्योर्स्क में और हो भी क्या सकता था?''

"'जाँच-पड़ताल की,' इससे आपका क्या अभिप्राय है?'' माशा ने कुछ हैरान होते हुए पूछा।

''मैंने जो कुछ देखा, किया और सोचा, वह सब लिखा। फिर उसका विश्लेषण किया, क्या मैंने अपना जीवन ठीक ढंग से गुजारा है? कहाँ-कहाँ भूलें की हैं? तब हाल ही में गुजरे समय में अपने जीवन में जो कुछ भला-बुरा किया है उसका हिसाब जोड़ा।''

''परिणाम क्या रहा?''

''अब हर चीज़ शीशे की भाँति साफ़ है। अब मैं शान्त मन से जी सकता हूँ।''

''मेरे लिए यह नई और अनूठी बात है,'' माशा ने कहा और बहुत ध्यान से हवाबाज की ओर देखा।

''आप भी यह ढंग आजमाकर देखें,'' उसने मुस्कराते हुए सुझाव दिया। ''आप यह जानकर हैरान हो जायेंगी कि आपका जीवन कितना घटनापूर्ण रहा है।''

''खूब, बहुत खूब,'' माशा को अपने पीछे से एक परिचित आवाज़ सुनाई दी। वह मुड़ी।

दरवाज़े पर अभिनेता खड़ा था। वह सोने के समय की नीली पोशाक पहने था और उसके कन्धे पर नहाने का तौलिया था।

''खूब, बहुत खूब,'' उसने दोहराया। ''सुबह-सुबह अगर राज की बातें की जायें तो क्या कहने! इस समय हमारे विचार भी रगड़कर साफ़ किये गये हाथों की तरह ही साफ़ होते हैं।''

''बस बस, रहने दीजिये,'' हवाबाज ने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा।

''ठीक कहा आपने, यह सब बकवास है,'' अभिनेता ने सहमति प्रकट की। ''बिगड़िये नहीं। आप दोनों की बातचीत अचानक ही मेरे कान में पड़ गयी। मैं उसमें केवल एक कड़ी और जोड़ना चाहता हूँ, केवल एक अकाट्य सत्य, जिसे मैं कह सकता हूँ, मैं बहुत देर से जान पाया हूँ।''

''क्या है वह महान सत्य?'' हवाबाज ने पूछा।

''मुझे आपका यह व्यंग्यात्मक ढंग पसन्द नहीं,'' अभिनेता ने एक अनुभवहीन पाठक की अतिशयोक्तिपूर्ण अलंकारिक भाषा में कहा। फिर वह हँसा। ''सत्य स्वयं अपने में बहुत सरल है। हर दिन कोई न कोई अच्छी बात अवश्य होती है, बहुधा कुछ कवित्वपूर्ण भी। जब हम अपने जीवन की जाँच-पड़ताल करते हैं, जैसा कि आपने अभी बताया, जाने-अनजाने, हम जीवन के कवित्वपूर्ण और सुलझे हुए अंशों को ही अधिकतर याद करते हैं। यह बहुत बढ़िया बात है और अज़ीब भी! हमारे इर्द-गिर्द की हर वस्तु में कविता भरी हुई है। इसे खोजना चाहिये। यह एक बूढ़े के विदा होते समय के शब्द हैं इन्हें सदा याद रखिये। मेरा प्रतिवाद मत कीजिये। बस, मामला तय है।''

अभिनेता दबी हँसी हँसता हुआ चला गया। मगर माशा इस बात में उलझकर रह गयी कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु बहुत सरल किन्तु विलक्षण है। जब वह लेनिनग्राद के संस्थान में पढ़ती थी यह तथ्य तब इतना स्पष्ट न था जितना कि अब इस सफर के दौरान में हो गया था। शायद इसका कारण यह था कि जीवन की तह में जो कविता भरी पड़ी है, उसमें उसका अपना भाग अब स्पष्ट हो गया था।

वोल्गा नदी की ढाल की ओर दिन भर लगातार तेज हवा चलती रहती। चमकती हुई नीली लहरों जैसी हवा की नीलिमा जहाज के पास से गुजरती और नदी की ढाल की ओर बहती जाती। माशा को लगता मानो हवा गर्मी के उन सब दिनों को एक-एक करके बड़ी तेजी से उसके सामने से उड़ाये लिए जाती है।

संध्या समय तेज हवा बन्द हो जाती और नदी का जल पुनः अंधकार में विलीन हो जाता। जहाज की बत्तियों के प्रकाश में केवल इस अंधकार का कुछ भाग ही चमकता रह जाता।

माशा खुश थी। फिर भी कभी-कभी यह सोचकर उसकी प्रसन्नता में उदासी का पुट आ जाता था कि उसकी नयी ज़िन्दगी, जिसका आरम्भ इतना अच्छा हुआ था,

कहीं बिल्कुल बुरे ढंग की होकर न रह जाये।

कमीशिन में माशा जहाज से उतरी। उस समय हवा, वोल्गा पर पीली धुन्ध की चादर बिछा रही थी।

हवाबाज तथा अभिनेता दोनों माशा को विदा करने के लिए घाट तक गये।

माशा हवाबाज से विदा होते समय विह्वल थी। हवाबाज झेंपता हुआ जहाज पर वापस चला गया। उसने डेक पर खड़े रहकर अभिनेता को माशा से विदाई लेते देखा।

अभिनेता ने अपना टोप उतारा, माशा के हाथ अपने हाथ में लिए और हँसती-चिढ़ाती नज़र से उसकी ओर देखते हुए कहा :

''तुम्हें खुशी नसीब होगी, पर मेरी खुशी तुम्हारी खुशी से अधिक है, क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ।''

''मैं समझी नहीं,'' माशा ने कहा।

''अरे, यह तो स्पष्ट है। मेरा मतलब उन लोगों को मिलनेवाली खुशी से है जो अब जवान नहीं रहे,'' अभिनेता ने अपनी शान दिखाते हुए कहा। ''मेरा मतलब उस खुशी से है जो किसी दूसरे को प्रेम करनेवाली डेस्डेमोना* जैसी सुन्दरी की आँखों में आँसू देखकर होती है।''

उसने माशा के हाथ छोड़ दिये और टोप हाथ में लिए जहाज के तंग मार्ग से ऊपर चला गया। जहाज ने तीसरी और अन्तिम बार अपना भोंपू बजाया और चल दिया।

नदी की ओर से तेल की गन्ध से भरी तेज हवा आ रही थी। वह जोर से मुँह से टकरा रही थी। छोटे क़द और भूरी मूँछों वाला एक बूढ़ा-सा व्यक्ति सामान ले जाने में सहायता देने के लिए माशा के इर्द-गिर्द घूमता रहा। पर माशा ने न तो उसकी कोई बात सुनी और न कोई उत्तर ही दिया। अतः बूढ़ा एक तरफ़ पड़ी हुई बेंच पर सिगरेट जलाकर बैठ गया ताकि माशा को सुध-बुध सम्भालने का समय मिल सके।

एक दिन बाद माशा कमीशिन से बहुत दूर पहुँच चुकी थी। एक पहियेदार डिब्बे का घसीटकर स्तेपी के कच्चे किनारों वाले एक तालाब के समीप लाकर खड़ा कर दिया गया था। इस छोटे-से डिब्बे में वे कार्यकर्त्ता रहते थे जो सामूहिक फार्मों के लिए वन-वलय उगाने का काम करते थे। माशा की भी यही घर था।

माशा की कल्पना के विपरीत उसका मुखिया न तो धीर-गम्भीर था और न ही धूल-मिट्टी से लथपथ। वह तो बहुत ही ज़िन्दादिल और हँसमुख व्यक्ति था। पर अन्य सभी लोगों की तरह उसे भी एक ही चिन्ता घेरे रहती थी कि उन्होंने बलूत के पेड़ों के जो बीज बोये हैं वे फूटेंगे कि नहीं और दक्षिणपूर्व की ओर से आनेवाली खुश्क हवाओं से क्या हानि की सम्भावना है। वहाँ वोल्गा से परे क्षितिज पर काँच-सदृश कुहासा-सा छाया था। ''नोनी भूमि'', ये शब्द सभी के होंठों पर थे। यही ''नौनी

---

* डेस्डेमोना शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक 'ओथेलो' की नायिका का नाम है।-सं.

भूमि'' नये जंगल की सबसे बड़ी और परेशान करनेवाली शत्रु थी। स्तेपी में जहाँ-तहाँ ऐसी भूमि के टुकड़े उभर आते थे! पीली मिट्टी में दरारें पड़ जातीं और उनमें से बर्फ़ जैसी नमक की सफ़ेद परतें झाँकने लगतीं।

एक दिन माशा ने हवाबाज की नसीहत पर अमल करते हुए अपने जीवन की छानबीन की। उसने पाया, कि उसका जीवन तीन स्पष्ट भागों में बाँटा जा सकता था। वे तीन भाग थे लेनिनग्राद में विद्यार्थी जीवन, जहाज पर सफ़र तथा वोल्गा की स्तेपी में उसका काय। उसके जीवन के हर भाग में, कुछ श्रेष्ठ और जैसा कि बूढ़े अभिनेता ने सुझाया था, कवित्वपूर्ण अंश था।

लेनिनग्राद में वह अपने कमरे से लाखता नदी के पीछे छिपते हुए सूर्य का आकर्षक दृश्य देखा करती थी। वहाँ उसके बहुत-से मित्र थे, संस्थान था, पुस्तकें थीं, बहुत-से थियेटर और पार्क थे। यहाँ आते हुए मार्ग में माशा को पहली बार अस्थायी किन्तु अत्यधिक मर्मस्पर्शी मित्रता के आकर्षण और रूस की चौड़ी नदियों के सौन्दर्य की अनुभूति हुई। और अब, स्तेपी में उसने काम के महान अर्थ और शक्ति को समझा।

अपने हृदय की गहराई में उसने हवाबाज की छाया कहीं हिलती-डुलती अनुभव की। उसके कल्पना-पट पर हवाबाज का उस क्षण का चित्त उभरा जब बुलबुलों की शिकायत करते हुए उसके चेहरे पर विह्वल मुस्कान खिल उठी थी। फिर कमीशिर में विदाई के समय का दृश्य सामने आया, जब हवाबाज डेक से एकटक उसे निहार रहा था, और बेलाज्योर्स्क में अपनी माँ से विदा लेते समय के समान उसका गाल काँप रहा था। यह कैसी दयनीय स्थिति थी कि वे मिले और मिलकर जुदा हो गये।

माशा के हृदय पर अपने सफर की बहुत गहरी छाप अंकित हुई थी। एक बार तो उसने अपनी यात्रा का सपना तक देखा। उसने ओस में नहाई हुई जंगली गुलाब की घनी झाड़ियाँ देखीं। उसने देखा कि संध्या हो चुकी है और रात की अँधेरी दहलीज पर एक प्यारा-सा अर्द्ध-चन्द्र चमक रहा है, मानो कोई फसल काटनेवाला अपना चाँदी का हँसिया भूल गया हो। उसे इतनी खुशी हुई थी यह दृश्य देखकर कि वह नींद में ही जोर से हँस दी थी।

नये उगाए गये वृक्ष, हरे रंग की उस छिछली नदी के समान लगते थे जो पहाड़ियों में से बहती हुई दूर तक ऊसर भूमि में फैल गयी हो जहाँ चौड़े-चौड़े मार्गों में गेरुआ धूल उड़ती फिरती हो।

करने के लिए बहुत काम था। छोटे-छोटे बलूत के वृक्षों के बीच की भूमि को नर्म करना था और वहाँ फूलदार बबूल के वृक्ष लगाने थे। माशा ने जी-जान से अपने को इस काम में लगा दिया। उसे अपने हृदय में छोटे-छोटे वृक्षों के लिए दया की अनुभूति होती थी।

माशा सँवला गयी। चिलचिलाती धूप के प्रभाव से उसकी चोटियों का रंग हल्का हो गया। अब वह ऐसी लगती थी मानो स्तेपी की ही बेटी हो, वहीं जन्मी-पली हो!

उसकी पोशाक, हाथ और उसकी हर चीज़ से नागदौने की गन्ध आती। स्तेपी की हर चीज़ में यही गन्ध बसी हुई थी। और तो और नरज़ान नामक काले झबरे कुत्ते से भी इसकी बू आती थी। वह डिब्बे का चौकीदार था।

डिब्बे की चौकीदारी करते थे नरज़ान और मुखिया का सात वर्षीय बेटा सत्योपा।

वे दोनों सारा दिन डिब्बे की छाया में बैठकर धानीमूष की और नाशपाती के झुके हुए जंगली पेड़ में से गुजरती हुई तेज हवा की सीटियाँ सुनते रहते थे। नाशपाती के पेड़ में से कुछ ऐसी गूँज पैदा होती थी, मानों वह काँसे का बना हो।

गर्मी खत्म होते न होते धानीमूषों के वृक्षों पर हल्ला बोल दिया। उन्होंने बलूत के छोटे वृक्षों के आसपास सूराख कर डाले और पिस्सुओं से बचने के लिए वे इन्हीं में लोटपोट होते रहते। धानीमूषों से वृक्षों को बचाने के लिए वोल्गोग्राद में संकट की स्थिति का सन्देश भेजा गया। यह प्रार्थना की गयी कि ‘‘बागबान’’ हवाई जहाज को जल्दी से भेजा जाये ताकि वह जई के जहरीले दाने बरसाये।

एक शाम को सत्योपा डिब्बे की पैड़ियों पर बैठा आलू छील रहा था। तभी नरज़ान ने अपना सिर ऊपर उठाकर भौंकना शुरू कर दिया। हल्की गड़गड़ाहट करता हुआ एक छोटा-सा हवाई जहाज, पश्चिम की ओर से आ रहा था। वह थोड़ी-सी ऊँचाई पर स्तेपी के ऊपर उड़ रहा था।

वह डिब्बे के ऊपर से गुजरा। फिर तेजी से मुड़ा, सूखी घास पर उतरा और कुछ दूर तक दौड़कर रुक गया।

हवाबाज, वायुयान के छोटे-से कक्ष बाहर निकला। लड़के और कुत्ते की ओर बढ़ते हुए उसने अपना चमड़े का टोप उतार लिया। वह जवान था। हाँ, उसकी कनपटियों पर के बाल सफ़ेद होने लगे थे। सत्योपा ने उसकी जैकेट पर अनेक पुरस्कार-चिह्न लगे देखे।

नरज़ान हवाबाज को देखकर भौंकने के बजाय रेंगकर डिब्बे के नीचे जा छिपा तथा वहीं से एक बुजदिल की भाँति गुर्राने लगा।

‘‘हलो, दोस्त,’’ हवाबाज ने सत्योपा के समीप पैड़ियों पर बैठते और सिगरेट जलाते हुए पूछा, ‘‘क्या यही भाग नं. 15 है?’’

‘‘यही है,’’ सत्योपा ने सहमते हुए जवाब दिया। ‘‘क्या आप हमारे यहाँ आये हैं?’’

‘‘हाँ, मैं धानीमूषों को मारने के लिए आया हूँ’’

‘‘आप तो बढ़िया हवाबाज हैं, बहुत-से पुरस्कार चिह्न लगाये हुए हैं,’’ सत्योपा ने कहा। वह कुछ देर के लिए रुका और फिर बोला : ‘‘और फिर आप ही धानीमूषों को मारने के लिए आये हैं! हमारा विचार तो यह था कि वे किसी विद्यार्थी विमान-चालक को हमारे पास भेजेंगे।’’

‘‘मुन्नू, मैंनें खुद यहाँ आने की इच्छा प्रकट की थी,’’ हवाबाज ने उत्तर दिया और

चुप हो गया। ''क्या माशा क्लीमोवा यहीं काम करती हैं?''

''जी हाँ,'' सत्योपा ने उसकी ओर तिरछी नज़र से देखते हुए जवाब दिया। ''क्यों?''

''वह कहाँ है?''

''उधर, वहाँ जंगल में,'' सत्योपा ने नन्हें पौधों की ओर संकेत किया।

''जंगल, बेशक जंगल ही है!'' हवाबाज हँसा। वह उठा और उस दिशा में चल दिया।

सत्योपा उसकी ओर देखता रहा। अंधकार गहरा रहा था और स्तेपी साफ़ तौर पर दिखायी न दे रही थी। किन्तु सत्योपा को घर की ओर आती हुई माशा साफ़ नज़र आ रही थी। हवाबाज उससे मिलने के लिए तेजी से बढ़ रहा था। पर माशा उसके नज़दीक पहुँचने से पहल ही रुक गयी। दोनों हाथों में उसने अपना चेहरा छिपा लिया।

रात हो गयी थी। और बहुत ऊँचाई से एक अकेला सितारा स्तेपी के तालाब के काले पानी में झाँक रहा था।

''माशा ने अपने चेहरे को क्यों हाथों से छिपा लिया था?'' सत्योपा हैरान था। और तब मजाक में उसने माशा के सम्बन्ध में अपने पिता के शब्द दोहराये :

''बहुत ही अज़ीब लड़की है!''

खुश्क और गर्म भूमि पर हवाई जहाज एकदम शान्त और निश्चल खड़ा था। डिब्बे के नीचे लेटा हुआ नरज़ान रात भर उसे देखकर गुर्राता रहा।

1951

समय के पंख

एक बार मास्को के एक चित्रकार लावरोव को वोल्गा नदी के समीपवर्ती क्षेत्रों के प्राकृतिक तथा ग्राम्य-दृश्यों को चित्रपट पर उतारने का दायित्व सौंपा गया। उसने खुशी से यह कार्यभार स्वीकार कर लिया। पर अपने स्वभावगत आलस्य के कारण उसने सारी गर्मी तैयारी में ही बिता दी। कहीं सितम्बर महीने के आरम्भ में ही वह मास्को से वोल्गा के लिए रवाना हुआ।

धुएँ के चौड़े चोंगे वाले जलपोत के शीशों को पालिश से इतना अधिक चमकाया गया था कि वे बिल्लौर की सी झलक देते थे। इंजनों में कम्पन हुआ। जहाज धीरे-धीरे और निर्बाध गति से आगे बढ़ने लगा। जहाज में ढेरों बत्तियाँ जगमगा रही थीं और उसका डेक तरह तरह की बढ़िया पोशाकों वाले मुसाफिरों से खचाखच भरा था। जहाज आस-पास के उन जंगलों और छोटे-छोटे मैदानों के नज़दीक से होकर गुजरा, जहाँ ठण्डा होता हुआ सूर्य छिप रहा था। जंगल तो लाल तथा सुनहरा हो भी चुका था। शरद्काल के आरम्भ की उस संध्या के हल्के प्रकाश में नहर की कई दिशा-संकेत बत्तियाँ हिल रही थीं।

लावरोव था तो काफ़ी बड़ी उम्र का आदमी, मगर स्वभाव का झेंपू था। इसीलिए उसे अपने साथी मुसाफिरों से मित्रता करने में कठिनाई अनुभव हुई। अपने सभी मिलनेवालों में वह एक ही उद्देश्य से दिलचस्पी लेता था कि उनका चित्र अंकित किया जा सकता है या नहीं। जहाज पर उसने दो व्यक्तियों को इस उद्देश्य से चुन लिया था। उनमें से एक तो थी जलपोत-चालिका युवती साशा और दूसरे व्यक्ति थे, इतिहास के विख्यात प्रोफेसर। प्रोफेसर की पलकें भारी-भारी थीं और चेहरा साफ़-सफाचट।

पौ फटी तो जहाज ने रीबिन्स्क समुद्र पार किया। लावरोव ओस-भीगे सूने डेक पर आकर खड़ा हो गया। पश्चिम दिशा की की ओर से आती हुई और कल-कल की ध्वनि करती हुई छोटी-छोटी लहरें धुँधली उषा से मिलने जा रही थीं। ये लहरें मौसम की खराबी की पूर्व-सूचना दे रही थीं।

प्रोफेसर भी डेक पर आ गये थे। उनका कालर ऊपर को उठा हुआ था और वे जंगले के सहारे झुककर खड़े थे। वे अपने उस काले टोप को कसकर पकड़े हुए थे जिसे बूढ़े बेहद शौक से पहनते हैं।

साशा डेक की ओर आनेवाली सीधी खड़ी सीढ़ी से धड़धड़ाती हुई नीचे उतरी। वह काला ग्रेटकोट, चमड़े के दस्ताने और ऊनी टोपी पहने थी। उसने अपनी भूरी

चोटियाँ टोपी के नीचे समेट रखी थीं।

रात भर की ड्यूटी के बाद उसे अब छुट्टी मिली थी। उसके गाल ठण्ड से तमतमा रह थे और होंठ सूखे हुए थे।

''नमस्कार,'' उसने मुस्कराते हुए लावरोव का अभिवादन किया। ''हमारे समुद्र की सराहना कर रहे हैं?''

''मुझे तो यकीन ही नहीं होता कि इसे इंसानी हाथों ने बनाया है,'' लावरोव ने उत्तर दिया।

''मेरा जन्म यहाँ मोलोगा में हुआ था। जब मैं छोटी सी थी तो हम यहीं, इसी समुद्र के तल पर खुमियाँ एकत्रित करने आया करते थे,'' उसने उषा की लालिमा से लाल होती हुई लहरों की ओर संकेत किया। ''और यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है-मुझसे कम उम्र है इस समुद्र की।''

''इतिहास की घटनाओं की तेजी के साथ क़दम मिलाकर नहीं चल सकता,'' प्रोफेसर ने मत प्रकट किया और अपने टोप को लगभग कानों तक खींच लिया। ''घटनाएँ तो मानों पंख लगाकर उड़ती हैं और हमारे इतिहासगत और श्रमसाध्य विचारों को पीछे छोड़ती हुई आगे निकल जाती हैं। काल की इस द्रुतगति का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए सैकड़ों विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी।''

कीनेशमा के समीप जहाज, बेड़ों की एक लम्बी पाँति से जा मिला।

हवा हल्के और फटे-फटे बादलों को आकाश में तेजी से बहाये लिए जा रही थी। उनकी परछाइयाँ नदी और जंगल से ढके किनारों पर पड़ रही थीं। तट की रेतीली चट्टानें पानी में डूबी हुई थीं। परछाइयों के साथ, कभी-कभी सूरज भी अपनी झलक दिखा देता था। तब हर वस्तु आँखों को चकाचौंध करती हुई चमक उठती थी। सहसा अंधकार को क्षणिक दीप्ति में परिवर्तित करता हुआ गंगा चिल्लियों का एक झुण्ड दिखायी दिया और पुनः अंधकार में ही विलीन हो गया। तभी दूर स्थित एक मकान-सम्भवतः ग्राम-सोवियत-पर लगा एक झण्डा फड़फड़ाने लगा। इसके फौरन बाद ही देवदार वृक्षों की हरियाली, सूरज की रोशनी में ऐसे चमकने लगी मानो ग्रीष्मकालीन भारी वर्षा ने उन्हें तर-ब-तर कर दिया हो। फिर देवदार के वृक्ष ऐसे दिखायी दिये मानो उन्होंने हरे गहरे रंग की चादर ओढ़ ली हो और उनकी मन्द-मन्द सरसराहट जहाज तक पहुँचने लगी।

जहाज के पीछे की लहर ने पास से गुजरते हुए कुछ बेड़ों पर छपाका मारा। बेड़े के देवदार के बड़े-बड़े लट्ठों पर-जिन्हें मजबूत फौलादी तारों द्वारा आपस में जोड़ा गया था-युवतियाँ नाव की हुकों को पकड़े खड़ी थीं। उन्होंने ऊँचे स्वर में कुछ कहा। किन्तु उनकी आवाज़ हवा में बिखर गयी। उनक धूप से सँवलाये, हँसते हुए चेहरों पर सफ़ेद दाँत चमक उठे। हवा के कारण उनके रुमाल और लहंगे झूल गये और उनकी कांसेरंगी टाँगें उघाड़ी हो गयीं।

साशा पुल पर खड़ी थी।

"सुनो-ओ, क्या हालचाल है?" उसने लाउडस्पीकर में से चिल्लाकर पूछा।

"मजे... में... हैं..." बेड़ों पर की सभी स्त्रियों ने मिलकर जवाब दिया और अपने रुमाल हिलाये।

"किधर को?"

"नीचे वोल्गोग्राद की ओर! अलविदा! हमें, वोल्गा की लड़कियों को मत भूलना!"

लावरोव ने यह अनुमान लगाया कि वे साशा को अपने में से एक ही समझती हैं। वोल्गा के आसपास के प्रदेश में अवश्य सभी उससे भली-भाँति परिचित होंगे-ऐसा होना है भी स्वाभाविक, क्योंकि जलपोत-चालिकाएँ तो इनी-गिनी ही हैं!

उस रात लावरोव ने साशा से शिकायत की कि वह तेज हवा के झोंकों, बेड़े पर बैठी युवतियों और प्रकाश और छाया की आँखमिचौली के दृश्यों को चित्रपट पर उतारने के लिए बहुत उत्सुक था। मगर जहाज इतनी तेजी से आगे निकल गया कि वह उनका खाका तक भी न बना सका।

"क्या तुम घड़ी भर के लिए जहाज को रोक नहीं सकती थीं?" उसने मजाक करते हुए पूछा।

"नही, व्लादीमिर पेत्रोविच, मैं यह कैसे कर सकती थी?"

"तुम कैसे कर सकती थीं! हाय! तुम मशीनों के दीवाने लोग! तुम सौन्दर्य की तो रत्ती भर भी परवाह नहीं करते!"

"यह ग़लत है," साशा ने उत्तेजित होते हुए जवाब दिया। "हम अवश्य ही सौन्दर्य की परवाह करते हैं। पर आपको हमारा दृष्टिकोण भी समझना चाहिये!"

"उसमें समझने को रखा ही क्या है?"

"जरा देश भर के यातायात की कल्पना तो कीजिये कि वह कितना जटिल है। रेलगाड़ियों, जलयानों तथा हवाई जहाजों के निश्चित मार्गों का एक विस्तृत जाल-सा बिछा हुआ है, जिसमें एक समय-सूची दूसरी पर निर्भर है। यदि जीवन को व्यवस्थित ढंग से चलना है तो इन सबको एक घड़ी की भाँति काम करना चाहिये। आशा है कि आपको इसमें भी कुछ सौन्दर्य नज़र आता होगा।"

"हूँ, तुम्हारी बात में भी कुछ वजन तो है," लावरोव ने स्वीकार किया। "इस ओर मेरा ध्यान नहीं गया था।"

जहाज वोल्गा पर जा रहा था। वह खड़े दायें किनारे की सुनहरी पहाड़ियों के पास से गुजरा। बिजली के इस्पाती खम्भे वृक्षों की चोटियों के लाल रंगे पत्तों में आधे छिपे हुए से थे। वहाँ ऊँचाई पर, खूब कसे हुए तारों के बीच से बराबर बिजली बह रही थी। लावरोव को किसी कारणवश लगा कि बिजली की चमक में कुछ नीली-सी झलक होती है। उसने सोचा कि शायद इसीलिए कि बिजली की चिंगारियाँ नीली होती हैं।

बायीं ओर का किनारा कभी गुलाबी तो कभी सुनहरा, कभी नीला तो कभी हल्का

बैंगनी नज़र आया तो कभी एक वृहदाकार लाल अथवा पीले धब्बे में बदल गया। वह अब धुन्ध में लुप्त हो चुका था। चित्रकार इन रंग-बिरंगे दृश्यों का कारण समझता था। यह रंग-परिवर्तन था जंगलों के कारण जो धुन्ध की चादर में लिपटकर अंधकारमय लगते थे या डूबते सूरज की किरणों से रंगे बादलों के कारण या खड़े तटों के कारण या कोहरे में लिपटे हुए दूरस्थित नगर की सफ़ेद इमारतों के कारण।

एक दिन लावरोव कप्तान के ऊँचे मंच के समीप ऊपर वाले डेक पर जा बैठा। वहाँ अन्य मुसाफिर उसका ध्यान भंग नहीं कर सकते थे। उसने चन्द तेज और मोटी मोटी रेखाओं के रूप में हवा, धुन्ध, रंग-बिरंगे पानी और सुनहरे मार्गों के नीरव संसार के खाके खींच डाले।

साशा ऊँचे मंच पर बैठी जहाज चला रही थी। उसने कुछ चिन्तित होकर पहले लावरोव और फिर आकाश की ओर देखा। वह इसलिए चिन्तित थी कि तेजी से घिरती हुई शाम सारी चमक समेटकर उदासी भरी धुन्ध को पीछे छोड़ती जा रही थी। ''उफ, वह कैसे धीरे-धीरे काम करता है,'' उसने सोचा, ''वह कभी भी अपना काम पूरा नहीं कर पायेगा।''

साशा ने एक रस्सी खींची और जहाज के भोंपू ने लम्बी ऊँची आवाज़ की। इस तरह मार्ग काटती हुई एक नाव को ख़तरे की पूर्वसूचना दी गयी।

जहाज नाव के समीप पहुँचा। लावरोव ने नाव में एक स्त्री को खड़े देखा। वह टकटकी बाँधकर जहाज की ओर देख रही थी। उसकी जाकेट के बटन खुले हुए थी और उसके हाथ में शरदकालीन पत्तों के गुच्छे थे। एक साँवला-सा युवक चप्पुओं के सहारे आराम करता हुआ जहाज की ओर देख रहा था। पत्तों की परछाइयाँ पानी में लहरा रही थीं।

लावरोव को वह स्त्री, अंगूरों के गुच्छों के समान दिखायी देनेवाले और उसके सिर पर से गुजरनेवाले चमकदार बादल और वह समूचा दृश्य ही बहुत सुखद और अपने प्रिय और अद्भुत देश में पाई जानेवाली अद्भुत शान्ति से भरपूर लगा। उसने अभिभूत होकर गहरी साँस ली और साशा को कड़ी नज़र से देखा।

चित्रकार की तूलिका हवा में लहरा रही थी। चित्रकार इस बात की प्रतीक्षा में था कि साशा जहाज रोके और वह अपना काम शुरू करे। मगर साशा के चेहरे पर स्थिरता तथा कठोरता के भाव के अतिरिक्त और कुछ भी दिखायी नहीं दिया।

नाव थोड़ी ही देर में झुटपुटे में हिलती-डुलती सी पीछे छूट गयी। पत्तों पर सूर्य की अन्तिम किरणें चमक उठीं। अँधेरा पत्तों की सुनहरी चमक को निगलने में असमर्थ रहा।

लावरोव आगबबूला हो उठा। उसने रंगों का बक्स समेटा और नीचे अपने कमरे में चला गया। मंच के पास से गुजरते हुए उसने साशा पर एक कड़ी नज़र डाली। वह झेंप गयी और उसने मुँह फेर लिया।

"तो यह बात है!" लावरोव ने सोचा। "ख़ैर बाद में देखा जायेगा।"

अपने कमरे में जाकर उसने गम्भीरतापूर्वक इस बात पर विचार किया कि वह साशा से क्या कुछ कहेगा। इस बार तो उसे साशा को बिल्कुल दोषी सिद्ध करना होगा। किन्तु उस शाम को उसकी साशा से भेंट न हो पाई। अपनी ड्यूटी के बाद वह अवश्य ही सो रही होगी। पर रात भर में उसका उलाहना बासी हो गया और स्वयं को ही मूर्खतापूर्ण लगने लगा। आख़िर वह चाहता क्या था-यही कि उसके लिए जीवन की गति रुक जाये? ऐसा कभी नहीं होगा। ज़िन्दगी एक चौड़ी और बहुरंगी धारा है जो सदा उस क्षितिज की ओर बढ़ती रहती है जिसे हम भविष्य कहते हैं। हम एक बार पिछड़े कि यह धारा फीकी पड़ी कि नज़र से ओझल हुई! तब हम पिछड़कर रह जाते हैं।

"जहाज को न रोककर उसने ठीक ही किया है," लावरोव ने अन्त में निर्णय किया। "मुझे उससे नाराज होने का कोई अधिकार नहीं है।"

एक दिन बाद लावरोव की साशा से डेक पर भेंट हुई। उसने साशा की भूरी और हँसती-लजीली आँखों में झाँकते हुए कहा :

"अवश्य तुम्हारा चित्र बनाऊँगा। मगर अभी नहीं, जाड़े में, मास्को लौटकर। सहमत हो न?"

"ठीक है," साशा ने जवाब दिया। "धन्यवाद, व्लादीमिर पेत्रोविच!" और साशा ने अपना हल्का-फुल्का और विश्वासपूर्ण हाथ लावरोव के हाथ पर रख दिया।

लावरोव ने नदी की ओर देखा। शरद्‌काली अंधकार में बत्तियों की मालाएँ किनारे पर जगमगा रही थीं। ताजगी से भरपूर नम उसाँसें छोड़ती हुई दैत्याकार वोल्गा, रात्रि के समय बिल्लौरी लहरों के रूप में बह रही थी। वह उन बत्तियों के प्रकाश को भाँति-भाँति के, और अज़ीब-अज़ीब आकार देती थी और फिर खण्ड-खण्ड कर डालती थी। जहाज कूइबिशेव पर बनाये गये बाँध के पास पहुँचा।

* * *

दिसम्बर महीने की बात है। साशा त्रेत्याकोव गैलरी में होने वाली एक वार्षि चित्र-प्रदर्शनी देखने गयी। संध्या हो चुकी थी। बरफ के नन्हें-नन्हें फूल बरस रहे थे। खिड़कियाँ मानो किसी शिशिरकालीन महोत्सव के लिए गयी हज़ारों छोटी-छोटी मोमबत्तियों के प्रकाश में जगमगा रही थीं।

बड़े-बड़े कमरे लगभग सूने थे। साशा लावरोव के चित्र को ढूँढती हुई उन्हें जल्दी से पार कर गयीं। उसने उसे दूर से देखा तो उत्तेजना के मारे साँस थामकर रह गयी।

न जाने उस गुमसुम तथा कुछ सीमा तक भद्दे मनुष्य में कौन सी ऐसी शक्ति थी कि वह नदी की उस अद्‌भुत शाम को अपने हृदय पट पर इस सजीव ढंग से अंकित कर पाया और उसने उसमें से एक ऐसी दुनिया खोज निकाली जो वह स्वयं भी देख

नहीं पाई थी। वह कौन सी शक्ति थी? क्या वह प्रतिभा थी? अथवा स्वदेश प्रेम? या दोनों?

''शरद्कालीन पत्तों के गुच्छे हाथ में लिए हुए नाव में जानेवाली उस स्त्री को वह चित्रित कर पाया तो कैसे?'' साशा सोचती रही। ''मैंने तो उस समय जहाज को धीमा नहीं किया था यद्यपि मैं यह भी अच्छी तरह समझ गयी थी कि वह इसकी प्रतीक्षा में था।''

जितनी अधिक देर तक साशा उस चित्र को देखती खड़ी रही उतनी अधिक ही उसकी यह इच्छा हुई कि वह लावरोव को धन्यवाद दे, और शायद यह भी कि श्रद्धापूर्वक उसके नाजुक तथा रंग लगे हाथों को सहलाये।

वह दूर से तस्वीर को देखती खड़ी रही और सहसा उसका हृदय गदगद हो उठा। ''मैं खुश हूँ कि यहाँ आई,'' उसने सोचा। ''हर चीज़ बेहद प्यारी है। यहाँ तक कि यह रूई जैसी बर्फ़ भी, जो धीरे-धीरे गिरती और हमारे चेहरों को चूमती रहती है, बेहद प्यारी है। हर चीज़, बेशक हर चीज़ बहुत प्यारी है!''

1951

ख़ज़ाना

ओका के उत्तर की ओर सारा जंगल सदा से ही ''द्रेमूची''* के नाम से पुकारा जाता है।

आज से कई बरस पहले, तीसरे दशक के आरम्भ में, मैं और अरकादी गैदार, इन जंगलों में मीलों तक दूर-दूर तक घूमे थे।

इस जगह का भ्रमण करते हुए हमने कई बार पुराने और लोकप्रिय रूसी शब्द ''द्रेमूची'' की चर्चा की। हमें रूसी भाषा की सही अभिव्यक्ति की क्षमता से बेहद खुशी होती थी क्योंकि वास्तव में ही घना जंगल ऐसा लगता था मानों ऊँघ रहा हो। न केवल जंगल ही ऊँघते थे, बल्कि झीलें और लाल झलक वाली धीरे-धीरे बहती हुई नदियाँ भी अलसाई हुई थीं। इन नदियों के दोनों किनारों पर दूर तक ऐसे पौधों की पाँतें थीं जिन्हें ''ऊँघनचन्द'' के नाम से भी पुकारा जाता है और ये पौधे इस घने जंगल के अत्यधिक उपयुक्त भी थे। इनके सिर मानों ऊँघते हुए भूमि तक झुके हुए थे।

कई जगह दावानल ने बहुत-से वृक्षों को जला दिया था और झँझावाज ने उलझी-उलझाई शाखाओं को जड़ से उखाड़ फेंका था। ऐसे बहुत से क्षेत्र वीरान पड़े थें। सर्दी की भाप दलदलों के ऊपर बल खा रही थी। मच्छरों और घुड़मक्खियों के दल के दल हवा में भनभनाते फिर रहे थे। वन के बहुत से भागों पर कीड़ों और मकड़ी के लाखों घने जालों ने अपना साम्राज्य स्थापित कर रखा था।

हमने अनेक बार यह आशा व्यक्त की थी कि सोवियत सरकार शीघ्र ही इन उपेक्षित क्षेत्रों की ओर ध्यान देने का समय निकालेगी और आख़िरकार मनुष्य उस प्राकृतिक धन को अपने अधिकार में ले लेगा जो नष्ट हो रहा था।

एक जंगली मैदान को ''सरकारी खड्ड'' के नाम से पुकारा जाता था। वहाँ एक छिछली नहर के तट पर पुरानी और एक कमरे वाली एक कुटिया थी। इसके सभी ओर ऊँची-ऊँची नुकीली घास उगी हुई थी। इसी ''सरकारी खड्ड'' अर्थात छोटी नहर के कारण इस मैदान का नाम भी ''सरकारी खड्ड'' ही पड़ गया था।

यह नहर पिछली शताब्दी के सातवें दशक में ''महान दलदल'' को सुखाने के लिए बनाई गयी थी। किन्तु इंजीनियरों ने अवश्य ही अपना काम ढंग से नहीं किया

---

* रूसी शब्द ''द्रेमूची'' का अर्थ है : ''घना, पुराना''। यह शब्द ''द्रेमात्'' धातु से निकला है जिसका एक और अर्थ ऊँघना भी है।-सं.

होगा क्योंकि दलदल सूखी नहीं थी। यह नहर इस भूमि को सुधारनेवाले स्थानीय कार्यकर्ताओं की असफलता की याद दिलाती थी।

गर्मी के मौसम में यह कुटिया तारकोल पकानेवाले वृद्ध वसीली और उसके नौ वर्ष क बेटे तीशा का निवासस्थान बन जाती थी।

एक बार हम रात भर वसीली के साथ ठहरे।

संध्या हो रही थी और पीली-पीली धुन्ध मैदान में फैली हुई थी। टिड्डे टीं-टीं करते ओर फुर्ती से राल के वृक्षों के ठूँठों में कूदते फिर रहे थे। धुँधला सूर्य झाड़ियों के पीछे अस्त हो रहा था। नहर में छोटी-छोटी मछलियाँ पानी छपछपाती इधर-उधर फिर रही थीं और जलमूषकों का किकियाना सुनाई पड़ रहा था।

बहुत उमस थी। कुटिया की दीवार पर एक धुँधला सा शिलामुद्रित चित्र लटक रहा था जिस पर लिखा था : ''शिशिर-प्रसाद पर क़ब्जा''।

हम अपने साथ रस्क और चीनी लाए थे। वसीली ने तीशा को समोवार गर्म करने के लिए कहा।

चाय पीते-पीते वसीली ने अपनी आस्तीन से माथे का पसीना पोंछते हुए कहा :

''हमारे काम में एक खूबी है कि हम काफ़ी लम्बी उम्र तक जीवित रह सकते हैं। तारकोल पकानेवाले हम लोग बहुत स्वस्थ होते हैं, क्योंकि हम हर समय तारकोल से तर-ब-तर रहते हैं। कोई भी बीमारी हमारे पास तक नहीं फटकती। यहाँ तक कि मच्छर भी दूर रहते हैं। किन्तु अगर आप जरा अधिक गौर से सोचें तो हमारी ज़िन्दगी में है ही क्या! तारकोल, कोयला, ऊसर, धुआँ और बस। सिर्फ यही ऊसर भूमि!'' उसने दुहराया और बड़ी सावधानी से बर्फ़ जैसी सफ़ेद चीनी को पर्याप्त मात्रा में तारकोल से काली हुई उँगलियों से उठा लिया। ''देश का यह कोना सदा से ही उपेक्षित है। ऐसा लगता है कि सरकार इसे बिल्कुल भूल चुकी है।''

हो सकता है, अभी हमारी बारी ही न आई हो,'' तीशा ने सुझाया।

''यदि केवल एक बार मुझे मास्को में बुलाकर इस बारे में मेरी राय ली जाती तो मैं उन्हें बहुत कुछ बता सकता! अरकादी पेत्रोविच, क्यों न एक बार मास्को जाने की योजना बनाई जाये? मास्को में चन्द दिन ठहरने की योजना, क्यों?''

''यह आसान काम नहीं है,'' गैदार ने कहा। ''और इसके अतिरिक्त यहाँ तो तुम बड़े जोश में हो, पर वहाँ जाते ही तुम्हारे मुँह में ताला पड़ जायेगा, तुम एक शब्द भी नहीं बोलोगे।''

''ऐसी बात नहीं है,'' तीशा ने विरोध करते हुए कहा। ''दादा बड़े दिलेर आदमी हैं।''

''बहुत खूब, तीशा! तुम ही करो दादा की वकालत!'' वसीली चिल्लाया।

''और मास्को में तुम उन्हें क्या बताओगे?'' गैदार ने पूछा।

''सबसे पहले अपने जंगल के बारे में बताऊँगा। कैसा अद्‌भुत है यह जंगल!

फिर हमारे इस जंगल में जीर्णक ही जीर्णक भरा पड़ा है। ढेरों जीर्णक हर प्रकार के किटाणुओं की जन्मस्थली बना हुआ है। ये कीड़े वृक्षों को काटते रहते हैं। जहाँ तक झीलों का सम्बन्ध है तो वे गिरे हुए बलूत के वृक्षों से ऐसे अटी पड़ी हैं कि नाव को थोड़ी दूर तक भी अबाध गति से चला पाना असम्भव है! और उन बलूत के ठूँठों के नीचे डाकुओं की भाँति छिपी हुई इस तश्तरी जैसी बड़ी-बड़ी काली मछलियाँ हैं।'' और वसीली ने धातु की बनी उस तश्तरी की ओर संकेत किया जिस पर समोवार रखा था और किसी कारुणिक गीत में डूबा हुआ उसाँसें भर रहा था।

''दलदल जीर्णक से भरपूर है! नदियाँ छछूँदरों, ऊदबिलावों तथा बड़ी बड़ी मछलियों से भरी पड़ी हैं। फिर सिर्फ जंगल की ही क्या बात है! ओका नदी के साथ साथ सैकड़ों मीलों तक फैले हुए तटीय चरागाहों की कल्पना करो, ये चरागाह फूलों की सुगन्धि से कुछ ऐसे महके हुए हैं कि मन बस वहीं का होकर रह जाता है! पर मैं देखता हूँ कि चरागाहों की घास भी अब खराब होती जा रही है। ऊँचा-ऊँचा मोथा, बबूल की झाड़ियाँ और छोटी छोटी सरई जड़ जामाती जा रही है। और इस प्रकार, जैसा कि कहा जाता है, हमारा प्रदेश नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है। एक बार कोई इसकी सुध तो ले। यह तो सोने की खान बन जाये!''

अगली सुबह हम जल्दी ही उठ बैठे। ऐसा गहरा सन्नाटा था कि उल्टी हुई बाल्टी पर छत से गिर रही ओस की बूँदों की आवाज़ तक भी सुनी जा सकती थी।

सूर्योदय हुआ ही था। सूर्य इस समय पिछली शाम की भाँति धुँधला नहीं था बल्कि उजला था। रात्रि के समय भरपूर नींद लेने के बाद बहुधा सभी के चेहरे पर ऐसी चमक होती है!

हम नहर के साथ साथ किसी ऐसे स्थान की खोज में चल रहे थे जहाँ ग़ोता लगाने लायक़ गहरा पानी हो।

''जरा ठहरो,'' गैदार ने चौंक कर कहा, ''वह उन झाड़ियों के पीछे क्या है?''

''वह'' सात साल की एक लड़की निकली। हमें देखकर वह पीत-हरी झाड़ी के पीछे छिप गयी थी।

हम उसके पास गये। वह घास में छिपी, अपनी सहमी-सहमी, बड़ी-बड़ी और नीली आँखों से हमारी ओर देख रही थी। उसके पास ही साफ़ कपड़े के टुकड़े से ढका हुआ दूध का एक घड़ा रखा था।

लड़की लम्बा काला साया पहने थी और पीला शाल ओढ़े थी जिसका रंग फीका पड़ चुका था। जाहिर था कि यह पोशाक उसे अपनी बड़ी बहन से ''उतार-पुतार'' के रूप में मिली थी।

''कौन हो तुम?'' गैदार ने पूछा।

''मैं शमूरिनों की रहनेवाली हूँ,'' लड़की ने जल्दी से कहा, उछलकर खड़ी हुई और साये के पल्ले पर पैर आ जाने के कारण गिरते गिरते बची। ''हमारा गाँव वहाँ

नहर के उस पार है। वहाँ कुल मिलाकर केवल नौ मकान हैं।''

''ओह, तो तुम तीशा की बहन हो।''

''जी हाँ, लीज़ा हूँ। तीशा जाड़ों में स्कूल जाता है। वह चौथी श्रेणी में पढ़ता है।''

''और तुम?''

''मैं अभी पढ़ने नहीं जाती। मैं बहुत छोटी हूँ। मैं हर सुबह यहाँ दूध लेने के लिए आती हूँ। कृपया बतायें, आप कौन हैं?''

''हम दिलेर मुसाफ़िर हैं,'' गैदार ने कहा, ''हम उस जलते हुए सफे द पत्थर की खोज कर रहे हैं जिसके नीचे एक तिलस्मी ख़ज़ाना छिपा है। क्या तुमने ऐसा पत्थर देखा है?''

''नहीं, मैंने तो नहीं देखा,'' उसने व्यग्रता से जवाब दिया। ''हो सकता है, किसी अन्य ने देखा हो, मैंने नहीं। वह ख़ज़ाना देखने में कैसा लगता है?''

''बड़ी होने पर सब जान जाओगी।''

उस दिन हम मैदान में अधिक देर नहीं ठहरे। फिर से हमारे सम्मुख चीड़ की नुकीली-सिन्दुरी पत्तियों के कारण फिसलनी बनी हुई सूनी वन-पगडण्डी थीं। चीड़ के वृक्षों की चोटियाँ ताल देती हुई झूम रही थीं। आकाश में बादल धीरे-धीरे लुप्तप्रायः होते जा रहे थे और कठफोड़वा चिड़ियाँ क्रोधपूर्ण वक्र दृष्टि से हमारी ओर देखकर सूखे वृक्षों पर चोंच-प्रहार कर रही थीं।

* * *

यह बीस वर्ष पूर्व की बात है। इन पिछले वर्षों की, शताब्दियों से तुलना की जा सकती है। हमारे देश का एक भी तो ऐसा कोना नहीं जिसका रूप-रंग न बदला हो।

जहाँ कई बरस पहले मैंने और गैदार ने चक्कर लगाया था, ओका के उस पार के बारे में मेरी जिज्ञासा स्वाभाविक ही थी। मैं संध्या को काफ़ी देर से एक लारी में बैठकर अस्थायी पुल पर पहुँचा। पुल अभी-अभी ऊपर उठाया गया था। शक्तिशाली बड़ी नाव, जो बजरों की कतार को खींच रही थी, बहाव की उल्टी दिशा में बढ़ पाने के लिए अपना पूरा कस-बल लगा रही थी। बजरों के डेकों पर नई ''पोबेदा' कारें लदी हुई थीं।

मैं लारी से बाहर निकला। मैंने नदी के पास से आती हुई असाधारण रूप से सुगन्धित हवा को जी भरकर अपनी साँसों में समेटा।

''यह त्रिपत्ती घास की सुगन्ध है,'' बड़ी आयु के मोटर ड्राइवर ने कहा। ''यहाँ अब सभी चरागाहों में त्रिपत्ती घास उगायी जा चुकी है।''

शीघ्र ही हम इन चरागाहों में पहुँच गये। मैं उनमें उगी गीली ठण्डी घास को

अनुभव कर सकता था यद्यपि अंधकार के कारण वह दिखायी न दे रही थी।

''यहाँ कहीं आस-पास ही तीखोन चेरनोव से आपकी भेंट होना निश्चित है,'' ड्राइवर ने कहा। ''वह स्थानीय जिला कार्यकारिणी का प्रधान है। क्या कभी उसका नाम सुना है?''

''नहीं।''

''गज़ब का आदमी है! नई रोशनी, नये जमाने का प्रतिनिधि है।'' (मेरा ड्राइवर एक वैज्ञानिक की सी सही भाषा में बात करना पसन्द करता था। वह अपनी मोटर को ''आन्तरिक अग्निदग्ध इंजन'' कहता था और पौधों की यों चर्चा करता था : ''वनस्पति हमारी नज़रों के सामने प्रगति कर रही है।'') ''तो आपने चेरनोव के बारे में कुछ नहीं सुना?''

''मैं पिछले बीस वर्षों से इन प्रदेशों में नहीं आया। भला मैं कैसे सुन सकता था?''

''बीस वर्ष तो काफ़ी लम्बा अरसा है,'' ड्राइवर ने सहमति प्रकट की और कहा : ''तब तो आप इन प्रदेशों को कभी नहीं पहचान सकेंगे। अब तो आप हमारे इन चरागाहों में मशीनों की फौज की फौज देखेंगे-कीचड़ सुखाने, झाड़ियाँ काटने, घास बोने तथा खन्दकें खोदनेवाली मशीनों की एक अच्छी खासी प्रदर्शनी आपको यहाँ देखने को मिलेगी। चरागाहों से सम्बन्धित सभी मशीनरी यहाँ जुटा दी गयी है। इसे ही तो मैं प्रकृति का पुनर्निर्माण कहता हूँ।

''किन्तु पोल्यानी में हम रात कहाँ गुजारेंगे? हमें काफ़ी अबेर हो चुकी है,'' उसने कुछ देर तक चुप रहकर कहा।

हमने यह निर्णय किया कि जिस किसी मकान में हमें सबसे पहले बत्तियाँ जलती दिखायी देंगी हम वहीं ठहर जायेंगे।

गाँव आरम्भ होते ही हमें दो प्रकाशपूर्ण खिड़कियों वाला एक मकान दिखायी दिया।

''ओह, यह तो स्कूल है,'' ड्राइवर खुशी से चिल्लाया। ''यहाँ एक अध्यापिका रहती है। लोगों का कहना है कि वह भी नई रोशनी की प्रतिनिधि है।''

हमने दस्तक दी। लम्बी काली चोटियों वाली एक लड़की ने दरवाज़ा खोला। उसने हमें स्कूल के खाली भवन में ठहरने की स्वीकृति दे दी। और साथ ही चाय पीने का निमंत्रण भी दिया।

हमने चाय का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया। किन्तु वह बहुत नम्रतापूर्वक हमें अपने कमरें में ले गयी। मैंने रोशनी में उसे देखा तो ऐसा लगा कि उस जैसा सुन्दर चेहरा मैंने पहले कभी देखा ही नहीं। उसकी शर्मीली गहरी नीली आँखें तो विशेष रूप से सुन्दर थीं।

मेज़ पर गैदार का एक छायाचित्र रखा था। मैंने गौर से लड़की की ओर देखा।

''क्या आप मुझे पहचानती हैं?''

लड़की ने मेरी ओर देखा और सिर हिलाकर इंकार किया।

''क्या आपको गैदार का स्मरण है?''

''बेशक,'' लड़की ने कहा। ''तनिक रुकिये, तब शायद आप ही उनके साथ 'सरकारी खड्ड' में आये थे। ओह, यह भी खूब भेंट हुई आपसे!''

''और आप लीज़ा हैं न?''

''हाँ, मैं लीजा हूँ। मैं ज़रा केतली चढ़ा दूँ-हम अवश्य ही कुछ देर बातचीत करेंगे। मेरा भाई भी जिला कार्यकारिणी समिति से लौटनेवाला ही है।''

''तीशा ही न?''

''हाँ, हाँ, वही? वह हमारा प्रधान है।''

''तो हमारा तीर ठीक निशाने पर ही बैठा,'' ड्राइवर ने अपनी सफलता पर खुश होते हुए कहा।

''यह तो सचमुच कमाल ही हो गया,'' लीजा ने मेज लगाते और खुलकर हँसते हुए कहा। उसके गाल गुलाब की तरह खिले हुए थे और खुशी से साँस फूली हुई थी। ''आप जानते हैं, यहाँ से जाने के बाद गैदार ने तिलस्मी ख़ज़ाने के बारे में मुझे मास्को से एक पत्र लिखा था। तब मैं बहुत छोटी थी और पढ़ना न जानती थी। इसलिए तीशा ने मुझे वह पत्र पढ़कर सुनाया था। मुझे उस पत्र में जो बात सबसे अधिक पसन्द आई थी, वह यह थी-'हमें ख़ज़ाना नहीं मिला यद्यपि हमने पास से गुजरनेवाले जंगली जानवरों और पक्षियों तक से उसका पता पूछा। और तब हमारी भेंट नाटे क़द के श्वेत केशों वाले एक वृद्ध से हुई जो खुमियाँ इकट्ठी कर रहा था। उसने हमें विश्वास दिलाया कि सफ़ेद पत्थर के नीचे दबा हुआ कोई ख़ज़ाना न तो है और न पहले कभी था। उसने कहा कि दुनिया में केवल एक ही असली ख़ज़ाना है और वह है नेकदिल। इसलिए लीजा, नेकदिल बनो, और खूब पढ़ो भी।' जब कभी कोई अवांछित बात हो जाती है तो मैं उस पत्र को फिर से पढ़ लेती हूँ और तब मैं फिर से अपने हृदय को शान्त पाती हूँ।''

''मनुष्य की मनोवृत्ति पर सदुपदेश का प्रेरणादायक प्रभाव होता है,'' ड्राइवर ने विचार प्रकट किया।

''और वसीली कैसा है? जीवित है?'' मैंने पूछा।

''नहीं, उनका देहान्त हो चुका।''

''क्या वह अन्त समय तक यही कहता रहा कि मौत तारकोल साफ़ करने वालों के निकट कभी फटकती तक नहीं ?''

''यह तो उनके कहने का एक ढंग ही था। वे तो दुनिया के किसी भी स्थान को अपने जन्मस्थान जैसा श्रेष्ठ नहीं मानते थे। वे सदा यही कहते थे कि यहाँ की भूमि सोने की खान है। काश! वे अब इस प्रदेश को आकर देख सकते! अब चरागाहों में

से झाड़ियाँ साफ़ की जा रही हैं और उन ज़मीनों को उपजाऊ बनाकर और उनमें हल चलाकर चारे के काम आनेवाली अच्छी किस्म की घास उगाई जा रही है। अब आप उन चरागाहों को पहचान नहीं सकेंगे, वे तो वास्तविक उपवन बन गये हैं। अब यहाँ एक पन-बिजलीघर है और वनों की अच्छी देखरेख होती है। तमाम सड़ी हुई लकड़ी हटाई जा चुकी है, आग बुझाने के मार्ग साफ़ कर दिये गये हैं और खाली पड़ी भूमि पर देवदार के वृक्ष उगाए जा चुके हैं। 'सरकारी खड्ड' के क्षेत्र में भी जंगल खड़ा हो गया है-रोंएदार चीड़ के वृक्ष झोपड़ी के बराबर ऊँचे हो चुके हैं और इतने घने हैं कि बड़ी कठिनाई से उनके बीच में से गुजरा जा सकता है।''

''सारा श्रेय तीखोन इवानोविच को है,'' ड्राइवर ने कहा।

''हाँ, तीशा बहुत अधिक मेहनत करता है,'' लीज़ा ने स्वीकार किया। ''वह भूमि सुधारनेवाला इंजीनियर है, और मैं अध्यापिका हूँ। मैं रूसी भाषा और साहित्य पढ़ाती हूँ।''

हम बहुत देर तक बातचीत करते रहे, पर तीशा नहीं लौटा। मैं अगली सुबह जिला कार्यकारिणी के दफ़्तर में उससे मिला। दफ्तर का कमरा प्रकाशपूर्ण था और रगड़कर धोया गया फर्श उस समय धूप में सूख रहा था। खिड़कियाँ पूरी खुली हुई थीं और उनके पीछे धुन्ध में लिपटे हुए चरागाह थे। झीलें जहाँ-तहाँ अभ्रक की भाँति चमक रही थीं।

मैं पहली ही नज़र में इस दुबले-पतले आदमी यानी तीशा को पहचान न पाया। वह फौजी वर्दी पहने था जिसके कन्धे पर की फीतियाँ ग़ायब थीं। उसकी छाती पर ''लाल सितारे'' वाला पदक लगा था। वह दाढ़ी बनाए हुए और साफ़-सुथरी पोशाक पहने था। हाँ, रात भर के जागरण की छाप उसके चेहरे पर स्पष्ट अंकित थी।

तीशा (मेरे लिए वह अब भी तीशा था, यद्यपि अन्य सभी के लिए वह तीखोन इवानोविच था) इस विषय पर बातचीत करता हुआ संकोच अनुभव कर रहा था कि कैसे एक तारकोल पकानेवाला लड़का इंजीनियर और जिला कार्यकारिणी समिति का प्रधान बन गया है। उसने यह कहकर मेरा मुँह बन्द कर दिया :

''इसमें कौन सी विशेष बात है? मेरे जैसे अनेक हैं...''

दागों वाली एक लम्बे आदमी ने जो ड्राइवर था, खुली खिड़की में से अपना सिर अन्दर बढ़ाते हुए कहा :

''तीखोन इवानोविच, अब चलना चाहिये। वे बन्द रहकर तंग आ गये हैं और शीघ्र ही पिंजरों को टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। उनके थूथने ऐसे भयानक हैं कि देखने से डर लगता है।''

''फ़िक्र मत करो, वे तुम्हें हड़प नहीं जायेंगे,'' तीशा ने कहा। ''हम अभी चलते हैं।'' मेरी ओर मुड़ते हुए उसने बताया, ''हमने श्वेत नदी में ऊदबिलाव पालने शुरू कर दिये हैं। कुछ लोग वोरोनेज के निकट से उनका एक नया झुण्ड पकड़कर लाए

हैं। क्या आप वहाँ चलना पसन्द करेंगे? आप पुरानी जगहों को देख सकेंगे।''

मैंने हामी भरी और हम लारी में जा बैठे। बड़े-बड़े बक्सों में बन्द ऊदबिलाव, बेचैनी से इधर-उधर घूमते हुए गुर्रा रहे थे। गाँव की समाप्ति पर लारी एक जंगल में दाखिल हुई और एक सख़्त और रेतीली सड़क पर चढ़ी।

बीस बरस पहले यह जगह गिरे हुए वृक्षों के ढेर से अटी पड़ी थी। अब वहाँ अखरोट तथा हपुषा के घने झुरमुट थे।

इस वातावरण में साँस लेकर तो मनमोर खुशी से नाच उठा। शायद इसीलिए अप्रत्याशित ही तीशा ने कहा :

'' 'कुसुमित उपवनों के समान सुरभित हे वनस्थलों,' निस्सन्देह वे कुसुमित उपवन ही हैं।''

हमने लारी को पन-बिजलीघर के समीप वन की एक नदी के तट पर रोक दिया। ऊपर ऊँचे-ऊँचे चीड़ के वृक्षों के बीच से दुपहरी की तेज हवा बह रही थी जिसके कारण सारा जंगल समुद्र की लहरों की भाँति सरसराता हुआ झूम रहा था। किन्तु नीचे की ओर बिल्कुल निश्चलता थी क्योंकि हवा भूमि को तो छू ही नहीं पाती थी।

पन-बिजलीघर चुपचाप काम कर रहा था। केवल बाँध की ओर से पानी की धीमी कल-कल ध्वनि आ रही थी और भवन के भीतर कोई 'सादको' का यह गीत गा रहा था-''अगणित हीरे छिपे हुए हैं, बीच गुफाओं के!''

मैंने इससे पहले कभी इतना छोटा पन-बिजलीघर नहीं देखा था। देवदारू के लट्ठों से बना हुआ यह बिजलीघर भीतर से ठण्डा और इतना साफ़ था कि कहीं एक धब्बा तक भी दिखायी न देता था। वहाँ राल की गन्ध आ रही थी। खुली हुई खिड़कियों में से अखरोट के वृक्ष की शाखाएँ अन्दर घुस आई थीं। कत्थई रंग का एक युवक खिलाड़ियों की कमीज पहने एक स्टूल पर बैठा था।

''हमारा विद्युत-विशेषज्ञ,'' उसका परिचय देते हुए तीशा ने कहा।

''तीखोन इवानोविच, मैं अभी गीति-नाट्य के वे सभी गीत गा रहा था जो मैं जानता हूँ,'' उसने कुछ असमंजस के साथ कहा, ''सिर्फ वक़्त काटने के लिए।''

''मतलब यह कि घर बैठे-बैठे ही बोल्शोई थियेटर का मजा ले रहे हो,'' तीशा तनिक मुस्कराया और फिर मेरी ओर मुड़कर कहने लगा : ''यह बिजलीघर हमने खुद बनाया है, स्थानीय सामूहिक किसानों ने-अच्छा-खासा खिलौना है न! शीघ्र ही हम लिन्योवोये झील के समीप एक बड़े अन्तर्सामूहिक फार्म बिजलीघर का निर्माण आरम्भ करने वाले हैं। उसमें जीर्णक जलाया जायेगा और तब हम बिजली की सहायता से भूमि जोतेंगे, दूध दुहेंगे और बिजली के आरों से जंगल में काम करेंगे।''

मैं लिन्योवोये झील के पहले भी देख चुका था और मेरे लिए यह कल्पना तक करना कठिन था कि थोड़े ही समय में वहाँ एक बिजलीघर बन जायेगा। बीस बरस पहले लिन्योवोये झील इतनी वीरान थी कि बनवासियों के अनुसार वहाँ कोई पंछी

तक बसेरा नहीं करता था।

हवा में कुछ अज़ीब-सी ताजगी थी जो हमें दिन भर महसूस होती रही। यह ताजगी हर वस्तु-देवदारू और बर्च वृक्षों के तनों, घास और पत्तों, यहाँ तक कि हवा और बन-झीलों के पानी में चमचमाती, चमकती और फैलती देखी जा सकती थी।

''हैरान हुए जा रहे हैं न?'' तीशा ने कहा। ''आपको याद है कि यहाँ कैसा अँधेरा-अँधेरा सा था-और फिर वह सड़ायंध? अब यह जंगल खुलकर साँस ले सकता है।''

पन-बिजलीघर से हम श्वेत नदी की ओर गये। वहाँ की प्रकृति वनप्रदेश की विशिष्ट नीरवता लिए, शान्त थी। बहते हुए पानी में हरे-हरे देवदार वृक्षों की परछाइयाँ दिखायी दे रही थीं। मौन और गम्भीर प्राणीविज्ञान शास्त्री आया और उसने पिंजरों के दरवाज़े खोलकर ऊदबिलावों को बाहर निकाला। पानी में जाने से पहले उन्होंने तैयार होने में काफ़ी समय लगाया। हमारी तनिक भी परवाह न करते हुए उन्होंने पंजों से अपनी रोयेंदार खाल को सँवारा।

''क्या सलीकेदार जानवर हैं,'' ड्राइवर ने प्रशंसा करते हुए ऊँचे स्वर में कहा, ''पानी को गन्दा नहीं करना चाहते।''

शाम होने तक हम ''सरकारी खड्ड'' पर पहुँच गये। जंगल में काम करनेवाले लोग लट्ठों की बनी अनेक झोपड़ियों में रहते थे, किन्तु वह पुरानी झोंपड़ी अभी भी कायम थी और देवदार के फलों को सुखाने के काम में लायी जाती थी।

तीशा और मैं, थोड़ी देर के लिए नहर के किनारे बैठकर पूरब की ओर से बढ़ते हुए रात्रि के अंधकार को देखते रहे। बड़ी-बड़ी मछलियाँ पानी में छपछपा रही थीं।

''मेरे ख़्याल में ये विशेष किस्म की बड़ी मछलियाँ हैं,'' तीशा ने कहा। ''जब वसीली दादा जीवित थे तो यहाँ केवल छोटी-छोटी मछलियाँ थीं। आप ठीक ऐसे समय आये हैं जब यहाँ की हर चीज़ अपने जोबन पर है। सबसे अच्छा मौसम है। क्या आपने चरागाह देखे हैं?''

''नहीं, अभी तक नहीं।''

कुछ देर रुककर तीशा ने कहा :

''यहाँ कोई ऐसा जिला नहीं, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, जिसका उज्ज्वल, बहुत उज्ज्वल भविष्य न हो। सम्भवतः आप लीजा से ख़जाने की कहानी सुन चुके हैं। निस्सन्देह 'नेक दिल' खुद भी एक बहुत बड़ा खजाना है। लेकिन जैसे मैं देखता हूँ, हर जिले में एक खजाना दबा पड़ा है और मैं अपनी इस धरती को दुनिया की अन्य किसी जगह से बदलने को तैयार नहीं हूँ। इसे निकृष्ट और दलदली कहा जाता था। यहाँ भूरी मिट्टी, आलू, मच्छर, गीली और सड़ी हुई लकड़ी के अतिरिक्त कुछ न होता था। किन्तु अब इसे देखें तो! और याद है लोग कैसे उसकी उपेक्षा करते हुए कहा करते थे-'फिर कभी देखा जायेगा', 'अब नहीं', 'यह हमारे लिए नहीं',

'यह हमारे बस का रोग नहीं' इत्यादि। किन्तु देखते हैं अब वही लोग कैसे बदल चुके हैं? उन्हें अपने पर और अपने उज्ज्वल भविष्य पर विश्वास है। मैं हरेक को जल्दी-जल्दी करने को कहता हूँ और और हरेक मुझे जल्दी करने को कहता है-'आइये, अब चलना चाहिये', यही शब्द मैं हर समय सुनता रहता हूँ। लोग नये जीवन के लिए बेकरार हैं-वे हर चीज़ के इच्छुक हैं। वे जल-विद्युत स्टेशन, नये स्कूल, प्रादेशिक केन्द्र से मिलानेवाली सड़कें बनाना चाहते हैं। वे जीर्णक के ज़खीरों का उपयोग करना चाहते हैं और औषधियों के काम में आनेवाली जड़ी-बूटियों को एकत्रित करना चाहते हैं। वे नई नसल के पशु पालना और जंगल और बाग लगाना चाहते हैं। यहाँ तक कि मधुमक्खियों को पालने का काम भी योजना में शामिल है। इस तरह करने के लिए लाखों काम हैं, यद्यपि यह ठीक है कि सरसरी नज़र से देखने से जिले की क्षमता बहुत अधिक दिखायी नहीं देती। किन्तु निस्सन्देह, हमारी मुख्य चीज़ चरागाह है। चन्द दिनों तक प्रादेशिक समिति का मन्त्री, क्रेमलिन जाकर ओका की बाढ़वाली भूमि को मास्को के दूध-केन्द्र में परिवर्तित करने के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करेगा। हमने एक सम्मेलन में यह निर्णय किया है कि सरकार को अपने साधनों और काम की सम्भावनाओं से परिचित करायें और अपने चरागाहों को उनके वास्तविक स्वरूप में प्रदर्शित करें। केवल विवरणमात्र प्रस्तुत करने से काम नहीं चलेगा। हम वह दिखाना चाहते हैं जो हमारे पास है। इसलिए हम यहाँ पैदा होने वाली सभी तरह की घास और सभी तरह के फूल मास्को भेज रहे हैं। हर सम्भव किस्म-सो भी ताजा काटकर।''

''किन्तु ताजा काटी गयी घास और फूलों को मास्को कैसे भेजा जायेगा?''

''पानी के टबों में, कार द्वारा। और ये केवल फूलों के गुच्छे ही नहीं होंगे, बल्कि पूरी की पूरी टहनियाँ।''

* * *

कुछ ही दिनों बाद उन्होंने तरह-तरह की घास और फूल इकट्ठे करने शुरू करने शुरू कर दिये।

इस काम का उत्तरदायित्व लीजा को सौंपा गया था। उसने स्कूल के सभी बड़े बच्चों को एक साथ बुला लिया था और जब मैं वहाँ पहुँचा तो लगभग तीस लड़के और लड़कियाँ स्कूल-भवन के समीप पड़े हुए लट्ठों पर बैठे इस विषय पर गर्मागर्म बहस कर रहे थे कि अधिकतम किस्मों के अधिकतम फूल एकत्रित करने के लिए कौन से चरागाह सर्वोत्तम रहेंगे। कुछ ने स्तारित्सा के तट का सुझाव दिया, दूसरों ने स्टुडेनेत्स झील का, जबकि अन्य ने ख़ूवोश्ची नामक रहस्यमय क्षेत्र के हक में दलीलें दीं।

माथे पर हिलती हुई बालों की लटवाली सबसे छोटी लड़की का अपना अलग-अलग

मत था।

"तुम सब बिल्कुल ग़लत हो," वह रुआँसी-सी आग्रहपूर्वक कह रही थी। "हमें 'शान्त नदी-घाटी' की ओर जाना चाहिये। वहाँ हर किस्म के फूल मिल जाते हैं।"

हाँ, फूलों को या तो सूरज निकलने से पहले ही इकट्ठा कर लेना चाहिये या गर्मी के कम होने के बाद सूर्यास्त होने से पहले। अन्यथा वे शीघ्र ही मुरझा जाते हैं।

सूर्यास्त होने से पहले जाने का निर्णय हुआ, और यह भी कि तोड़ने के बाद उन्हें पोल्यानी में लाकर छाँटा जाये और उसी रात मास्को के लिए रवाना कर दिया जाये।

मैं, लीजा और बालकों के साथ शामिल हो गया। मेरे ड्राइवर समेत बड़ी आयु के अन्य कई लोग भी साथ थे।

हरेक ने बड़े से बड़ा फूल तोड़ने का यत्न किया। हरेक ने अपने फूल को सर्वोत्तम समझा।

जब हम चरागाहों से लौटे तो रात हो चुकी थी। सूरज छिप चुका था और झीलों की सतह पर कुहरा जम चुका था। तराई में सस्य कुक्कुटियाँ शोर मचा रही थीं।

जंगली गुलाब जो जून की चाँदनी रातों में खिलता है, फूला हुआ था।

साफ़ और धुँधले पड़ते आकाश में एक जेट हवाई जहाज श्वेत रंग का धुआँ पीछे छोड़ता हुआ गुजरा। धुआँ ऊपर मन्द-मन्द चमकते सितारे की ओर तेजी से चला गया। इस धुएँ और सितारे का प्रतिबिम्ब स्तारित्सा के पानी में दिखायी दिया और साँयकालीन आकाश की अथाह गहराई उसमें झलक उठी।

रात्रि के सहमे-सहमे साये झील के तट पर दिखायी देने लगे थे, किन्तु फूल अभी तक छिपते सूर्य की अन्तिम छवि में चमक रहे थे। किसी बुलबुल ने एक धीमी-सी तान हवा में छोड़ी और फिर इस डर से कि कहीं रात की नीरवता भंग न हो जाये, चुप हो गयी।

वृहस्पति-ग्रह क्षितिज पर काले जंगल के ऊपर दिखायी दिया और चरागाहों, सरपत की झाड़ियों, धुन्ध और हमारी अत्यधिक परिचित और प्यारी भूमि के ऊपर, धीरे-धीरे आकाश में ऊँचा चढ़ने लगा।

1953

टर्र-टर्र
(एक काल्पनिक कहानी)

पूरे एक महीने तक लगातार गर्मी पड़ती रही। बालिगों का कहना था कि गर्मी को देखा भी जा सकता है।

''गर्मी कैसे देखी जा सकती है?'' तान्या प्रत्येक से यह प्रश्न पूछती रही।

तान्या पाँच वर्ष की थी। वह उस आयु की थी जब प्रतिदिन नई बातें सीखी जाती हैं। ग्लेब चाचा सोलहों आने सही थे जब उन्होंने यह कहा कि यदि तुम तीन सौ बरस भी जीती रही तो भी सब बातें नहीं जान पाओगी।

''ऊपर चली आओ, मैं तुम्हें गर्मी दिखाऊँगा। तुम उसे वहाँ से अच्छी तरह देख पाओगी,'' ग्लेब ने कहा।

तान्या सीधी खड़ी सीढ़ी से ऊपर चढ़ी। अटारी प्रकाशपूर्ण, किन्तु धूप से जलती हुई छत के कारण गर्म थी। घर के बाहर उगा हुआ छायादार वृक्ष अपनी शाखाओं को खिड़कियों से अटारी के भीतर तक पहुँचाने का कठिन प्रयास कर रहा था। इसी कारण खिड़कियों को बन्द करना कठिन हो गया था। और सम्भवतः इसीलिए उन्हें गर्मी भर के लिए खुला छोड़ दिया गया था।

अटारी का एक छज्जा था जिसके जंगले पर खुदाई का काम किया हुआ था। ग्लेब तान्या को छज्जे में ले गया और उसे नदी के पार के चरागाहों और दूरवर्ती जंगलों को देखने के लिए कहा।

''समोवार से निकलते धुएँ जैसे उसे पीले बादल को देखती हो? और उस काँपती हुई हवा को? वह गर्मी है। हाँ, तुम गर्मी, जाड़ा और जो भी चाहो, देख सकती हो।''

''जाड़ा तब होता है, जब बर्फ़ पड़ती है, है न?'' तान्या ने पूछा।

''केवल तभी नहीं। तुम उसे गर्मी में भी देख सकती हो। तुम केवल ठण्डे दिनों के आने का इन्तजार करो और तब मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि ठण्डक कैसी होती है।''

''किसके जैसी होती है?''

''संध्या समय आकाश गीली घास की भाँति हरा होता है। तब आकाश ठण्डा होता है।''

किन्तु इसी बीच तेज धूप से सभी कुछ झुलसा जाने लगा और जिसे गर्मी के कारण सबसे अधिक कष्ट हुआ, वह थी एक मेंढकी, जो अहाते में बड़ी झाड़ी के नीचे रहती थी।

धूप के कारण अहाता ऐसे तप उठा कि हर छोटे-से छोटा जीव भी कहीं छाया में जा छिपा। यहाँ तक कि चीटियाँ भी अपने बिलों से बाहर न निकलकर धैर्यपूर्वक संध्या होने की प्रतीक्षा कर रही थी केवल टिड्डे ही गर्मी के बारे में निश्चिंत दिखायी देते थे। ज्यों-ज्यों गर्मी बढ़ रही थी उनका फुदकना और उनकी टीं-टीं भी बढ़ती जा रही थी। उन्हें पकड़ पाना असम्भव था और आज मेंढकी यह जान रही थी कि भूखा कैसे रहा जाता है।

मेंढकी को तहखाने के दरवाज़े के नीचे एक सूराख मिल गया और उसे बस वहीं डेरा डाल दिया। उसने अपने सभी दिन तहखाने की, ईंटों की बनी ठण्डी पैड़ियों के पास ऊँघते हुए गुजारने शुरू किये।

जब भी अरीशा नौकरानी तहखाने में दूध लेने जाती, मेंढकी जाग उठती और एक तरफ़ को फुदकती हुई एक टूटे हुए गमले के पीछे जा छिपती और तभी अरीशा की चीख निकल जाती।

संध्या को मेंढकी रेंगती हुई अहाते में आ जाती और बहुत सम्भल-सम्भलकर फूलों की क्यारी में चली जाती जहाँ शाम के समय तम्बाकू के फूल खिलते थे और जहाँ गेंदे की शक्ल के रंग-बिरंगे फूलों के झुण्ड के झुण्ड उगे रहते थे। हर शाम को फूलों को पानी दिया जाता था और इसलिए भीगी हुई धरती इतनी बढ़िया और सीली होती थी कि वहाँ बड़े आराम से साँस ली जा सकती थीं और कभी-कभी तो तम्बाकू के पौधे की सफ़ेद पत्तियों से ठण्डे-ठण्डे पानी के क़तरे भी ढुलक पड़ते थे।

मेंढकी अँधेरे में बैठकर लोगों को घूरती रहती। वह इस बात की प्रतीक्षा करती कि लोग चलना-फिरना बन्द करें, बातचीत ख़त्म हो, गिलासों की खनक और धोवन-तिपाई की छनक का अन्त हो और लैम्प बुझे। हर चीज़ अन्धकार और रहस्य की दुनिया में डूब जाये।

केवल तभी वह फूलों की क्यारी में थोड़ा फुदकती, गेंदे के समान फूलों की पत्तियों को कुतरती और धीरे-से सोये हुए भौंरे को छूकर उसकी ऊँघ भरी बड़बड़ाहट को सुनती।

तब मुर्ग़ों की कुकुड़-कुकुड़ की आवाज़ और बाँग सुनाई देती और इस प्रकार आधी रात का सबसे सुहाना पहर आ जाता। जब ओस पड़ती तब गीली घास चमकने लगती। इस तरह ठण्डी और चुपचाप रात गुज़रती जाती और तब चरागाहों से सभी से एकदम अलग-थलग रहनेवाले जुनबगले की, खरखरी आवाज़ सुनाई देती।

ग्लेब चाचा को मछलियाँ पकड़ने का पुराना शौक़ था। हर शाम को वह मेजपोश उठा देता, भिन्न-भिन्न प्रकार के छोटे-छोटे डिब्बों में से मछली फँसाने के चमकते हुए काँटे, सीसे के लंगर, मछली पकड़ने की पारदर्शी और रंगदार रस्सियाँ निकालकर मेज़ पर रख देता और मछली पकड़ने की पतली छड़ियों की मरम्मत करने लगता। ऐसे समय में तान्या को मेज के पास आने की इजाज़त न होती ताकि कहीं कोई

काँटा उसकी उँगली में न चुभ जाये।

मरम्मत करते समय ग्लेब सदा एक ही गीत गुनगुनाया करता था :

''एक मस्त था मछियारा
वह छड़ें सुधारे दिन सारा
वह सदा तिरौंदे को ताके
जो पानी के ऊपर झाँके।''

किन्तु ग्लेब के लिए इस बार की गर्मी कुछ अच्छी न रही थी। मौसम के खुश्क रहने के कारण एक भी कीड़ा नहीं मिलता था। चुस्त से चुस्त लड़के को भी उन्हें खोजने के लिए राज़ी करना मुश्किल था।

निराश होकर ग्लेब ने अपने घर के दरवाज़े पर बड़े-बड़े सफे द अक्षरों में लिखा :

''यहाँ कीड़े ख़रीदे जाते हैं।''

पर इससे भी कोई लाभ न हुआ। लोग रुकते, विज्ञापन को पढ़ते और सिर हिलाकर हँसते हुए कहते :

''हज़रत को बहुत दूर की सूझी है!'' फिर वे आगे चल देते। और अगले दिन किसी शैतान बच्चे ने उतने ही बड़े अक्षरों में उसके नीचे लिख दिया :

''आलू के मुरब्बे के बदले में।''

ग्लेब चाचा के लिए सभी कुछ मिटा देने के सिवा कोई और चारा न था।

अब वे तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक खड्ड की ओर कीड़ों की तलाश में जाने लगी। वहाँ घण्टे भर की सिरदर्दी के बाद उन्हें पुरानी छिपटियों के नीचे दबे लगभग एक दर्जन कीड़े मिले।

ग्लेब चाचा कुछ इस तरह उनकी रखवाली करते मानो वे सोने के बने हुए हों। उन्होंने उन कीड़ों को शीशे के मर्तबान में काई की सेज पर सुलाया, मलमल के छोटे-से टुकड़े से ढका और उस मर्तबान को अँधेरे तहखाने में रख आये।

वहीं पर मेंढकी ने कीड़ों को खोज निकाला। मलमल के टुकड़े को हटाने के लिए उसे काफ़ी परेशान होना पड़ा। पर इस काम में सफल होने के बाद वह रेंगती हुई मर्तबान में दाखिल हो गयी और कीड़ों से निपटने लगी। वह अपने काम में इतनी व्यस्त थी कि तहखाने की ओर आते हुए ग्लेब की पदचाप तक न सुन पाई। ग्लेब चाचा ने उसे उसकी पिछली टाँगों से जा पकड़ा और उठाकर अहाते में ले आये। वहाँ तान्या एक कुपित कानी मुर्गी को दाने चुगा रही थी।

''अब लो,'' ग्लेब ने मेंढकी को धमकाते हुए कहा, ''हम तो पसीना बहाकर एक दर्जन कीड़े खोजकर लाये और यहाँ यह बेहया मेंढकी बेखटके उन सबको चुराकर

खा गयी। कमबख़्त ने मलमल का टुकड़ा तक उतार लिया। हमें इसे पाठ पढ़ाना ही होगा।''

''कैसे?'' तान्या ने व्यग्र होते हुए पूछा जबकि मुर्गी ने बैरभरी टेढ़ी नज़र से मेंढकी की ओर देखा।

''मुर्ग़ी की नज़र करके, और कैसे?''

मेंढकी बुरी तरह झटपटा रही थी मगर वह मुक्त होने में असमर्थ रही। मुर्ग़ी ने अपने पंख फड़फड़ाये, ऊपर को उड़ी और ग्लेब के हाथ से मेंढकी को लगभग छीन ही लिया।

''ख़बरदार!'' तान्या मुर्ग़ी पर झल्लायी और फूट-फूकर रो पड़ी।

''मुर्ग़ी एक तरफ़ को हट गयी और एक टाँग पर विचारमग्न-सी खड़ी होकर आगे की घटना की प्रतीक्षा करने लगी।

''ग्लेब चाचा, इसकी जान मत लीजिये। इसे मुझे दे दीजिये।''

''ताकि वह चोरी करती रहे?''

''नहीं मैं इसे शीशे के मर्तबान में रखकर खिलाती-पिलाती रहूँगी। क्या आपको इस पर रहम नहीं आता?''

''अच्छा,'' ग्लेब ने हामी भरी, ''यदि यही चाहती हो तो ऐसा ही सही। मैं इसे केवल तुम्हारी ख़ातिर क्षमा कर रहा हूँ। और इसलिए भी कि यह साधारण मेंढकी नहीं है।''

''क्या, सचमुच?'' तान्या ने रोना बन्द कर दिया।

''क्या तुम नहीं देख रही हो? यह टर्रानेवाली विशेष प्रकार की मेंढकी है जो वृक्षों पर चढ़ जाती है। यह सदा बरसात की पूर्व-सूचना देती है।''

''यह तो बहुत बढ़िया बात है,'' और तान्याने चैन की साँस लेते हुए उन शब्दों को बुदबुदाया जो वह रात-दिन इगनात बढ़ई को कहते सुनती थी : ''हमें थोड़ी बूँदा-बाँदी की बेहद ज़रूरत है, वर्ना फसलें और सब्जियाँ तबाह हो जायेंगी। फिर हमारा क्या बनेगा?''

तान्या ने एक मर्तबान में कुछ घास डालकर मेंढकी को उस पर बिठा दिया ओर मर्तबान को खिड़की की ओटक पर रख दिया।

''तुम्हें एक टहनी भी मर्तबान में रख देनी चाहिये,'' ग्लेब ने सलाह दी।

''किस लिए?''

''जब मेंढकी टहनी पर चढ़कर टर्राने लगे तो उसे बरसात के आने का संकेत समझना।''

पर वर्षा का तो न कहीं नाम था न निशान। मेंढकी अपने मर्तबान में बैठी हुई लोगों से सूखे की चर्चा सुनती और आह भरकर रह जाती। मर्तबान के जीवन में मेंढकी को कुछ लाभ तो अवश्य थे। वह सुरक्षित थी और पेट भरकर खाने को मिल

जाता था, मगर उसमें उसका दम घुटता-सा रहता था।

एक रात को मेंढकी उस टहनी के ऊपर चढ़कर मर्तबान से बाहर आ गयी और सावधानी से उछलती, कूदती और छलाँगें लगाती हुई नीचे बाग में जा गिरी। वहाँ एक कुंज में एक अबाबील ने अपना घोंसला बना रखा था।

मेंढकी धीमे-से टर्रायी तो अबाबील ने झट से अपना सिर घोंसले से बाहर निकाला।

"यह क्या बदतमीजी है?" उसने खीझते हुए कहा। "दिन भर तो चुगे की खोज में इधर-उधर मारे-मारे फिरना पड़ता है। पागल बनाने के लिए वही काफ़ी होता है। तिसपर तुम थके-हारों को रात को भी आराम नहीं करने देतीं।"

"तुम पहले मेरी बात सुन लो, फिर बड़बड़ाती रहना," मेंढकी ने जवाब दिया। "तुम यह तो कह नहीं सकतीं कि मैंने पहले भी कभी तुम्हें रात को आकर जगाया है।"

"अच्छा, जल्दी बोलो," अबाबील ने जम्हाई लेते हुए कहा, "क्या मुसीबत है?"

तब मेंढकी ने अबाबील को सारा किस्सा सुनाया कि कैसे तान्या नामक लड़की ने उसकी जान बचाई। कैसे वह बहुत दिनों से सोच रही थी कि इस नेकी का बदला चुकाये। अब अन्त में उसने एक मार्ग खोज निकाला है पर उसे सफल बनाना अबाबील की सहायता पर निर्भर करता है।

मेंढकी ने बताया कि अनावृष्टि के कारण लोग बहुत चिन्तित हैं। हर चीज़ सूखती जा रही है। दाने, बालों में ही सूख जायेंगे। यहाँ तक कि पक्षियों और मेंढकों के लिए भी बुरा समय आ गया है क्योंकि कीड़े और घोंघें मिलने कठिन हो गये हैं।

मेंढकी ने बताया कि सूखे के बारे में उसने तान्या के पिता की बातें भी सुनी हैं। तान्या के पिता कृषिशास्त्री हैं। उसने तान्या को रोते भी देखा है। तान्या को अपने पिता और सामूहिक कृषकों की दशा पर बहुत तरस आता है क्योंकि उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ रहा है। मेंढकी ने कहा कि उसने तान्या की रसभरी की एक मुरझायी हुई लता के समीप खड़े होकर काले पड़े हुए भुरभुरे पत्तों को छूकर रोते भी देखा है। उसने तान्या के पिता को यह कहते भी सुना है कि शीघ्र ही लोग कृत्रिम मेंह बरसा लेंगे किन्तु जब तक ऐसा न हो, उनकी सहायता अवश्य की जानी चहिये।

"हमें जरूर मदद करनी चाहिये," अबाबील ने सहमति प्रकट की। "किन्तु कैसे? वर्षा यहाँ से कई किलोमीटर परे, दूर, बहुत दूर है। कल अपनी उड़ान करते हुए मैं वहाँ तक पहुँच तो नहीं पाई, पर मैंने जोर से बरसती हुई वर्षा को देखा अवश्य था। खेद की बात यह है कि वह यहाँ पहुँचने से पहले ही समाप्त हो जायेगी। वह यहाँ कभी नहीं पहुँच पायेगी।"

"तो उसे यहाँ लाया क्यों न जाये?" मेंढकी ने तर्क प्रस्तुत किया।

"तुम जानती हो यह आसान काम नहीं। और जो भी हो कम से कम यह अबाबीलों के वश की बात नहीं। यह तो बेगिनी चिड़ियों के करने लायक काम है। वे हमसे

कहीं अधिक तेज उड़ती हैं।''

''तो तुम बेगिनियों से बात करो।''

''यह कहना जितना आसान है, करना उतना ही कठिन। तुम शायद उनसे परिचित नहीं। कहीं ग़लती से तुम उनके किसी बच्चे से जरा उलझ तो जाओ, बस फिर क्या है, कभी झगड़े का अन्त ही नहीं होगा। वे सदा झगड़े का बहाना ढूँढती रहती हैं। उनके पास शोर, चीख-पुकार और चीं-चपड़ के सिवा कुछ है ही नहीं।''

मेंढकी ने अपना मुँह मोड़ लिया और उसकी आँखों से आँसू की एक बूँद नीचे घास में जा गिरी।

''अगर तुम अबाबीलें वर्षा को यहाँ खींचकर नहीं ला सकतीं तो बेगिनियों से बात करना ही व्यर्थ है,'' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

''तुम्हारा मतलब है, हम ला ही नहीं सकतीं,'' चिड़िया जोश में आ गयी। ''यह तुमसे किसने कहा? दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जो हम न कर सकें। हम बिजली को भी चकमा दे सकती हैं और हवाई जहाज को पीछे छोड़ सकती हैं। बरसात को यहाँ खींच लाना हमारे लिए उतना ही आसान काम है जितना मक्खियों को पकड़ना। किन्तु पूर्व इसके कि हम ऐसा कर पायें हमें सभी अबाबीलों को, इस प्रदेश की हर अबाबील को, इकट्ठा करना होगा।''

अबाबील ने चोंच मार-मारकर अपने पंजों को साफ़ किया और वह देर तक इस समस्या पर गम्भीर विचार करती रही।

''वह मारा! रोना बन्द करो। हम वर्षा को यहाँ खींच लायेंगी।''

''किन्तु कब?'' मेंढकी ने पूछा।

अबाबील ने फिर अपने को सँवारना और सोचना आरम्भ किया।

''ज़रा मुझे हिसाब लगा लेने दो। अबाबीलों को इकट्ठा करने में दो घण्टे लगेंगे। वर्षा करनेवाले बादलों तक पहुँचने में दो घण्टे और। वर्षा को साथ लेकर लौटने का काम और भी मुश्किल है। इसमें कम से कम चार घण्टे लग जायेंगे। तो इस तरह तुम सुबह 10 बजे हमारे लौटने की आशा कर सकती हो। अच्छा, तो फिर अलविदा!''

अबाबील एक बार चहकी। वह पक्षियों के घोंसलों की ओर उड़ चली और तख़्तों की बनी छत के पीछे ग़ायब हो गयी।

मेंढकी घर वापस चली गयी। घर में हर कोई गहरी नींद में था।

वह मर्तबान में पहुँची और टहनी पर चढ़कर धीमी आवाज़ में टर्रायी। किसी ने भी उसकी आवाज़ नहीं सुनी। तब वह जोर से और अधिक जोर से टर्रायी और शीघ्र ही तमाम कमरे और फिर बगीचा भी उसकी टर्र-टर्र से गूँज उठा। गाँव के सभी मुर्गे जाग उठे और उन्होंने जवाब में ''कुकड़ूँ-कडू'' की आवाज़ लगाई। उन्होंने एक दूसरे से बढ़-चढ़क ऊँची आवाज़ में बाँग देने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाया। इस यत्न में उनकी आवाज़ खरखराई, फटी तथा फिर ठीक हुई। ''कुकड़ूँ-कुडू'' करते हुए

वे बड़े जोर से अपने पंख भी फड़फड़ाते थे। उन्होंने वह हल्ला-गुल्ला मचाया कि गाँव का हर व्यक्ति यह विश्वास करता हुआ जाग उठा कि गाँव में आग लग गयी है।

घर के सभी लोग जाग उठे।

''क्या मामला है?'' नींद की खुमारी में तान्या ने पूछा।

''बरसात होने वाली है, बरसात!'' साथवाले कमरे से उसके पिता ने जवाब दिया। ''तुम सुनती हो? तुम्हारी बरसाती मेंढकी टर्रा रही है, खलियानों में मुर्गे बाँग दे रहे हैं। यह पक्की निशानी है।''

ग्लेब मोमबत्ती लेकर तान्या के कमरे मे आया और मेंढकी के शीशे के घर के पास गया।

''बिल्कुल सही है! जैसा कि मैंने सोचा था मेंढकी शाख पर चढ़ी हुई है और अपना पूरा जोर लगाकर टर्रा रही है। बिचारी जोर लगा-लगाकर हरी हुई जा रही है,'' ग्लेब चाचा ने कहा।

सुबह हुई, सदा की भाँति आकाश साफ़ था, बादल का एक टुकड़ा भी कहीं नहीं था। किन्तु दस बजे के लगभग पश्चिम में खेतों के ऊपर बादलों की प्रथम गड़गड़ाहट सुनाई दी।

सामूहिक किसान नदी के समीप की एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर, हाथों की ओट से अपनी आँखों को रोशनी से बचाते हुए, पश्चिम दिशा में देखने लगे। बच्चे मकानों की छतों पर चढ़ गये। अरीशा ने सभी परनालों के नीचे जल्दी-जल्दी डोल और टब रखने शुरू किये। तान्या के पिता बादलों को देखने के लिए आँगन में दौड़े और गड़गड़ाहट को सुनते हुए कहने लगे, ''कहीं ये बिन बरसे ही आगे न निकल जायें-काश! कुछ कनियाँ ही बरस जायें।'' अपने पिता के पीछे चिपटकर खड़ी हुई तान्या यह सभी कुछ सुन रही थी।

बादलों की गड़गड़ाहट पहले से अधिक स्पष्ट और गम्भीर होती हुई समीप आती गयी। पश्चिमी आकाश में काली घटा घिर आई। ग्लेब ने जल्दी-जल्दी मछली पकड़ने की छड़ियाँ इकट्ठी करनी शुरू कीं और अपने बूटों को तेल लगाकर नर्म किया। आँधी-पानी के बाद मछलियाँ पागलों की भाँति काँटों में मुँह फँसाया करती हैं, उसने घोषणा की।

हवा में वर्षा की ताजगी आ गयी। बाग़ में पत्ते धीमे-धीमे सरसराने लगे। घटाटोप बादल समीप आ गया और खुशी से भरी बिजली आकाश को चीरती हुई कौंध गयी।

टीन की छतों पर बरसाती बूँदों की पहली टप-टप सुनाई दी। तब गहरी खामोशी छा गयी मानो हर कोई साँस रोककर दूसरी बूँद के पड़ने की प्रतीक्षा कर रहा हो। स्वयं वर्षा भी शायद रुककर यह सोचने लगी थी कि पहली बूँद ठीक जगह पर गिरी है या नहीं। ज़ाहिर है कि वह सन्तुष्ट थी, क्योंकि सहसा हज़ारों बूँदें एक साथ गिरने लगीं और टीन की छतें जोर से ताल देने लगीं। खिड़कियों के बाहर चमकती हुई

मूसलाधार झड़ी लग गयी।

''जल्दी से यहाँ ऊपर आओ,'' अटारी से ग्लेब चाचा की आवाज़ सुनाई दी।

हरेक सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। सबसे पीछे तान्या थी।

वहाँ ऊपर आकाश में सभी यह दृश्य देख सकते थे कि कैसे हज़ारों लाखों छोटे-छोटे पक्षी, बादलों को धरती की ओर खींचते ला रहे थे और उन्हें किसी अन्य दिशा में मुड़ने से रोके हुए थे। ऐसे अनगिनत पक्षी बादलों की ओर उड़कर अपने पंखों से बहुत तेज हवा पैदा कर रहे थे। यह हवा बादलों को अधिक, और अधिक धरती की ओर खींचे ला रही थी। बादलों का भारी जमघट गड़गड़ाता-बड़बड़ाता सूखे खेतों और सब्जी के बगीचों की ओर चला आ रहा था।

कुछ पक्षी अपने पंखों पर पानी की झड़ी को रोक लेते और फिर चमकती हुई जलधार अपने पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ते।

कभी-कभी पक्षी अपने परों को जोर से फड़फड़ा देते। उस समय बरसात से पैदा होने वाली टप-टप की आवाज़ इतनी ऊँची हो जाती कि अटारी में बैठे हुए लोग चीख-चीखकर बात करने पर भी एक शब्द तक नहीं सुन पाते।

''यह क्या है, क्या पक्षी यह बरसात लाये हैं?'' तान्या ने पूछा।

''मैं तो नहीं जानता। क्या तुम कुछ अनुमान लगा सकते हो, ग्लेब?'' तान्या के पिता ने पूछा।

''नहीं, मैं तो कुछ नहीं बता सकता,'' ग्लेब ने कहा। ''ऐसा लगता है जैसे दुनिया भर की अबाबीलें आज यहीं इकट्ठी हो गयी हैं।''

जब छत पर टपटपाती हुई वर्षा धीमी होकर हल्की फुहार में बदल गयी और सब अबाबीलें चली गयीं तो तान्या ने मेंढकी को मर्तबान से बाहर निकालकर ताजे और सरसराते बाग़ में जहाँ घास और पत्ते तिरछी फुहार के कारण झुके हुए थे, छोड़ दिया।

उसने धीरे से मेंढकी के ठण्डे और छोटे-से सिर को थपथपाते हुए कहा :

''बरसात लाने के लिए धन्यवाद। अब तुम्हें डरने की जरूरत नहीं। कोई तुम्हें छुएगा भी नहीं।''

मेंढकी ने तान्या की ओर देखा पर बोली कुछ नहीं, यों भी इंसानों की भाषा में तो वह एक शब्द भी नहीं बोल सकती थी। वह तो केवल टर्रा सकती थी। मगर उसकी आँखों में कृतज्ञता का भाव बिल्कुल स्पष्ट था और तान्या ने एक बार फिर धीरे से उसका सिर थपथपाया।

मेंढकी तम्बाकू के पौधे के पत्तों के नीचे फुदकने और अपने शरीर को हिलाने-डुलाने और काँपने लगी। बरसात में वह ऐसे ही नहाती है।

उस दिन के बाद हर कोई मेंढकी से बहुत शिष्ट व्यवहार करता है। अरीशा अब उसे देखकर चिल्लाती नहीं, और ग्लेब चाचा तो बहुमूल्य मर्तबान में रखे जानेवाले कीड़ों में से सबसे मोटे कीड़े प्रतिदिन उसके लिए अलग रख छोड़ते हैं।

थोड़े ही अरसे में वर्षा से धुली फसलें पक गयीं, भीगे हुए फूलों के उपवन प्रकाश में चमकने लगे और सब्जियों के बगीचों से रसदार खीरों, टमाटरों और जंगली साग-सब्जियों की सुगन्धि आने लगी। अब मछलियाँ चुगे पर इस बुरी तरह टूटती हैं कि प्रतिदिन वे ग्लेब की यत्नपूर्वक संचित सुनहरी हुकों के साथ भारी मात्रा में खिंची चली आती हैं।

अब तान्या बगीचे के इर्द-गिर्द शोर मचाती और मेंढकी से आँख-मिचौनी खेलती रहती है। ऐसा करती हुई वह ओस में अपनी पोशाक भी गीली कर लेती है। कौतूहल से भरी हुई मकड़ियाँ, दिखायी न देनेवले धागों में झूलती हुई यह जानने के लिए अपनी शाखाओं से नीचे उतर आती हैं कि बगीचे में इतनी हलचल और हँसी-खुशी का कारण क्या है। कारण मालूम होने पर वे अपने धागे सुई की नोक के बराबर छोटे-छोटे गोलों में लपेटती हुई ऊपर चढ़ती हैं और पत्तों की गर्म छाया में सो जाती हैं।

1951

हमारी कल्पना में रंग कभी फीके नहीं पड़ते, गर्मी का कभी अन्त नहीं होता और प्रेम कभी मरता नहीं। केवल हमारी कल्पना में ही फूलों से लदी धरती से सदा मधुर समीरण आया करता है; और नाव के समान चाँद कभी अदृश्य नहीं हो पाता।

केवल कल्पना में ही हम पुश्किन के साथ हँस सकते हैं या डिकेन्स के जादूभरे हाथ को छू सकते हैं अथवा किसी जमी हुई नदी की चमकती बर्फ़ में उन नीले फूलों को देख सकते हैं जिन्हें ओफीलिया ने गिराया था।

ज़िन्दगी की सतह पर कल्पना उसी तरह लहराती है जैसे द्रुत गति से बहते निर्झर के पानी पर सूर्य की किरणें।

चीड़ के फलों की टोकरी

उस शरद्काल में स्वरकार एडवर्ड ग्रीग बरगेन के समीप के वन-प्रदेश में रह रहा था। यों तो सभी वे वन जो पत्तों की सरसराहट और कुकुरमुत्तों की तीव्र गंध से भरपूर हों, मनमोहक और सुखद होते हैं, पर विशेष रूप से वे जो समुद्र तट और पहाड़ के दामन के संगम पर स्थित हों। इन वनों का संगीत लहरों के गीत के साथ मिलकर गूँजता है। इनके वृक्ष समुद्री धुन्ध की चादर ओढ़ते हैं। नम हवा में पनपने और दाढ़ी की भाँति शाखाओं से भूमि की ओर लटकनेवाली काई इन वृक्षों का श्रृंगार करती है। इन जंगलों में ही हम मन खुश करनेवाली प्रतिध्वनि सुन पाते हैं जो मिमस पक्षी की तरह किसी भी आवाज़ की नक़ल करने और उसे पहाड़ी चोटियों के ऊपर से दूर तक पहुँचाने को उत्सुक रहती हैं।

ऐसे ही जंगल में एक छोटी-सी दो चोटियों वाली लड़की से ग्रीग की भेंट हुई। वह वनरक्षक की बेटी थी। उसके हाथ में एक टोकरी थी। वह चीड़ के फल बीन रही थी।

शरद् ऋतु का आरम्भ हो चुका था। यदि कोई दुनिया भर के सोने और ताँबे को इकट्ठा कर, उन्हें कूट-कूटकर अनगिनत सुन्दर पत्तों के रूप में बदल दे तो भी वे पहाड़ों के शरद्कालीन सौन्दर्य का बस अंशमात्र ही बन सकेंगे। चाहे उनपर कितनी ही नाजुक और बारीक कारीगरी की गयी हो, प्रकृति की रचना के सम्मुख वे कला-विहीन ही दिखायी देंगे, विशेषकर चलपूर्ण के उन पत्तों के सामने, जो पक्षी विशेष की चहक के उत्तर में सिहर उठते हैं।

''नन्हीं गुड़िया, तुम्हारा क्या नाम है?'' ग्रीग ने पूछा।

''दाग्नी पीडरसेन,'' लड़की ने दबी-दबी आवाज़ में जवाब दिया। आवाज़ में भय कम और संकोच अधिक था। फिर वह डरती भी तो क्यों? ग्रीग की आँखों में खुशी की चमक साफ़ दिखायी दे रही थी।

''मुझे बहुत शर्म आ रही है कि तुम्हें देने को मेरे पास कोई छोटा-सा उपहार भी नहीं'' ग्रीग ने कहा। ''कोई रिब्बन, कोई गुड़िया, यहाँ तक कि मखमल का खरगोश तक नहीं।''

''मेरे पास घर पर एक पुरानी गुड़िया है,'' लड़की ने उसे बताया। ''वह मेरी माँ की होती थी। उसकी आँखें कभी तो ऐसे मुँदी हुई थी''-और लड़की ने धीरे से अपनी आँखें मूँद लीं। जब उसने आँखें खोलीं तो ग्रीग ने देखा कि उसकी आँखें हरी-हरी हैं

और उनमें जंगली पत्तों के सुनहरे रंग का पुट है।

"अब वह अपनी आँखें खोलकर सोती है," लड़की उदास मन से कहती गयी। "बूढ़े कभी अच्छी तरह से नहीं सोते। मेरे दादा को ही ले लीजिये, वे रात भर कराहते और बड़बड़ाते रहते हैं।"

"तुम्हें मालूम है दाग्नी," ग्रीग ने कहा, "मुझे एक बात सूझी है। मैं तुम्हें एक बहुत बढ़िया उपहार दूँगा, अभी नहीं, दस बरस तक।"

"ओह, यह बहुत लम्बा अरसा है," दाग्नी ने निराशा से अपने हाथ मलते हुए कहा।

"हाँ, किन्तु मुझे अभी उसे बनाना है।"

"वह क्या उपहार होगा?"

"समय आने पर तुम स्वयं ही जान जाओगी।"

"क्या उसे बनाने में दस बरस ही लगेंगे? क्या आप अपने जीवन में केवल पाँच या दस छः ही खिलौने बना सकते हैं?" दाग्नी ने कुछ नाराज होते हुए पूछा।

ग्रीग सोच में पड़ गया।

"ऐसी बात नहीं," उसने अनिश्चित-सा उत्तर दिया। "हो सकता है उसे बनाने में केवल कुछ दिन ही लगें। किन्तु यह छोटे बच्चों को देने की वस्तु नहीं। मेरे उपहार केवल बालिगों के लिए होते हैं।"

दाग्नी ने उसकी कोहनी को छुआ और अनुनय करते हुए कहा :

"मैं उसे तोड़ूँगी नहीं, विश्वास कीजिये। दादा के पास शीशे की बनी एक नाव है। मैं उसे साफ़ करती हूँ और आज तक मैंने उसका कोई छोटा-सा भाग भी नहीं तोड़ा।"

"निश्चित ही दाग्नी ने मुझे निरुत्तर कर दिया है।" और यह सोचकर ग्रीग ने ऐसे मौकों पर बुजुर्गों द्वारा प्रयोग में लाए जानेवाले साधारण नुस्खे से काम लिया :

"तुम अभी बहुत छोटी हो और इसलिए बहुत-सी बातें अभी तुम्हारी समझ के परे की हैं। सब्र करना सीखो। और अब तुम यह अपनी टोकरी मुझे उठा लेने दो। यह तुम्हारे लिए बहुत भारी है। मैं घर तक छोड़ आऊँगा और रास्ते में हम अन्य किसी विषय पर बातचीत करेंगे।"

दाग्नी ने आह भरी और टोकरी ग्रीग को दे दी। वह वास्तव में ही भारी थी क्योंकि चीड़ के राल-भरे फल साधारण देवदार के फल से कहीं अधिक भारी होते हैं।

जब वृक्षों के पीछे वनरक्षक की झोंपड़ी दिखायी देने लगी तो ग्रीग ने कहा :

"अच्छा, तो दाग्नी, बाकी रास्ता तुम स्वयं तय कर लो। हाँ, पर नार्वे में दाग्नी पीडरसेन के नामवाली अनेक नन्ही लड़कियाँ हैं। तुम्हारे पिता का प्रारम्भिक नाम क्या है?"

"हगेरूप," दाग्नी ने जवाब दिया। "आप भीतर क्यों नहीं चलते?" माथे पर

बल डालकर उसने पूछा। ''हमारे घर में एक कढ़ा हुआ मेजपोश है, लाल बिल्ली है, और शीशे की नाव है। दादा उसे आपको हाथ में उठा लेने देंगे।''

''धन्यवाद, मैं इस समय तुम्हारे साथ नहीं चल सकता। अच्छा नमस्कार दाग्नी।''

ग्रीग ने नन्ही लड़की के सिर को प्यार से थपथपाया और समुद्र की ओर चल दिया। दाग्नी सिकुड़ी हुई भौंहों के नीचे संजीदा आँखों से उसे देर तक खड़ी देखती रही। उसकी बाँह में टोकरी टेढ़ी लटकी हुई थी और इसलिए चीड़ के कुछ फल नीचे गिर गये।

''हाँ,'' ग्रीग ने सोचा, ''मैं इसके लिए कुछ विशेष स्वररचना करूँगा और आवरण पृष्ठ पर यह छपवाऊँगा : 'वनरक्षक हगेरूप पीडरसेन की बेटी दाग्नी पीडरसेन के अठारह वर्ष की होने पर समर्पणार्थ।''

*   *   *

बरगेन में अपने घर लौटने पर ग्रीग ने हर वस्तु को वैस ही पाया जैसे वह छोड़ गया था। ध्वनि को जज्ब करनेवाली सभी वस्तुएँ जैसे कि दरी, परदे और गद्देदार नर्म फर्नीचर आदि, कभी की हटायी जा चुकी थीं। केवल एक पुराना सोफा पड़ा रह गया था। इस पर एक साथ दस मेहमान बैठ सकते थे और इससे अलग होने को राजी न हो सका था।

उसके मित्र कहा करते थे कि यह मकान एक लकड़हारे के झोंपड़े की भाँति सूना है। फर्क केवल इतना था कि यहाँ एक पियानो था।

सफ़ेदी की हुई इन दीवारों के घेरे में एक कल्पना-प्रधान व्यक्ति मनमोहक ध्वनियां सुन सकता था : कभी अंधकार में गरजता हुआ उत्तरीय सागर और उसके ऊपर से सीटियां बजाती तेज हवा और कभी चिथड़ों की बनी गुड़िया को सुलाती हुई किसी नन्ही लड़की की आवाज़।

ग्रीग का पियानो उतनी ही तत्परता से प्रेम के राग गाता था जितनी तत्परता से नई और महान चीज़ों के लिए मानवीय आत्मा की आकांक्षा का गीत। ग्रीग की उँगलियों के नीचे लहराते हुए पियानो के काले और सफ़ेद पर्दे हँसा सकते थे, रुला सकते थे, उनसे गर्जन-ध्वनि पैदा हो सकती थी और रोष ध्वनि भी। अथवा वह शून्य में भी खोकर रह जाती थी।

तब गहरी निस्तब्धता को बेधती हुई स्वर की अन्तिम गूँज में मानो सिंडरेला अपनी बहनों की उपेक्षा के कारण व्यथित होकर सिसक उठती।

पियानो के पर्दों से दूर हटकर ग्रीग उस आवाज़ को तब तक सुनता रहता जब तक कि वह रसोईघर में जाकर, जहाँ पिछले कई वर्षों से एक झींगुर रह रहा था, समाप्त नहीं हो जाती थी। उस नीरवता में पानी के नल की टप-टप भी, समयमापी की भाँति लयबद्ध सुनी जा सकती थी। हर क़तरा मानों इस बात पर जोर देता हुआ

लगता कि समय किसी मनुष्य की प्रतीक्षा नहीं करता और इसलिए जो कुछ भी करना हो शीघ्र करना चाहिए।

दाग्नी पीडरसेन के लिए स्वरचना करने में ग्रीग को एक महीने से अधिक समय लगा।

जाड़ा आया। धुन्ध छाई और उसने मकानों को अपनी चादर में लपेट लिया। सात महासागरों में घूमकर लौटे हुए जहाज अब जंग-आलूदा होकर लकड़ी के घाटों के समीप भाप उगलते हुए खड़े थे।

फिर बरफ के फूल बरसे। ग्रीग अपनी खिड़की से बर्फ़ के फूलों को नीचे आते और वृक्षों की चोटियों पर जमते हुए देख सकता था।

संगीत की गहराई को शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। शब्दों में शायद ऐसी क्षमता ही नहीं है। ग्रीग ने स्वरों में लड़की के बचपन का वर्णन किया। जब वह स्वरों को लिपिबद्ध कर रहा था तो उसने एक हरी चमकीली आँखों वाली लड़की को अपनी ओर दौड़कर आते देखा। खुशी में उसने अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं और अपना गर्म-गर्म गाल उसके सफ़ेद खूँटियों से भरे गाल पर टिका दिया। ''धन्यवाद!'' उसने कहा, यद्यपि वह तब तक यह नहीं जानती थी कि किस लिए उसको धन्यवाद दे रही है।

''तुममें सूरज की गर्मी और प्रातःकालीन समीर की शीतलता है। तुम्हारा हृदय बहार की सुगन्धि से भरपूर एक सफ़ेद फूल की भाँति है,'' ग्रीग ने अपनी कल्पना में लड़की से कहा। ''मैंने ज़िन्दगी को देखा-समझा है। जीवन के बारे में लोगों की धारणा को मैं अधिक महत्व नहीं देता। मैं तो यही मानता हूँ कि ज़िन्दगी एक अद्‌भुत और अमूल्य वस्तु है। मैं बूढ़ा आदमी हूँ, किन्तु मैंने तरुणों को अपना जीवन, प्रतिभा और कार्य, खुले दिल से समर्पित किया है। और शायद इसीलिए, दाग्नी, मैं तुमसे अधिक खुश हूँ।

''तुम उत्तरी भूभाग की मध्य-ग्रीष्म की रहस्यमयी अर्द्धशुभ्र रात हो। तुम कल्याण की साकार मूर्ति हो। तुम उषा की आभा हो और मेरा हृदय तुम्हारी आवाज़ की गति के साथ-साथ स्पन्दित होता है। वे जो तुम्हारी आँखें देखती हैं, वे जो तुम्हारे हाथ छूते हैं, वे जो तुम्हें खुशी देती हैं, वे जो तुम्हें विचारवान बनाती हैं, वे सभी चीज़ें तुम्हारे लिए कल्याणकारी हों, मंगलमयी हों।''

यह कुछ था जो ग्रीग ने अपने मन में सोचा और पियानों के पदों पर दौड़ती हुई उसकी उँगलियों ने इन्हें स्वरबद्ध किया।

ग्रीग को सदैव यह भ्रम रहता था कि इधर-उधर छिपकर गुप्तचर उसकी बातें सुना करते हैं-वृक्षों पर बैठे नीले रंग की छोटी चिड़ियाँ, नशे की हालत में बन्दरगाह में झूमते हुए मल्लाह, पड़ोस में रहनेवाली धोबिन, झींगुर, आकाश से गिरते हुए रुएँदार बर्फ़ के कण और अपना पुराना फ्राक पहने हुए सिंडरेला। प्रत्येक गुप्तचर उसके

संगीत को अपने ढंग से सुनता था। नीली चिड़ियाँ जोश में आकर टी-वित-विट का शोर करने लगतीं, किन्तु उनकी आवाज़ में पियानों की गूँज न डूबती। मल्लाह द्वार की पैड़ियों पर बैठक सुनते और सुबकने लगते। धोबिन अपनी झुकी हुई कमर को सीधा करती, अपनी लाल हुई छलछलाती आँखों को पोंछती और मंत्रमुग्ध सी अपना सिर हिलाती। झींगुर पक्के चूल्हे के एक सूराख से बाहर निकलकर संगीत निर्माता को छिप-छिपकर देखता। उस छोटे-से घर से उड़ रही संगीत की स्वर्णिम लहरों में अपने को डुबो देने के लिए बर्फ़ के फूल हवा में ही ठहरे रहते। और सिंडरेला मुस्कराती हुई उस फर्श को ताकती। उसके नंगे पावों के समीप ही शीशे के सैंडलों की जोड़ी पड़ी होती। सैंडल ग्रीग के पियानो की स्वर-लहरियों के साथ ताल देने लगते।

ग्रीग ऐसे श्रोताओं को, शिष्ट और सज-धजकर कन्सर्ट में आनेवाले श्रोताओं से अधिक उत्तम समझता था।

* * *

अठारह वर्षीय दाग्नी ने स्कूल की पढ़ाई समाप्त की। इस शुभ अवसर की खुशी मनाते हुए उसके पिता ने दाग्नी को क्रिस्तिआनिया में अपनी बहन मागदा के पास भेज दिया। बच्ची को कुछ नया देखना और आनन्द लेना चाहिये। (अपने सुनहरे बालों को दो सुन्दर भारी जूड़ों में गूँथनेवाली आकर्षक दाग्नी अपने पिता के लए तो ''बच्ची'' ही थी।) उसे देखना चाहिये कि लोग कैसे रहते हैं। कौन जाने उसके लिए भविष्य के गर्भ में क्या है-हो सकता है कि कोई ईमानदार और प्यार करने वाला मगर कुद हद तक नीरस और कंजूस-साथी उसके पल्ले पड़े। यह भी हो सकता है कि उसे गाँव की किसी दुगान या बरगेन के जहाजी दफ्तर में छोटी-मोटी नौकरी करनी पड़ती।

मागदा एक थियेटर में पोशाकें बनाती थी और उसका पति निल्ज़ वहीं बनावटी केश बनाने का काम करता था। थियेटर की छत के नीचे बने हुए उनके छोटे-से कमरे को एक तंग-सी सीढ़ी जाती थी। उनकी खिड़की से इबसेन का स्मारक चिह्न नज़र आता था। विभिन्न जातियों के झण्डों के कारण सजीव बनी खाड़ी भी दिखायी देती थी। खुली खिड़की से दिन भर जहाजों के भोंपुओं की आवाज़ सुनाई देती रहती। निल्ज फूफर भोंपू की आवाज़ सुनकर ही हर जहाज की पूरी तफसील बता देते थे-कोपेनहेगन से 'नोरडेरने', ग्लासगो से 'स्काटिश वार्ड' तथा बोरडेक्स से 'जान आफ आर्क' आया है इत्यादि।

सारा कमरा थियेटर में काम आनेवाली छोटी-मोटी चीज़ों से भरा पड़ा था। ज़रीदार कपड़े, रेशम के टुकड़े, रेशमी जाली, रिब्बन, फीते, शुतुरमुर्ग के परों की काली कलगी वाले टोप, जिप्सी दुशाले, श्वेत केश, काँसे की एड़ियों वाले जाँघों तक ऊँचे बूट, कटारें और टूटे हुए चाँदी के स्लीपर इधर-उधर फैले हुए थे। इनमें से कुछ वस्तुओं

की या तो मरम्मत होनी थी या इन पर पैबन्द लगाने की जरूरत थी अथवा इन्हें साफ़ करने या इन पर इस्तरी फेरने की आवश्यकता थी। दीवार पर क़िताबों और पत्रिकाओं से फाड़ी हुई तस्वीरें लटकी हुई थीं। इनमें चौदहवें लुई के मुसाहिबों, जालीदार ''टोकरों'' के ऊपर साया पहने सुन्दरियों, घुड़सवारों, सरफान पहने रूसी स्त्रियों, मल्लाहों और फूलमालाएँ पहने डेनिश जलदस्यु-सरदारों के चित्र देखे जा सकते थे। कमरे में हर समय वारनिश और पेंट की गन्ध बसी रहती थी।

*　　*　　*

दाग्नी अक्सर थियेटर देखने जाती। उसे नाटक बेहद पसन्द आते। पर वह उन्हें देखने के बाद सो न पाती और कभी-कभी तो बिस्तर में पड़ी-पड़ी रोती रहती।

मागदा फूफी चिन्तित हो उठती और यह कहकर सांत्वना देने का यत्न करती कि उसे रंगमंच की हर बात को यथार्थ न मान लेना चाहिए। दूसरी ओर निल्ज़ अपनी बीवी को बकवाद करनेवाली बुढ़िया बताता और कहता कि यदि इन बातों पर विश्वास न करना हो तो थियेटरों का लाभ ही क्या? इसलिए दाग्नी उनमें विश्वास करती रही।

एक दिन फूफी मागदा ने जरा तबदीली के विचार से एक कन्सर्ट में जाने का सुझाव दिया। निल्ज़ ने कोई आपत्ति नहीं की-''क्या संगीत में प्रतिभा की झलक नहीं मिलती?''

निल्ज़ भारी-भरकम, अस्पष्ट और उलझे-उलझाये शब्दों का प्रयोग पसन्द करता था। उसके अनुसार दाग्नी वृन्दवादन के प्रारम्भिक स्वरों जैसी थी। और उसने घोषणा की कि मागदा में लोगों का कायाकल्प करने की तिलस्मी शक्ति थी। क्या वह थियेटर के लिए पोशाकें नहीं बनाती थीं? और हरेक यह बात जानता है कि जब कोई लिबास बदल लेता है तो बिल्कुल बदला हुआ मनुष्य लगने लगता है। इस प्रकार जो अभिनेता कल एक खूनी खलनायक था, आज एक भावुक प्रेमी, कल एक दरबारी मसखरा और परसों राष्ट्र-नायक भी बन सकता है।

''वाह रे झक्की दार्शनिक,'' मागदा कहती। ''मेरी प्यारी दाग्नी, इसकी बातों पर बिल्कुल कान मत दो। वह योंही बकबक करता रहता है और यह तक नहीं जानता कि क्या कह रहा है।''

जून का महीना और उत्तरी प्रदेशों की शुभ्रनिशा का समय था। एक सार्वजनिक पार्क के खुले आँगन में कन्सर्ट का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। दाग्नी मागदा और निल्ज़ के साथ कन्सर्ट में गयी। दाग्नी के पास सिर्फ एक ही बढ़िया फ्र ाक थी और सो भी सफ़ेद रंग की। वह उसे ही पहनना चाहती थी, पर निल्ज़ फूफा उसके हक में न थे। उनका आग्रह था कि एक सुन्दर लड़की को अपने वातावरण से भिन्न दिखायी देना चाहिये। उसने एक लम्बा-चौड़ा भाषण झाड़ा जो संक्षिप्त रूप में एक छोटी सी

सलाह से अधिक कुछ न था कि साधारण रातों में श्वेत कपड़े पहनकर चमकना चाहिए, किन्तु श्वेत रातों में काले कपड़े पहनकर।

निल्ज़ फूफा से बहस करके कोई जीत न सकता था, इसलिए फूफी मागदा थियेटर के कपड़ों की अलमारी से एक काली मखमली पोशाक ले आई। जब दाग्नी ने उसे पहना तो फूफी मागदा यह मानने को विवश हो गयी कि ज़िन्दगी में एक बार तो निल्ज़ ने अक्ल की बात की है। दाग्नी के स्वर्णाभ सौन्दर्य और लम्बी सुनहरी चोटियों की चमक के साथ काली मखमली पोशाक खूब जँच रही थी।

''ज़रा इसे देखो तो,'' निल्ज़ ने धीरे से मागदा से कहा। ''बिल्कुल दुल्हन-सी लग रही है।''

''हाँ, दुल्हन-सी लग रही है।''

''हाँ, दुल्हन-सी,'' मागदा धीरे से बुदबुदायी। ''मुझे तुम्हारे साथ अपनी पहली भेंट की याद है, मगर पागल बनानेवाले किसी सुन्दर प्रेमी की तस्वीर मेरी आँखों के सामने नहीं उभर पाती। तुम तो बिल्कुल यों ही हो, महज बातूनी!'' और उसने निल्ज़ का माथा चूम लिया।

सूर्यास्त होने के तत्क्षण बाद बन्दरगाह की पुरानी तोप चली, कन्सर्ट तभी शुरू हुई। न तो वाद्यवृन्द के वादकों ने और न ही वाद्यवृन्द चालक ने स्वरलिपि रखने की तिपाई के ऊपर लगी बत्ती जलायी। रात इतनी प्रकाशपूर्ण थी कि पार्क के पापलर वृक्षों में लगे लैम्पों को केवल समारोह की सजावट ही माना जा सकता था।

सिम्फनी-संगीत सुनने का दाग्नी का यह पहला अनुभव था और इसका उसके मन पर अज़ीब प्रभाव हुआ। उसके हृदय पर कुछ ऐसी तस्वीरें उभरीं मानों वह स्वप्न देख रही हो। सहसा भौंचक्की-सी होकर उसने ऊपर की ओर देखा। शाम का सूट डटे पतले-दुबले उद्घोषक ने क्या उसके नाम की घोषणा की है?

''आपने मुझे बुलाया है, फूफा?'' उसने पूछा और जब उसने फूफा की आँखों में या तो आश्चर्य की या प्रशंसा की झलक देखी तो त्योरी चढ़ा लीं। फूफी मागदा ने भी उसे घूरा और अपने मुँह के पास रुमाल रख लिया।

''क्या बात है?'' दाग्नी ने पूछा। मागदा ने उसका हाथ दबाया और धीमे स्वर में कहा : ''शी...शी, सुनों''

दाग्नी ने उद्घोषक को कहते सुना :

''मैं पीछे बैठे लोगों के लिए फिर दुहराता हूँ। हमारे प्रोग्राम का अगला आइटम एडवर्ड ग्रीग की वह विख्यात रचना है जिसे उन्होंने वनरक्षक हगेरूप पीडरसेन की पुत्री दाग्नी पीडरसेन की अठारहवीं वर्षगाँठ के लिए रचा था।''

दाग्नी ने ऐसी गहरी साँस ली मानों उसका हृदय टीस उठा हो। बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने आँसुओं को पी न सको। वह आगे की ओर झुक गयी और उसने अपने दोनों हाथों से मुँह ढाँप लिया।

हृदय में उठ रहे तूफान के कारण आरम्भ में तो वह कुछ भी न सुन सकी। पर तभी प्रातःकाल के समय जानवरों को हाँकनेवाले चरवाहे की बाँसुरी की आवाज़ सुनाई दी। इसके फौरन बाद अनेक तार-वाद्य यंत्रों की आवाज़ें गूँज उठीं। संगीत ऊँचा हुआ और तेज हवा की भाँति गर्जन करता हुआ वृक्षों की चोटियों को लाँघता, पत्तों को सरसराता, घास को लहराता और सागर की शीतल फुहार से श्रोताओं के मुँह को चूमता हुआ सा अनुभव होने लगा। दाग्नी ने महसूस किया कि यह तो उसके अपने जंगलों, अपने पहाड़ों का संगीत था। वह उस बाँसुरी की आवाज़ से भली-भाँति परिचित थी। सागर-तट पर सिर पटकनेवाली हहराती लहरों को भी वह खूब पहचानती थी। अब वह कुछ-कुछ शान्त हो चली थी।

शीशे की खिड़कियों वाले जहाज पानी का मंथन करते हुए आगे बढ़ रहे थे। तेज हवा के झोंके, पालों को छूकर संगीत पैदा कर रहे थे। तब बहुत ही अस्पष्ट परिवर्तन के साथ जंगली फूलों के संगीत का भास कराती हुई हर्षपूरित छोटी-छोटी घण्टियाँ बजी। पक्षियों ने हवा में कलाबाजियाँ लगायीं। खेल में मस्त बच्चों का शोर सुनाई दिया। तब एक लड़की ने एक गीत गाया जिसका भाव यह था कि एक प्रेमी सुबह-सुबह खिड़की पर पत्थर फेंककर अपनी प्रेमिका को जगा देता है। दाग्नी ने यह गीत अपने जंगल में सुना था।

तो वह लम्बा और श्वेत केशों वाला व्यक्ति जो चीड़ के फलों से भरी उसकी टोकरी उठाकर ले गया था, जादू का असर रखने वाला महान संगीतज्ञ एडवर्ड ग्रीग था। दाग्नी को याद आया कि शीघ्रता से उपहार न बनाने के लिए कैसे उसने उसे डाँटा था-और हाँ, यह था वह उपहार जिसे उसने दस वर्ष बाद भेंट करने का वचन दिया था।

अब दाग्नी खुलकर रो रही थी। वह रो-रोकर अपना आभार व्यक्त कर रही थी। संगीत और उभरा और उसे नगर के ऊपर छाए बादलों और भूमि के बीच के शून्य को स्वर-लहरी से पाट दिया। स्वर-लहरियाँ बादलों से टकरायीं। बादल छिन्न-भिन्न हो गये। आकाश में सितारे झिलमिलाने लगे।

अब संगीत के स्वरों ने एक आह्वान का रूप धारण किया। यह आह्वान था उस भू-भाग में प्रवेश करने का जहाँ प्रेम पर दुख की काली छाया नहीं पड़ती; जहाँ किसी की खुशी को लूटा नहीं जाता और जहाँ सूरज जगमगाती सुनहरी दैवी धर्ममाता के सिर पर सजे मुकुट की भाँति चमकता है। और तब सुरों के सुमधुर सम्मिश्रण से एक परिचित ध्वनि सुनाई दी : "तुम कल्याण की साकार मूर्ति हो। तुम उषा की आभा हो।"

निस्तब्धता छा गयी। तब धीरे-धीरे जोर पकड़ती हुई तालियों की बाढ़-सी आ गयी। दाग्नी उठी और तेजी से पार्क के दरवाज़ों की ओर चल दी। सभी ने मुड़कर देखा-शायद कुछ को यह सूझ गया था कि यही दाग्नी पीडरसेन है जिसे ग्रीग ने

अपना अमर संगीत समर्पित किया है।

''वह मर चुका है,'' दाग्नी ने सोचा। ''ऐसा क्यों हुआ?'' काश! वह एक बार फिर उससे मिल सकती, केवल एक बार। वह दौड़ती हुई उसके पास जाती, अपनी बाँहों को उसके गले में डाल देती, अपने आँसू भीगे गालों को उसके गालों से चिमटाते हुए केवल एक शब्द कहती, ''धन्यवाद।''

''तुम किसलिए मुझे धन्यवाद दे रही हो?'' वह पूछता।

''मुझे मालूम नहीं,'' वह उत्तर देती... ''इसलिए कि आपने मुझे याद रखा। आपकी इस कृपा के लिए। यह स्पष्ट करने के लिए कि जीवन कैसा प्यारा, कैसा अद्‌भुत है।''

दाग्नी सूनी गलियों में घूमती रही। वह यह न जानती थी कि मागदा द्वारा भेजा गया निल्ज फूफा उसका पीछा कर रहा है। वह एक शराबी की भाँति थोड़ा झुका हुआ अपने नीरस जीवन में घटित इस अनहोनी घटना के बारे में बड़बड़ाता चला जा रहा था।

नगर पर अभी भी रात के धुँधलके की चादर पड़ी हुई थी। किन्तु उत्तर दिशा में दिखायी देने वाली उषाकाल की प्रथम स्वर्ण रेखाएँ खिड़कियों से झाँकने लगी थीं।

दाग्नी समुद्र-तट पर जा पहुँची जहाँ पानी गहरी निद्रा में सोया लगता था। कोई छोटी-सी लहर भी पानी की समतल सतह को विचलित नहीं कर रही थी। दाग्नी ने संसार के सौन्दर्य से अभिभूत होकर अपने हाथों को जोर से दबाया और गहरी साँस ली।

''सुनो, हे जीवन। मैं तुमसे प्रेम करती हूँ,'' उसने धीमे से कहा।

ज्योंही उसने जहाज की बत्तियों के प्रकाश को मटियाले पानी में धीरे-धीरे बढ़ते देखा, वह खुशी की उमंग में खिलखिलाकर हँस पड़ी।

कुछ दूरी पर खड़े हुए निल्ज ने वह हँसी सुनी और घर की ओर चल दिया।

''वह ठीक-ठाक है,'' उसने अपने मन को पुनः आश्वासन दिया। ''वह अवश्य ही अपनी ज़िन्दगी में कुछ कर गुजरेगी।''

1954

डिकेन्स

(लेखक की डायरी से)

फ़ियोदोसिया के ऊपर आकाश में पीले बादल छाए हुए हैं-उनका आकार ऐसा है कि उन्हें देखकर प्राचीन, मध्ययुगीन नगरों की याद ताजा होती है। गर्मी का प्रकोप बढ़ा हुआ है। लहरें जोर-जोर से टकरा रही हैं। छोटे-छोटे लड़के, बबूल के वृक्ष पर बैठे हुए उसके सूखे और मीठे फूलों का मजा ले रहे हैं। दूर क्षितिज पर ओदेसा की ओर से आते हुए जलपोत द्वारा छोड़ गये धुएँ का बादल दिखायी देता है। पेटी की जगह कमर में मछलियाँ पकड़ने के जाल का एक टुकड़ा बाँधे हुए एक उदास माहीगीर केवल ऊब से तंग आकर सीटी बजाता और पानी में थूकता जा रहा हैं उसके पास एक लड़का बैठा कोई क़िताब पढ़ रहा है। ''नौजवान, जरा अपनी क़िताब तो दिखाना,'' मछेरा अपनी खरखरी आवाज़ में कहता है। लड़का तनिक सहम कर क़िताब उसे सौंप देता है। माहीगीर पढ़ना शुरू करता है। पाँच मिनट, फिर दस मिनट गुजरते हैं। वह आवेश में आकर नकियाता है।

लड़का बैठा हुआ प्रतीक्षा कर रहा है। मछेरा आधे घण्टे से पढ़ रहा है। बादल आकाश में ऊँचे चले गये हैं। छोटे-छोटे लड़कों ने बबूल का एक वृक्ष साफ़ कर दिया है और अब दूसरे पर चढ़ गये हैं। माहीगीर अब भी पढ़ता जा रहा है। लड़का चिन्तित होकर उसकी ओर देखता है। एक घण्टा गुजर जाता है। ''जी,'' लड़का धीरे से फुसफुसाता है, ''मुझे घर जाना है।'' ''माँ के पास?'' मछेरा दृष्टि ऊपर किये बिना ही पूछता है। ''हाँ,'' लड़का उत्तर देता है। ''तुम्हारी माँ प्रतीक्षा कर सकती है,'' माहीगीर गुर्राता है। लड़का चुप हो जाता है। माहीगीर जल्दी-जल्दी पृष्ठ उलटता और थूक निगलता जाता है। आध घण्टा और भी बीत जाता है। लड़का धीरे-धीरे सिसकने लगता है। जहाज बन्दरगाह में आ चुका है और उसका भोंपू ऊँची और अन्यमनस्क सीटियाँ बजाता है। माहीगीर मानो कुछ भी नहीं सुनता है।

अब लड़का खुलकर सुबकने लगा है और उसके काँपते हुए गालों से आँसू बहने लगे हैं। मछेरा न कुछ सुनता है, न देखता है। तब तट का चौकीदार उससे चीख कर कहता है, ''ऐ पेत्या, तुम्हें कुछ शर्म आती है? लड़के को सताना बन्द करो और क़िताब लौटा दो।''

माहीगीर हैरान होकर लड़के की ओर देखता है और निराश होकर क़िताब उसकी तरफ़ पटक देता है।

''लो सम्भालो, रोनी सूरत। मैं आशा करता हूँ कि यह तुम्हारा दम घोंट देगी।''

लड़का झपटकर क़िताब उठा लेता है और पीछे मुड़कर देखे बिना तेजी से घाट के साथ-साथ भाग जाता है।

''कौन-सी पुस्तक थी वह?'' मैंने मछेरे से पूछा।

''अरे डिकेन्स,'' उसने जवाब दिया। वह अभी तक चिढ़ा हुआ था। ''क्या लेखक है-गोंद की भाँति चिपक जाता है। तुम उससे छुटकारा ही नहीं पा सकते।''

1939

मेरे लिये मेरे देश के लोगों और उनके भविष्य से अधिक प्यारी कोई चीज़ नहीं। मैं अद्‌भुत रूसी भाषा और उस प्रकृति को बेहद प्यार करता हूँ जो कभी हृदय को अपनी शक्ति या उदासी से, कभी शान्ति या खुशी से स्पन्दित करती है। वर्षों के बाद वर्ष गुजर जाने पर ही आप इस प्यार की शक्ति को अनुभव करने और यह पश्चाताप करने लगते हैं कि भविष्य में आपके पास बहुत थोड़ा समय बाकी रह गया है।

क. पाउस्तोवस्की

परिकल्पना प्रकाशन

लखनऊ

ISBN:81-87728-90-3

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिंगारी।
घर-घर तक चिंगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन-जन तक पहुँचाना होगा।

तीन दशक से भी पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी-सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी-सी दुकान और फुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी-छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर-घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। अपने प्रदर्शनी वाहनों के माध्यम से भी जनचेतना कई राज्यों के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी, मराठी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला-सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन-संघर्ष-सृजन-प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइए, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिए।

सम्पूर्ण सूचीपत्र

परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

नयी
1. **पहला अध्यापक**/चिंगीज़ आइत्मातोव 50.00
2. **तरुणाई का तराना**/याङ मो ...
3. **तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट ...
4. **माँ**/मक्सिम गोर्की 275.00
5. **वे तीन**/मक्सिम गोर्की 75.00
6. **मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की ...
7. **जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की ...
8. **मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की ...
9. **फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की 55.00
10. **अभागा**/मक्सिम गोर्की 40.00
11. **बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की 25.00
12. **असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई 260.00
13. **तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव (दो खण्डों में) 160.00
14. **गोदान**/प्रेमचन्द ...
15. **निर्मला**/प्रेमचन्द ...
16. **पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र ...
17. **चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र ...
18. **गृहदाह**/शरत्चन्द्र ...
19. **शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र ...
20. **इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का ...
21. **इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव ...
22. **दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव 70.00
23. **वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव 60.00
24. **मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ ग्रीगोरी बकलानोव 40.00
25. **बख़्तरबन्द रेल 14-69**/ व्सेवोलोद इवानोव 30.00
26. **अश्वसेना**/इसाक बाबेल 40.00
27. **लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श 50.00
28. **रिक्शावाला**/लाओ श 65.00
29. **चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन 55.00

30. **एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय 70.00

31. **Mother**/*Maxim Gorky* 250.00

32. **The Song of Youth**/*Yang Mo* ...

कहानियाँ

1. **श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट) 450.00
2. **वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया** (मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ) 60.00

मक्सिम गोर्की

नयी 3. **इटली की कहानियाँ** 150.00

4. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
5. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 200.00
6. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3) 150.00
7. **हिम्मत न हारना मेरे बच्चो** 15.00
8. **कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी** 10.00

अन्तोन चेख़व

9. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
10. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 150.00

11. **दो अमर कहानियाँ**/लू शुन ...
12. **श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द 80.00
13. **पाँच कहानियाँ**/पुश्किन ...
14. **तीन कहानियाँ**/गोगोल 30.00
15. **तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच 60.00
16. **वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव 60.00
17. **वसन्तागम**/रओ शि 50.00
18. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
19. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
20. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
21. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
22. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
23. **समय के पंख**/कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
24. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
25. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
26. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
27. **दोन की कहानियाँ**/मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
28. **अब इन्साफ़ होने वाला है** (भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन) (ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/ स. **शकील सिद्दीक़ी** ...
29. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
30. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/मदन मोहन 35.00

कविताएँ

नयी 1. **कौन देखता है कौन दिखता**/लाल्टू 150.00

नयी 2. **अनिश्चय के गहरे धुएँ में**/ निर्मला गर्ग 100.00

3. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/ पाब्लो नेरूदा 60.00

4. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/ लैंग्सटन ह्यूज़ 60.00

5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ - बेर्टोल्ट ब्रेष्ट** (मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल) 130.00
(ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित)

6. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) ...

7. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00

8. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/ हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00

9. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00

10. **ओस की बूँदें और लाल ग़ुलाब**/ होसे मारिया सिसों 25.00

11. **इन्तिफ़ादा : फ़िलस्तीनी कविताएँ**/ स. रामकृष्ण पाण्डेय 100.00

12. **लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :** फ़िलस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन)
A Rose Breaking Out of Steel and Blood (Palestinian Poems) ...

13. **लहू है कि तब भी गाता है**/पाश 125.00

14. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00

15. **पाठान्तर**/विष्णु खरे 50.00

16. **लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/ विष्णु खरे 60.00

17. **वाचाल दायरों से दूर**/मलय 125.00

18. **दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय 120.00

19. **देखते न देखते**/मलय 65.00

20. **असम्भव की आँच**/मलय 100.00

21. **इच्छा की दूब**/मलय 90.00

22. **देश एक राग है**/भगवत रावत ...

23. **ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ 60.00

24. **बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी 50.00

25. **कविता का जीवन**/असद ज़ैदी 75.00

26. **सामान की तलाश**/असद ज़ैदी 50.00

27. **कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/ शशिप्रकाश 50.00

28. **पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश 75.00

29. **सात भाइयों के बीच चम्पा**/ कात्यायनी 120.00

30. **इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी 120.00

31. **जादू नहीं कविता**/कात्यायनी 150.00

32. **फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी 80.00

33. **राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी 15.00

34. **नगर में बर्बर**/कविता कृष्णपल्लवी 100.00
(अँधेरे समय की कुछ कविताएँ और कुछ क़िस्से)

35. **यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार 50.00

36. **यह जो वक़्त है**/कपिलेश भोज 60.00

37. **बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/ नरेश चन्द्रकर 60.00

38. **इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार 90.00

39. **तो**/शैलेय 75.00

40. **पानी है तो फूटेगो**/ राजेश सकलानी 100.00

41. **सवालों का कारख़ाना**/सरिता तिवारी (नेपाली कविताएँ) 100.00

नाटक

1. **करवट**/मक्सिम गोर्की 40.00
2. **दुश्मन**/मक्सिम गोर्की 35.00
3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/ अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/ व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/ निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री–विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यंत्ररत मृतात्माओं के बीच** (साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की — 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा — 25.00

साहित्य–विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स — 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय — …
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव — 65.00
4. **सृजन–प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की — 40.00
5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन — 20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता–पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको — …
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुखोम्लीन्स्की — …

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका शृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक–सांस्कृतिक कार्यभार**
   कात्यायनी, सत्यम — 25.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी — 50.00

——::——

राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1. **नौजवानों से दो बातें**/ पीटर क्रोपोटकिन 15.00
2. **क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/ भगतसिंह 15.00
3. **मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह 15.00
4. **बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह 15.00
5. **जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह 15.00
6. **भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह 15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1. **भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़** स. सत्यम 350.00
2. **शहीदेआज़म की जेल नोटबुक** भगतसिंह 100.00
3. **विचारों की सान पर**/भगतसिंह 50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1. **बहरों को सुनाने के लिए** एस. इरफ़ान हबीब 160.00 (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)
2. **क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा 25.00
3. **भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र 25.00
4. **यश की धरोहर**/भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर 50.00
5. **संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा 100.00
6. **शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/ स. डॉ. हरदीप सिंह 40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है** ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 80.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 100.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 30.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 20.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 20.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 20.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 25.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00
6. **मार्क्सवाद-लेनिनवाद और राष्ट्रीय प्रश्न** (एक बहस)/शिवानी, अभिनव 150.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 20.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00
3. **ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की ...
4. **मई दिवस का इतिहास**/ अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. **पेरिस कम्यून की अमर कहानी** 20.00
6. **अक्टूबर क्रान्ति की मशाल** 15.00
7. **जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी 10.00
8. **लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस** ...
9. **संशोधनवाद के बारे में** 10.00
10. **शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट 20.00
11. **मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए** 20.00
12. **मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा** 15.00
13. **चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही** ...
14. **बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ** ...
15. **राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव 30.00
16. **फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव 120.00
17. **नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/ आलोक रंजन 55.00
18. **कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह 150.00
19. **तीन कृषि विधेयक और मज़दूर वर्ग का नज़रिया**/अभिनव 40.00

मज़दूरों का इन्क़लाबी मासिक अख़बार



एक प्रति : 5 रुपये

(डाक व्यय सहित)

सम्पादकीय कार्यालय
69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड
निशातगंज, लखनऊ-226006
फ़ोन : 0522-4108495
ईमेल : bigulakhbar@gmail.com

मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स ...
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र** मार्क्स–एंगेल्स 50.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स–एंगेल्स 150.00
4. **फ़्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ़्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उज़रती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/ कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/ कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 20.00
11. **जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 30.00
12. **समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स ...
13. **पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन 15.00
14. **एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन ...
15. **जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन 25.00
16. **समाजवाद और युद्ध**/लेनिन 20.00
17. **साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन 30.00
18. **राज्य और क्रान्ति**/लेनिन ...
19. **सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन ...
20. **दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन 15.00
21. **गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन 50.00
22. **मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन 20.00
23. **कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन ...
24. **क्या करें?**/लेनिन ...
25. **"वामपन्थी" कम्युनिज़्म – एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन ...
26. **पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन 15.00
27. **जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन 70.00
28. **धर्म के बारे में**/लेनिन ...
29. **तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन 10.00
30. **मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ** जी. प्लेख़ानोव 30.00
31. **जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव 35.00
32. **लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन 50.00
33. **सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास** 90.00

34. **माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में) ...

35. **कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ ...

36. **सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/ माओ त्से-तुङ ...

37. **दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/ माओ त्से-तुङ 70.00

38. **कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़**/माओ त्से-तुङ 15.00

39. **माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण** 50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

नयी

1. **दर्शन कोई रहस्य नहीं** 50.00 (जब किसानों ने अपने अध्ययन को व्यवहार में उतारा)
2. **राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** 300.00
3. **ख्रुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र 300.00
4. **राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी) 160.00
5. **पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
6. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/ डी. रियाज़ानोव ... (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)
7. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ डेविड गेस्ट ...
8. **इतिहास ने जब करवट बदली**/ विलियम हिण्टन 25.00
9. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ वी. अदोरात्स्की 50.00
10. **अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन** अल्बर्ट रीस विलियम्स 90.00 (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)
11. **सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस 50.00

राहुल साहित्य

1. **तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
2. **दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
3. **वैज्ञानिक भौतिकवाद**/ राहुल सांकृत्यायन 65.00
4. **राहुल निबन्धावली**/ राहुल सांकृत्यायन 50.00
5. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

परम्परा का स्मरण

1. **चुनी हुई रचनाएँ**/ गणेशशंकर विद्यार्थी 100.00
2. **सलाखों के पीछे से**/ गणेशशंकर विद्यार्थी ...
3. **ईश्वर का बहिष्कार**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
4. **लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी 20.00
5. **धर्म का ढकोसला**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
6. **स्त्रियों की स्वाधीनता** राधामोहन गोकुलजी 30.00

जीवनी और संस्मरण

1. **कार्ल मार्क्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ ज़ेल्डा कोट्स 25.00
2. **फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स 80.00
3. **कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख** 35.00
4. **अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/ एल. काताशेवा 30.00
5. **लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा 70.00
6. **लेनिन विषयक कहानियाँ** 75.00
7. **लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/ लीदिया फ़ोतियेवा ...
8. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

विविध

1. **फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक ...
2. **पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर 100.00
3. **सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर ...

——::——

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1. **A Contribution to the Critique of Political Economy** …
2. **The Civil War in France** …
3. **The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte** 80.00
4. **Critique of the Gotha Programme** 50.00
5. **Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy** 25.00
6. **The Poverty of Philosophy** 80.00
7. **Wages, Price and Profit** 50.00
8. **Class Struggles in France** 50.00

FREDERICK ENGELS

9. **The Peasant War in Germany** 70.00
10. **Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy** 65.00
11. **On Capital** 80.00
12. **The Origin of the Family, Private Property and the State** 100.00
13. **Socialism: Utopian and Scientific** 60.00
14. **On Marx** 30.00
15. **Principles of Communism** 5.00

MARX and ENGELS

16. **Historical Writings** (Set of 2 Vols.) 700.00
17. **Manifesto of the Communist Party** 50.00
18. **Selected Letters** 75.00

V. I. LENIN

19. **Theory of Agrarian Question** 160.00
20. **The Collapse of the Second International** 25.00
21. **Imperialism, the Highest Stage of Capitalism** 80.00
22. **Materialism and Empirio-Criticism** 150.00
23. **Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution** 55.00
24. **Capitalism and Agriculture** 50.00
25. **A Characterisation of Economic Romanticism** …
26. **On Marx and Engels** 35.00
27. **“Left-Wing” Communism, An Infantile Disorder** 75.00
28. **Party Work in the Masses** 55.00
29. **The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky** 75.00

30. **One Step Forward, Two Steps Back** …
31. **The State and Revolution** 80.00

MARX, ENGELS and LENIN

32. **On the Dictatorship of Proletariat, *Questions and Answers*** 50.00
33. **On the Dictatorship of the Proletariat: *Selected Expositions*** 10.00

PLEKHANOV

34. **Fundamental Problems of Marxism** …

J. STALIN

35. **Marxism and Problems of Linguistics** 25.00
36. **Anarchism or Socialism?** 60.00
37. **Economic Problems of Socialism in the USSR** …
38. **On Organisation** 15.00
39. **The Foundations of Leninism** 70.00
40. **The Essential Stalin** …
    Major Theoretical Writings 1905–52 (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)

LENIN and STALIN

41. **On the Party** 30.00

MAO TSE-TUNG

42. **Five Essays on Philosophy** 80.00
43. **A Critique of Soviet Economics** 70.00
44. **On Literature and Art** 80.00
45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** …
46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** …

OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 375.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 150.00
3. **Reader in Marxist Philosophy**/*Howard Selsam & Harry Martel* …
4. **Socialism and Ethics**/*Howard Selsam* …
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)/*Howard Selsam* 100.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics**/*Maurice Cornforth* 70.00

George Thomson

7. **From Marx to Mao Tse-tung** 120.00
8. **Capitalism and After** 100.00
9. **The Human Essence** 80.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions**/*Bob Avakian* …
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00

12. **The Lessons of the Paris Commune**/*Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

13. **Subversive Interventions** (An Anthology**)** *Abhinav Sinha* 500.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) …
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov 150.00
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* 80.00

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle Red Papers 7** 175.00
2. **Preface of Class Struggles in the USSR**/*Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University *William Hinton* …
2. **The Cultural Revolution at Peking University**/*Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** *William Hinton* 50.00
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution** / *Iris Hunter* 50.00

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1.	**Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969 *Joshua S. Horn*	125.00
2.	**Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China / *Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel*	…
3.	**Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work)	…

ON THE CASTE QUESTION

1.	**On the Caste Question:** **Towards a Marxist Understanding** *Abhinav Sinha*	200.00
2.	**Caste and Class:** **A Marxist Viewpoint** / Ranganayakamma	60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1.	**Immortal are the Flames of Proletarian Struggles** / *Deepayan Bose*	30.00
2.	**Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash*	40.00
3.	**Why Maoism?** / *Shashi Prakash*	25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1.	**Where Should Students and Youth Make a New Beginning?**	20.00
2.	**Reservation: Support, Opposition and Our Position**	20.00
3.	**On Terrorism : Illusion and Reality** / *Alok Ranjan*	20.00

> "The books that help you most are those which make you think the most. The hardest way of learning is that of easy reading; but a great book that comes from a great thinker is a ship of thought, deep freighted with truth and beauty."
>
> **– Pablo Neruda**

BIGUL REPRINT SERIES

1. **Still Ablaze is the Torch of October Revolution** 30.00
2. **Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00

WOMEN QUESTION

1. **The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin* 100.00
2. **Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation /** *Mary Lou Greenberg* 50.00

MISCELLANEOUS

1. **Probabilities of the Quantum World /** *Daniel Danin* …
2. **An Appeal to the Young /** *Peter Kropotkin* 20.00

The Anvil

A Journal of Marxist Theory

Editor: Shashi Prakash

Editorial Office

69 A-1, Baba ka Purwa
Paper Mill Road, Nishatgunj, Lucknow 226 006, India
Phone: 9560130890, Email: editor.anvil@gmail.com

Website: http://anvilmag.in

FB: facebook.com/anvilmag

अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलनः निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलनः दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद** (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना इन पुस्तकों की भी मुख्य वितरक है

1. **बच्चों के लिए अर्थशास्त्र (मार्क्स की 'पूँजी' पर आधारित पाठ)**/रंगनायकम्मा 120.00
2. **घरेलू काम और बाहरी काम**/रंगनायकम्मा 40.00
3. **For the Solution of the 'Caste' Question, Buddha is not enough, Ambedkar is not enough either, Marx is a must**/Ranganayakamma 100.00
4. **Economics for Children [Lessons based on Marx's 'Capital']**/Ranganayakamma 150.00
5. **Household Work and Outside Work** 60.00

अनुराग ट्रस्ट

1. **बच्चों के लेनिन** 35.00
2. **Stories About Lenin** 35.00
3. **सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर 25.00
4. **औज़ारों की कहानियाँ** 20.00
5. **गुड़ की डली** /कात्यायनी 20.00
6. **फूल कुण्डलाकार क्यों होते हैं**/सनी 20.00
7. **धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव ...
8. **कज़ाकी**/प्रेमचन्द 35.00
9. **नीला प्याला**/अरकादी गैदार 40.00
10. **गड़रिये की कहानियाँ**/ क़यूम तंगरीकुलीयेव 35.00
11. **चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/ अ. मित्यायेव 35.00
12. **अन्धविश्वासी शेकी टेल**/ सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
13. **चलता-फिरता हैट**/ एन. नोसोव, होल्कर पुक्क 20.00
14. **चालाक लोमड़ी** (लोककथा) 20.00
15. **दियांका-टॉमचिक** 20.00
16. **गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
17. **गुफ़ा मानवों की कहानियाँ**/ मैरी मार्स 20.00
18. **हम सूरज को देख सकते हैं**/ मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच 20.00
19. **मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
20. **नन्हे आर्थर का सूरज**/ हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा 20.00
21. **आकाश में मौज-मस्ती**/ चिनुआ अचेबे 20.00
22. **ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन 40.00
23. **एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की 20.00
24. **बहादुर**/अमरकान्त 15.00
25. **बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/ शस्या हर्ष ...
26. **दान्को का जलता हुआ हृदय**/ मक्सिम गोर्की 10.00
27. **नन्हा राजकुमार**/ आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी 40.00
28. **दादा आर्खिप और ल्योंका**/ मक्सिम गोर्की 30.00
29. **सेमागा कैसे पकड़ा गया**/ मक्सिम गोर्की 15.00
30. **बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की 15.00
31. **वांका**/अन्तोन चेख़व 15.00
32. **तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 15.00
33. **पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर ...
34. **काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 20.00

35. **अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र 15.00
36. **दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर 25.00
37. **रामलीला**/प्रेमचन्द 15.00
38. **दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द 25.00
39. **ईदगाह**/प्रेमचन्द ...
40. **लॉटरी**/प्रेमचन्द 20.00
41. **गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द ...
42. **बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द 20.00
43. **मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द ...
44. **हार की जीत**/सुदर्शन ...
45. **इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव 40.00
46. **चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन 55.00
47. **उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर 35.00
48. **हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव 25.00
49. **दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) ...
50. **आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी 30.00
51. **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 35.00
52. **नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन ...
53. **लाखी**/अन्तोन चेख़व 25.00
54. **बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव 12.00
55. **हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक 25.00
56. **घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव 10.00
57. **बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव 20.00
58. **मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन 35.00
59. **पराये घोंसले में**/फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की 20.00
60. **कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय 30.00
61. **मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव 30.00
62. **सदानन्द की छोटी दुनिया**/ सत्यजीत राय 15.00
63. **छत पर फँस गया बिल्ला**/ विताउते जिलिन्सकाइते 35.00
64. **गोलू के कारनामे**/रामबाबू 25.00
65. **दो साहसिक कहानियाँ**/ होल्गर पुक्क 15.00
66. **आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
67. **कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क 20.00
68. **रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
69. **अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क ...
70. **नये ज़माने की परीकथाएँ**/ होल्गर पुक्क 25.00
71. **किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/ मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन 15.00
72. **पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन) / कमला पाण्डेय 30.00
73. **यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण) / कमला पाण्डेय 100.00
74. **हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ) / कमला पाण्डेय 60.00
75. **कालमन्थन** (उपन्यास) / कमला पाण्डेय 60.00

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल–साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र–पत्रिकाएँ
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों–चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य–निर्माण के लिए प्रेरित करता है!

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास और **ऐरण प्रकाशन की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्त्रोतों - सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और देशी-विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।**

हमसे पुस्तकें मँगाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें

- प्रत्येक पत्र तथा आदेश-पत्र पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) और फ़ोन नम्बर साफ़-साफ़ लिखें।
- मनीऑर्डर के पीछे सन्देश वाले स्थान पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) साफ़-साफ़ ज़रूर लिखें।
- चेक/ड्राफ़्ट 'जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति' (JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI) के नाम से लखनऊ में देय भेजें। बैंक खाते की जानकारी :

  खाता सं. 0762002109003796

  पंजाब नेशनल बैंक, निशातगंज, लखनऊ

  IFSC: PUNB0076200
- पुस्तकों पर डाक-व्यय तथा रेल या ट्रांसपोर्ट का भाड़ा अलग से देय होगा।
- पुस्तक विक्रेताओं तथा वितरकों द्वारा पुस्तकें मँगाने की शर्तों के लिए हमसे पत्र, ईमेल अथवा फ़ोन से सम्पर्क करें।

जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति द्वारा संचालित